लेना चाहता था। उसका विश्वास था कि वह भी उसे उस जितना ही प्यार करती है। किन्तु जब उसे अरविन्द गुप्ता के बारे में पता चला तो उसे मालूम हुआ कि जिस औरत से वह प्यार करता था उसने उसे धोखा दिया है। उसे मालूम हुआ कि वह उसके लिए अपने पति से मुक्त होना नहीं चाहती थी बल्कि वह तो उस धनपति मिल मालिक से शादी करना चाहती थी।

उस पत्र के आधार पर सरकारी वकील ने अदालत को बताया कि वास्तव में मिसेज कौशल ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जयन्त कोठारी को इस्तेमाल किया था। जयन्त को जब इस बात का अहसास हुआ फरार होने के बावजूद भी प्रतिहिंसा की ज्वाला में जलते हुए उसने उस औरत का पर्दाफाश करने का निश्चय किया जिसके उकसाने पर उसने हत्या की थी। जिसका सबूत था उसके द्वारा भेजा गया वह पत्र।

तब मिसेज कौशल ने आश्चर्यजनक ढंग से अपने बयान को बदल डाला। उसने स्वीकार किया कि नकाबपोशों वाली बात एक मनगढ़न्त कहानी थी। वास्तविक हत्यारा जयन्त कोठारी था। भावनाओं के भूत से पागल हुए उस व्यक्ति ने उसके पति की हत्या करने के बाद उससे कहा कि अगर उसके निर्देशानुसार कार्य नहीं किया तो वह मिसेज कौशल और उसकी मासूम बच्ची को भी जिन्दा नहीं छोड़ेगा। वह जानती थी कि वह हत्यारा जो कुछ कह रहा है, उसे कर दिखाने में देर न लगाएगा। उसके पति की लाश उसके सामने पड़ी ही थी। खामोश बच्ची एक ओर सो रही थी जिसे मारने की यह हत्यारा धमकी दे रहा था। भय से डरकर उसने उसके कथनानुसार कार्य करना स्वीकार कर लिया। बाद में वह सच बताने से इसलिए डरती रही कि कहीं उसे भी इस हत्या में जयन्त कोठारी का सहयोगी न समझ लिया जाए।

उसने दृढ़ शब्दों में अपने पति की हत्या के लिए उस हत्यारे का सहयोगी होने से इन्कार करते हुए कहा कि उसके असहयोग के कारण ही उस हत्यारे ने यह नीचतापूर्ण पत्र लिखा है ताकि उसे अपने पति की हत्या का दोषी ठहराकर कानून के फंदे में फंसाया जा सके और खुलेआम अपमानित किया जा सके।

उसने गुहार की कि अपने पति की हत्या में उसका कोई हाथ नहीं है। हालांकि उसकी कहानी में झोल था। किन्तु जब उसने अपने अश्रुपूरित नेत्रों और दीन मुख के साथ अपनी छोटी-सी बच्ची की ओर संकेत करते हुए जज से कहा कि उसे दोषी करार दिया गया तो इस बच्ची का भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा। जयन्त कोठारी उससे प्रेम करता था लेकिन वह अपने मरे हुए पति की कसम खाकर कह सकती है कि उसने कभी जयन्त कोठारी से प्रेम नहीं किया। उसने शुरू में ही सच न बोलने की गलती की। किन्तु क्या कोई मां उस समय सच बोलने का साहस कर सकती है, जब उसकी अपनी औलाद की जान खतरे में हो? जब-जब उसने सच बोलने की कोशिश की तभी उसके पति की लाश उसकी आंखों के सामने घूम गई और उसे लगा कि अगर उसने जरा भी जबान खोली तो वह हत्यारा आकर उसकी बेटी को भी खत्म कर देगा। उसने जोर देकर यह बात कही कि वह झूठ बोलने की दोषी अवश्य है किन्तु पति हत्या के भयंकर अपराध की दोषी कतई नहीं है।

बहरहाल मिसेज कौशल की वक्तृता की विजय हुई। उसे निर्दोष घोषित करके बरी कर दिया गया।

पुलिस के अनथक प्रयासों के बावजूद भी जयन्त कोठारी का फिर कोई पता न लग सका। उसके बाद मिसेज कौशल के बारे में भी कुछ खास नहीं सुना गया। बरी होने के कुछ दिन बाद ही वह अपनी बच्ची के साथ दिल्ली छोड़कर कहीं और चली गई—एक नई जिन्दगी शुरू करने के लिए।

अरविन्द गुप्ता ने शादी कर ली और इस समय वह अपनी सुन्दर पत्नी और दो युवा सन्तानों के साथ बम्बई के जुहू क्षेत्र में रह रहा है। मिसेज कौशल राधा देवी के रूप में भक्तपुर में रह रही हैं।

▭ ▭

'यह मामला तो साला शैतान की आंत की तरह से उलझता जा रहा है।' अपनी चारपाई पर तकिए के साथ टेक लगा कर अधलेटा-सा गनेशी बोला—'अभी तो गुलखान ने आकर हीरों का ही चक्कर डाला था कि अब यह साला बीस साल पुराना किस्सा और उभर आया। वैसे यह तो मानना पड़ेगा कि तुम्हारे उस भानु गुप्ता की याददाश्त है तेज। एक ही नजर

उसने उस राधा देवी को देखा और बीस साल पुराना चेहरा पहचान कर अखबार में सारा चिट्ठा छाप दिया।

'अभी तक तो यही सुना था कि इतिहास अपने को दोहराता है।' मैंने कहा—'लेकिन अब यह कहना पड़ेगा कि अपराध भी अपने आपको दोहराता है।'

'क्या?'

'इस लेख के मुताबिक मिसेज कौशल ने बीस साल पहले दो नकाबपोशों के बारे में बयान दिया था। दोनों नकाबपोशों में एक ठिगना-सा था और दूसरा लम्बा।'

'तो?'

'तो यह प्यारे कि मिसेज त्रेहन का अब का बयान मिसेज कौशल के बीस साल पुराने बयान से कितना मिलता-जुलता है? बीस साल पहले मिसेज कौशल की रात में आंख खुलती है और दो नकाबपोशों को खड़े पाया। एक लम्बा और दूसरा ठिगना। बिलकुल यही बयान मिसेज त्रेहन का भी है। सिर्फ बयान ही नहीं, एक-एक घटना मिलती-जुलती है। बीस साल पहले भी नकाबपोशों ने मिसेज कौशल को बांधकर उसके पति की हत्या कर दी और बीस साल बाद यही कुछ मिसेज त्रेहन के साथ हुआ। कहीं कोई अन्तर नहीं। तब नकाबपोशों ने राज कौशल की हत्या की थी और अब जगत त्रेहन की।'

'तुम यह कहना चाहते हो कि वे दोनों नकाबपोश बीस साल से लगातार सक्रिय हैं?'

'इस बारे में तो कुछ नहीं कहा जा सकता। किन्तु इस बात को भी नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता कि बाद में यह साबित हो गया था कि मिसेज कौशल की नकाबपोशों वाली कहानी मनगढ़न्त थी। तुम्हें याद होगा गनेशी कि कल रात अपनी बातचीत के दौरान मैंने तुमसे कहा था कि मेरे विचार में मिसेज त्रेहन का नकाबपोशों वाला बयान मनगढ़न्त है।'

'कहा तो था तुमने लेकिन कहा किस आधार पर था?'

'कोई ठोस आधार तो नहीं था। लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था। अब यह लेख पढ़ने के बाद तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वह बयान मनगढ़न्त था।'

'मेरी खोपड़ी तो कुछ काम नहीं कर रही।' गनेशी ने अपने सिर को खुजाते हुए कहा—'अगर मिसेज त्रेहन बीस

साल पहले की मिसेज कौशल होती तो यह सोचा जा सकता था कि उसने जिस तरीके से अपने पहले पति को अपने रास्ते से हटा दिया, वही तरीका अपने दूसरे पति जगत मेहन को भी रास्ते से हटाने के लिए अपना लिया। लेकिन इस लेख से यह बात भी साबित हो जाती है कि बीस साल पहले की मिसेज राज कौशल अब राधा देवी है और मिसेज मेहन एक अन्य औरत है।'

'हां, हैं तो दोनों अलग-अलग। लेकिन एक सम्भावना नजर आती है मुझे।'

'वह क्या?'

'हो सकता है, किसी तरह मिसेज मेहन को राधा देवी की वास्तविकता के बारे में पता लग गया हो और यह भी कि अपने पति को रास्ते से हटाने के बाद वह कैसे बेदाग बच गई थी। बस, उसने भी मेहन को रास्ते से हटाने के लिए वही तरकीब आजमा ली और वही कहानी गढ़ ली।'

'लेकिन उस वक्त मिसेज कौशल का सहयोगी था जयन्त कोठारी। अब मिसेज मेहन का सहयोगी कौन हो सकता है?'

'कोई तो होगा ही। यह भी हो सकता है कि वह कोई सहयोगी न होकर सहयोगिनी हो।'

गनेशी ने प्रश्नपूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा।

'हां, सहयोगिनी।' मैं अपनी बात पर जोर देता हुआ बोला, 'हो सकता है कि यह मालती ही मिसेज मेहन की सहयोगिनी हो।'

'तुम यूं ही धूल में लट्ठ मार रहे हो या अपनी बात को साबित करने के लिए कोई ठोस सबूत भी है तुम्हारे पास?'

'अभी तो धूल में ही लट्ठ चल रहा है। लेकिन कोई सबूत न होने के बावजूद भी मुझे इस बात का पक्का यकीन है कि यह साजिश रची मिसेज मेहन ने ही है।'

'लेकिन इस साजिश में मलखान और वह बशेशर जिसकी लाश मिली है, वे किस तरह शामिल होते हैं।'

'यह मुझे भी नहीं मालूम। लेकिन इतना जरूर है कि मलखान भी झूठ बोलता नहीं लग रहा। बशेशर ने मलखान के साथ धोखा किया होगा। शायद मिसेज मेहन के कहने पर और जगत मेहन ने हीरे हथियाने के लिए बशेशर को खत्म कर

दिया। उधर मिसेज ब्रेहन ने अपना रास्ता साफ करने के लिए अपने पति को खत्म कर दिया।'

'और जय ब्रेहन के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है, जिसे तुमने चहार दीवारी फांदकर भागते देखा था?'

हम दोनों फिर से तर्कों और अनुमानों के उस भंवर जाल में फंस गए हैं जिससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं सूझ पा रहा था। मुझे भी लगा जैसे सोचते-सोचते मेरी भी खोपड़ी पिलपिलाने लगी है।

'मेरा ख्याल है कि यूं ही हवाई घोड़े दौड़ाते रहने की बजाय मुझे ब्रेहन हाऊस जाना चाहिये।' अन्त में मैंने कहा—'वहीं से असली मामले का सुराग हासिल हो सकता है।'

'क्यों बेकार के चक्कर में फंस रहा है।' गनेशी बोला—'पहले ही फांसी का फंदा गरदन में डलते-डलते बचा है?'

'वहां तो जाना होगा ही। आखिर मलखान के खोए हीरों का पता भी तो लगाना है।'

'जब हमारा इस सारे किस्से से कोई मतलब ही नहीं तो बेकार···।'

'यह हम जानते हैं कि हमारा कुछ लेना-देना नहीं। लेकिन मलखान तो हमें ही चोर समझ रहा है।'

'उसके समझने से क्या होता है?' गनेशी बोला, 'आयेगा तो कह देंगे कि वह अपने हीरे आप ही ढूंढे।'

'गनेशी ने मुझे रोकने की बहुत कोशिश की। किन्तु रहस्य जानने की उत्सुकता का एक विचित्र-सा आकर्षण मुझे अपनी ओर खींचता-सा लग रहा था।

लिहाजा मैं नहा-धोकर तैयार होने के बाद ब्रेहन हाऊस की ओर रवाना हो गया।

▭ ▭

ब्रेहन हाऊस में पुलिस को अपने से भी पहले मौजूद पाकर मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि मेरे विचार में भानु गुप्ता का वह लेख पढ़ने के बाद पुलिस को पूछताछ के लिए राधा देवी के मकान पर होना चाहिये था। किन्तु तभी मैंने सोचा कि शायद वह लेख पढ़ने के बाद इन्स्पेक्टर गजराज सिंह भी उसी नतीजे पर पहुंचा हो जिस पर मैं पहुंचा था और वह यहां मिसेज ब्रेहन के बयान की जांच-पड़ताल करने के लिये आया हो।

'किन्तु शीघ्र ही मुझे मालूम हो गया कि मामला कुछ और ही है और इन्स्पेक्टर वहां जय त्रेहन को गिरफ्तार करने के लिए आया था जो कि अभी कुछ घण्टे पहले कर्नल चोपड़ा के साथ अपने पिता की लाश लेकर कुछ देर पहले ही वहां पहुंचा था।

वे सब लोग उस समय निचली मंजिल के ही एक भीतरी हिस्से में मौजूद थे, जहां से ऊपर की ओर सीढ़ियां जाती थीं। कर्नल चोपड़ा, जय, मालती इत्यादि सभी वहीं मौजूद थे सिवाय मिसेज त्रेहन के।

'मैं कह रही हूं इन्स्पेक्टर कि आपको गलतफहमी हुई है।' मालती कह कह रही थी—'फूफा की तो बात क्या जय तो किसी चींटी को भी नहीं मार सकता।'

'आप अपनी इस गलतफहमी को दूर कर लीजिये मिस मालती।' इन्स्पेक्टर ने विवर्ण चेहरे वाले जय की ओर देखते हुए कहा—'सारे सबूत इस बात की गवाही दे रहे हैं कि मिस्टर जय ने ही अपने पिता जगत त्रेहन की हत्या की है। हत्या के समय यह यहां भक्तपुर में मौजूद था।'

'आप भी कमाल कर रहे हैं इन्स्पेक्टर साहब।' कर्नल ने मेरी ओर संकेत करते हुए कहा—'जो असली हत्यारा है—जिसे मैंने अपनी आंखों से चहार दीवारी फांदकर भागते देखा, उसे तो आपने खुला छोड़ रखा है और एक शरीफ आदमी को नाहक ही उस इल्जाम में फंसा रहे हैं जो कि उसने किया ही नहीं?'

'यह सब आपकी खुशफहमी है कर्नल साहब।' इन्स्पेक्टर ने कहा, फिर मेरी ओर देखते हुए बोला—'अगर यह आदमी हत्यारा होता तो यह इस जगह के आसपास भी दिखाई नहीं देता।'

'जरा इससे पूछिये तो सही कि यह यहां क्या करने आया है?'

'यह मुझसे मिलने के लिये आया है। मेरी जगह स्वयं इन्स्पेक्टर ने ही कर्नल को जवाब दिया—'इस आदमी को बेकार ही बीच में डालकर आप अब मुझे मुगालते में नहीं उलझा सकते। सारा केस शीशे की तरह साफ है। साबित हो चुका है कि हत्या की रात मिस्टर जय भक्तपुर में मौजूद थे। हत्या

करने के बाद महानगर लौट गये और फिर अगली सुबह की ट्रेन से भक्तपुर आ गये ऐसा जाहिर करते हुए जैसे यहां पहुंचने पर ही इसे अपने पिता की हत्या के बारे में पता लगा हो।'

जय सिर झुकाये खड़ा रहा। उसने जवाब देने की कोई कोशिश नहीं की।'

उसके स्थान पर कर्नल चोपड़ा ने कहा—'आपके पास क्या सबूत है कि हत्या की रात जय यहां मौजूद था ?'

'क्या मिस्टर जय की खामोशी ही इस बात का पर्याप्त सबूत नहीं है कि जो कुछ मैं कह रहा हूं वह सही है। अन्यथा यह मेरी बात का विरोध क्यों नहीं करते ?

'आखिर तुम खामोश क्यों हो जय ?' इस बार मालती ने कहा—'साफ कह क्यों नहीं देते कि तुम पर झूठा आरोप लगाया जा रहा है।'

जय फिर भी कुछ नहीं बोला।

'यह इसलिए जवाब नहीं दे रहे, क्योंकि जो आरोप मैंने लगाया है वह गलत नहीं है।' इन्स्पेक्टर ने गुरु गम्भीर में कहा, 'वैसे भी एक गवाह मौजूद है जिसने उस रात मिस्टर जय श्रेहन को भक्तपुर में देखा था।'

'कौन-सा गवाह है वह ?'

'भक्तपुर रेलवे स्टेशन का टिकट-चैकर किशन लाल!' इन्स्पेक्टर ने कहा—'उसके मुताबिक परसों रात मिस्टर जय श्रेहन महानगर से आने वाली ग्यारह चालीस की ट्रेन से उतरे थे। उसने खुद गेट पर इनसे टिकट लिया था, क्यों मिस्टर जय, मैं ठीक कह रहा हूं न ?'

इन्स्पेक्टर की बात ने मालती और कर्नल चोपड़ा दोनों को ही निरुत्तर-सा कर दिया। वे लोग जय की ओर देखने लगे, इस आशा में कि शायद वह इन्स्पेक्टर की बात का विरोध करे। किन्तु जय पहले की तरह खामोश खड़ा रहा।

'अपराधी कितनी ही सफाई से अपराध क्यों न करे मिस्टर जय, कानून के हाथ देर-सवेर उस तक पहुंच ही जाते हैं।' इन्स्पक्टर बोला—'मैंने आपके बयान की तस्दीक के लिए रेलवे स्टेशन पर जांच-पड़ताल की थी। सुबह की गाड़ी से आने वाला आपका बयान बिलकुल ठीक था। गाड़ी वाकई सुबह काफी देर तक आऊटर सिगनल पर रुकी रही थी। एक-

बारगी तो मुझे लगा था कि आप वाकई सच कह रहे होंगे और सुबह की गाड़ी द्वारा ही महानगर से आए होंगे, किन्तु जब गहराई से छानबीन की तो मुझे टिकट-चैकर किशन द्वारा मालूम हो गया कि आप पिछली रात भी भक्तपुर में आये थे। तब सारी बातें मेरे सामने साफ हो गईं। तुम उस रात यहां आए और अपने पिता मिस्टर जगत मोहन का कत्ल करने के बाद अगली ट्रेन से जो कि लगभग एक बजे महानगर की ओर जाती है वापिस लौट गये, फिर अगली सुबह फिर यहां पहुंच गये अपने पिता की हत्या से अनजान-से बने हुए। बहुत अच्छी चाल खेली थी आपने। अगर किशनलाल ने आपको देख न लिया होता तो आप निश्चित रूप से अपने उद्देश्य में कामयाब हो गये थे, किन्तु यह भी सच है कि अपराधी चाहे कितना ही शातिर क्यों न हो, कहीं-न-कहीं चूक कर ही जाता है।'

यह सब सुनने के बावजूद भी जय पाषाण-सा खामोश खड़ा रहा।

मौन स्वीकृति लक्षण के आधार पर कहा जा सकता था कि निश्चित रूप से जय ही अपराधी है। तभी तो वह अपने पर लगाये गये आरोप का कोई विरोध नहीं कर रहा।

मैं सोच रहा था कि अगर जय ने ही अपने पिता की हत्या की है तो क्या वे हीरे जिनकी मलखान को तलाश है, कहीं जय के पास तो नहीं। हो सकता है कि उन्हीं हीरों को कहीं छिपाने के लिए वह उस रात वापिस महानगर लौट गया हो और वह लड़की…।

मैंने एक बार मालती की ओर गौर से देखा। उस रात जिस लड़की के पीछे जय भागकर गया था, वह लड़की मालती ही तो नहीं?

जय को तो मैंने अच्छी तरह देख लिया था, किन्तु उस लड़की की केवल एक झलक भर देख पाया था। इसलिये निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता था कि वह लड़की मालती थी या नहीं।

मैं अपने विचारों में उलझा हुआ था कि तभी जय के हाथों में इन्स्पेक्टर को हथकड़ियां डालते देखकर कर्नल चोपड़ा ने जोरदार शब्दों में विरोध किया। किन्तु उसके विरोध की कोई परवाह किये बिना हथकड़ियां डाल दी गयीं।

'यह सब क्या हो रहा है ?'

मिसेज त्रेहन की आवाज सुनकर सबकी आंखें सीढ़ियों की ओर घूम गईं जिसकी सबसे ऊपर वाली पौड़ी पर वह खड़ी थी,

'फूफी, पुलिस ने फूफा की हत्या के अपराध में जय को गिरफ्तार कर लिया है ?'

'क्या ?' मिसेज त्रेहन के मुख से केवल इतना ही निकला। फिर उसका शरीर अजाब ढंग से लहराया। लगा जैसे सन्तुलन न कायम रख सकी हो और वह सीढ़ियों से लुढ़कती हुई नीचे आ गिरी।

उसके सिर के एक हिस्से से खून बह रहा था और वह बेहोश हो चुकी थी।

▭ ▭

'मम्मी ?' पहली बार जय त्रेहन के मुख से आवाज निकली। वह सीढ़ियों से लुढ़ककर नीचे गिरी मिसेज त्रेहन की ओर झपटकर बढ़ना चाहता था किन्तु उसकी जंजीर इन्स्पेक्टर के हाथ में होने के कारण उसे रुक जाना पड़ा।

मैं और मालती लगभग एक साथ ही झपटकर मिसेज त्रेहन के पास पहुंचे। मालती बेहोश मिसेज त्रेहन को झिझोड़ती हुई-सी बोली—'फूफी···फूफी यह क्या हो गया तुम्हें ?'

तब तक कर्नल चोपड़ा भी वहां पहुंच चुका था और सिर से निकलती खून की धारा को देखकर बोला—'इन्हें फौरन हॉस्पिटल ले जाना होगा···जल्दी करो···देखो तो खून किस बुरी तरह बह रहा है।'

मालती ने बेहोश मिसेज त्रेहन को उठाने की कोशिश की, लेकिन वह उसके नाजुक हाथों के लिए काफी भारी थी। लिहाजा मैंने उसे अपनी बांहों में उठा लिया। मेरे साथ चलती हुई मालती ने मिसेज त्रेहन के सिर से बहते खून को रोकने के लिए अपना दुपट्टा उसके सिर पर बांधना शुरू कर दिया।

'प्लीज इन्स्पेक्टर···मुझे मम्मी के साथ जाने दीजिये।' मैंने अपने पीछे जय त्रेहन को कहते सुना।

'नहीं बेटे, तुम नहीं जा सकते।' साथ ही कर्नल चोपड़ा का स्वर सुनाई दिया—'हम लोगों को यहीं रुकना होगा। आखिर तुम्हें अपने पिता का अन्तिम संस्कार भी तो करना है।'

मैं मिसेज त्रेहन को हाथों में उठाए हुए बाहर निकल

आया; घबराई-सी मालती मेरे साथ ही थी।

तभी हमारे पीछे पुलिस का हवलदार दौड़ता हुआ आया। उसे शायद इन्स्पेक्टर ने भेजा था।

'इधर ले आओ इन्हें—जल्दी से।' वह सामने खड़ी पुलिस की जीप की ओर बढ़ता हुआ बोला।

हम दोनों मिसेज ब्रेहन को लिये हुए जीप के पिछले हिस्से में बैठ गये। हवलदार जीप को ड्राइव करता हुआ तेजी से हॉस्पिटल की ओर ले चला।

रास्ते में क्षण भर के लिए मिसेज ब्रेहन होश में आई। पहले तो वह खोई-खोई-सी आंखों से हम दोनों की ओर देखती रही—जैसे पहचानने का प्रयत्न कर रही हो।

फिर मालती को पहचानकर बड़ी कमजोर-सी आवाज में बोली—'मालती, अब क्या होगा?'

कहने के साथ ही एक उल्टी-सी आई और वह फिर बेहोश हो गई। मालती अपने रूमाल से उसका चेहरा साफ करने लगी। दुपट्टा लपेट देने के बावजूद भी सिर से खून बहना नहीं रुका था। खून से दुपट्टा पूरी तरह भीग चुका था।

हॉस्पिटल पहुंचते ही मिसेज ब्रेहन को इन्टेंसिव केयर में ले जाया गया। हालांकि वह एक नव निर्मित छोटा-सा हॉस्पिटल था, किन्तु उसके स्टाफ की तत्परता काबिले-तारीफ थी।

वापस लौटने के लिये उद्यत हवलदार ने एक नजर हम दोनों को देखा और फिर मुझसे पूछा—'वापस चलना है क्या?'

मैंने मालती की ओर प्रश्नपूर्ण दृष्टि से देखा तो वह बोली, 'मैं तो यहीं रुकूंगी।

'मैं भी फिलहाल यहीं रुक जाता हूं हवलदार साहब।' मैंने कहा—'अगर कोई काम पड़ गया तो यह बेचारी कहां भागती फिरेगी?'

'ठीक है।' हवलदार ने लापरवाही से कंधे झटके और वहां से चल दिया।

मेरा रुकना ठीक ही रहा, क्योंकि कुछ ही देर बाद डाक्टर ने आकर बताया कि खून की जरूरत है। मालती और मेरा खून चैक किया गया। मालती की बजाए मेरा खून मिसेज ब्रेहन से मिलता था। लिहाजा मेरा खून ले लिया गया।

'मैं नहीं जानती कि आपका शुक्रिया कैसे अदा करूं ?' मैं खून देकर बाहर आया तो मालती ने कहा—'एक अजनबी होकर आपने ऐसे मौके पर…।'

'आदमी ही आदमी के काम आता है।' मैं बोला—'रही शुक्रिया की बात तो उसे आप मेरे साथ चाय पीकर अदा कर सकती हैं।'

'मेरी इच्छा नहीं है।' वह परेशान से स्वर में बोली—'आप चाहे तो चाय पी लीजिये।'

'मैं भी अकेला पीकर क्या करूंगा।' मैंने लापरवाही से कहा—'वैसे मैं यह सलाह जरूर देना चाहूंगा कि व्यर्थ ही परेशान और चिन्तित होने से कोई लाभ नहीं। जो कुछ भी हम कर सकते हैं, वह हम कर रहे हैं। अब बाकी सब भगवान पर छोड़ देना चाहिये।'

मालती थोड़ी देर तो कुछ न बोली। न जाने क्या सोचती रही, फिर उसने कहा—'आइये चाय पीते हैं।'

हम दोनों कैंटीन में पहुंचकर एक कोने की मेज पर जा बैठे। मैंने चाय के साथ दो आमलेट लाने का आदेश दिया। मालती के इंकार करने पर मैंने ज्यादा जोर नहीं दिया और आमलेट अपने लिये ही मंगाया। जब कैंटीन का छोकरा सामान रखकर चला गया तो मैंने कहा—'मैं आपसे एक सवाल करना चाहता हूं मालती जी।'

'वह क्या ?'

'आप मेरे बारे में क्या जानती हैं ?'

'कुछ नहीं।'

'कुछ भी नहीं ?'

'सिर्फ इतना कि पुलिस ने आपको फूफा की हत्या के संदेह में पकड़ा था और फिर छोड़ दिया। वैसे कर्नल चोपड़ा का ख्याल है कि उन्होंने आपको वहां से भागते देखा था।'

'आपका क्या ख्याल है ?'

'किस बारे में ?'

'कर्नल चोपड़ा के बयान के बारे में ?'

'इतना तो मुझे उनकी बात का यकीन है कि उन्होंने अवश्य किसी को भागते हुए देखा है। यह भी हो सकता है कि उन्हें आपके बारे में कोई गलतफहमी हुई हो।' फिर कुछ रुककर

वह बोली—'लेकिन मेरा यह भी ख्याल है कि शायद कर्नल चोपड़ा को कोई गलतफहमी नहीं हुई है।'

'यह आप किस आधार पर कह सकती हैं।'

'आपका बार-बार ब्रेहन हाऊस में मौजूद होना?' वह मेरी आंखों में झांकती हुई बोली—'जब मैं पहली बार एयरपोर्ट से ब्रेहन हाऊस पहुंची थी, तब आप वहां मौजूद थे। शायद पुलिस ने कर्नल चोपड़ा की शिनाख्त पर आपको पकड़ा था, लेकिन कल शाम जब वह लाश पाई गई थी तब आप वहां क्या करने आये थे और आज सुबह—आज सुबह भी आप वहां मौजूद थे। आखिर क्यों? अगर आपका इस मामले से कोई सम्बन्ध नहीं,तो आप हर मौके पर वहां क्यों उपस्थित हो जाते हैं?'

'आप समझती हैं कि मैंने मिस्टर ब्रेहन की हत्या की है?'

'आपने इस समय फूफी को यहां पहुंचाने में सहायता करके हम पर उपकार किया है, इसलिए आपके बारे में मैं कोई गलत बात नहीं कहना चाहती, लेकिन मुझे इतना पक्का विश्वास है कि जय ने फूफा की हत्या नहीं की, वह किसी की हत्या नहीं कर सकता।'

इस बीच मैं उसके चेहरे के भाव पढ़ने में लगा रहा था। वह मुझे झूठ बोलती नहीं लग रही थी, लेकिन जो कुछ वह कह रही थी, उसे सच मानने के लिए भी तैयार नहीं था। जिस लड़की के पीछे मैंने उस रात जय को भागते हुए देखा था, उसकी झलक के साथ मैं मालती का मिलान करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन न तो मैं यही कह सकता था कि वह लड़की यही थी, न यह कह सकता था कि वह लड़की यह नहीं थी।

'कल ब्रेहन हाऊस में जिस आदमी की लाश पाई गई, वह कौन था?'

मेरे इस अचानक किये गये अप्रत्याशित सवाल पर मालती बौखला-सी गई। हाथ ऐसा झटका खाया कि होंठों की ओर बढ़ती हुई चाय बीच में ही छलककर मेज पर गिर गई।

'मुझे क्या मालूम कि वह कौन था?' फिर वह अपने को संयत करती हुई बोली।

'लेकिन मैं जानता हूं कि वह कौन था?'

मेरी बातों से उसे एक तेज झटका-सा लगा और वह स्तब्ध-सी मेरी ओर देखती रह गई। मैं उसके चेहरे पर नजरें गड़ाए हुए बोला—'और मैं यह भी जानता हूं कि वह कुछ दिन पहले आधी रात के बाद मिस्टर जगत त्रेहन की कार में सवार हुआ था—एयरपोर्ट के पास की एक कालोनी में से।'

मैंने देखा कि मेरी बात सुनकर मालती का चेहरा पीला पड़ गया और उसका सारा शरीर कांपने लगा। साफ जाहिर था कि मेरा तीर निशाने पर लगा है।

मैंने ठंडी होती हुई चाय का एक घूंट लिया और फिर एक सिगरेट सुलगाने के बाद बोला—'इससे पहले कि हम आगे बात करें, मैं आपको अपने बारे में सब-कुछ बता दूं। मेरा नाम रवि है और यार लोग मुझे प्रिंस कहते हैं। हीरे-जवाहरातों का पेशेवर चोर हूं और सजायाफ्ता मुजरिम भी। पुलिस फाइल में मेरा पूरा रिकार्ड मौजूद है।'

मैंने देखा कि मेरी बात सुनकर उसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे और वह भ्रमित-सी मेरी बात सुनती रही।

सिगरेट का कश लेकर उसकी राख फर्श पर झाड़ते हुए मैंने अपना बयान जारी रखा—'आपकी फूफी के पास एक बहुत कीमती चन्द्रहार है। उसे ही चुराने के लिए मैं भक्तपुर आया था। मुझे पता लगा कि वह चन्द्रहार बैंक लॉकर से सिर्फ शादी की वर्षगांठ के दिन ही निकाला जाता है और अगले दिन फिर लॉकर में वापिस रख दिया जाता है। वर्षगांठ की रात को चुराने के उद्देश्य से मैं पिछले कुछ दिनों से कोठी का निरीक्षण कर रहा था। कल वर्षगांठ का दिन था। लिहाजा एक दिन पहले यानी परसों आधी रात के करीब मैं कोठी का निरीक्षण करने के उद्देश्य से त्रेहन हाउस पहुंचा। तभी मैंने जय को चहारदीवारी फांदकर एक लड़की के पीछे भागते हुए देखा।'

'आपने जय को चहार दीवारी फांदकर भागते हुए देखा?'

'जी हां!' मैं अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए बोला—'जी हां, मैंने जय को ही देखा था। इस बारे में कोई शक नहीं है मुझे। इन्स्पेक्टर गजराज सिंह के मुताबिक यह बात साबित भी हो चुकी है कि परसों आधी रात के वक्त वह भक्त-

पुर में मौजूद था।'

'और वह लड़की कौन थी जिसके पीछे वह भागा था ?'

'यह मैं नहीं जानता। मैंने उसकी हल्की-सी झलक भर देखी थी।'

'ओह !' मालती ने केवल इतना ही कहा। किन्तु उसके चेहरे के भावों से मैं अनुमान न लगा सका कि इसका अर्थ क्या लगाया जाए।

बहरहाल मैंने अपना बयान जारी रखा—'उस समय अपने उद्देश्य के लिए अवसर उचित न जानकर मैं वापिस लौट गया। फिर मैं उसी रात चार बजे लौटकर आया। मौका सही देखकर मैं चहार दीवारी कूदकर भीतर गया। वहां मुझे जगत मोहन की लाश मिली। देखकर सन्न रह गया मैं। तभी उल्टे पांव लौट लिया। चहार दीवारी कूदकर जैसे ही बाहर निकला तो कर्नल चोपड़ा ने मुझे देख लिया। मैं अपना चेहरा छिपाते हुए भाग लिया···।'

मैंने उसे सब-कुछ सच-सच बता दिया कि कैसे मैं फिर सुबह सात बजे के करीब मोहन हाऊस पहुंचा जहां कर्नल चोपड़ा ने मुझे पहचानकर पुलिस द्वारा पकड़वा दिया। लोगों के जो-जो बयान सुने थे वह भी जिसमें जय मोहन का बयान मैंने जान-बूझकर विस्तार से बताया। उसके साथ यह भी बताया कि किस तरह इन्स्पेक्टर गजराज को मैंने सारा किस्सा न बता कर अपनी असलियत बताते हुए यह विश्वास दिलाया कि मैं वाकई निर्दोष हूं और कर्नल को मेरे बारे में गलतफहमी हुई है।

मैंने देखा कि मेरी बात खत्म होते न होते मालती न केवल काफी संयत हो चुकी थी बल्कि कुछ गम्भीर और विचार मग्न भी।

'तो आपने पुलिस को पूरी बात नहीं बताई ?' मेरी बात खत्म होने पर वह बोली—'चन्द्रहार की चोरी की योजना, उस लड़की के साथ-साथ जय और फूफा की लाश को देखने की बात आप पुलिस से छिपा गए ?'

'जी हां ?'

'क्यों ?'

'मोहन हाऊस का सम्मान बचाने अथवा उसके परिवार

के सदस्यों से किसी प्रकार की सहानुभूति के कारण नहीं बल्कि अपनी जान बचाने के लिए।' मैंने स्पष्ट शब्दों में कहा, 'क्योंकि मैं जानता था कि पुलिस को सारी बात जितने विस्तार से मैं बताऊंगा, उतना ही मैं फसूंगा। इसलिए अपने आपको बचाने के लिए मैंने छोटा रास्ता चुना कि कर्नल चोपड़ा को गलतफहमी हुई है और अपने बारे में सारी सच्चाई बता दी। जिसका इन्स्पेक्टर पर असर भी हुआ और उसने मेरी बात पर यकीन करके मुझे अस्थायी रूप से छोड़ दिया है।'

'किन्तु आपने वह सारा सच जो पुलिस को भी नहीं बताया मुझे क्यों बताया?'

'क्योंकि मैं आपसे सारा सच जानना चाहता हूं।'

'आपके सामने मैं कल सुबह काठमाडूं से यहां आई हूं। आपने नहीं तो पुलिस ने इस बात को जरूर चैक कर लिया होगा कि मैं जय की तरह यहां होकर वापिस काठमाडूं नहीं पहुंच गई थी और फिर सुबह यहां आ गई। भक्तपुर और महानगर के मुकाबले में काठमांडू यहां से बहुत दूर है। नेपाल देश का नाम आपने जरूर सुना होगा। उस देश की राजधानी है काठमांडू!'

'मैंने नेपाल का भी नाम सुना है और काठमांडू का भी।' मैं उसके चेहरे की ओर देखता हुआ बोला— 'लेकिन आपने शायद एक नाम नहीं सुना है?'

'किसका नाम?'

'मलखान सिंह का।'

'यह कौन है?'

'एक बहुत ही खतरनाक आदमी है।' मैं मालती के चेहरे पर नजरें जमाए हुए बोला—'आदमी की जान ले लेना उसके लिए ऐसा ही है जैसे कोई च्यूंटी को मसल देता है। अपनी पर आ जाए तो खानदान के खानदान खत्म कर देता है।'

मैंने मलखान की भयानकता को जरूरत से ज्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर बताया।

'लेकिन मलखान से हम लोगों का क्या सम्बन्ध?'

'यह तो मैं नहीं जानता किन्तु इतना जरूर जानता हूं कि बशेशर—जिसकी लाश कल शाम ब्रोहन हाऊस में पाई गई है—वह मलखान का साथी था।'

'क्या !'

'जी हां और मलखान यह बात भी जानता है कि बशेशर आखिरी बार जगत मोहन की कार में बैठा था ?'

'ओह मेरे भगवान !'

एक बार फिर मालती का चेहरा पीला पड़ गया था और उसका सारा शरीर पीपल के पत्ते की तरह थर-थर कांपने लगा था।

▭ ▭

फिर वह घबराए-से स्वर में बोली—'मुझे अब भी यकीन नहीं आता कि फूफा या फूफी कभी कोई ऐसा काम कर सकते हैं जो समाज अथवा कानून की नजरों में अपराध हो। लेकिन···।'

उसने अपनी बात अधूरी छोड़कर सावधानी के साथ इधर-उधर देखा। आस-पास कोई नहीं था जिस पर यह शक किया जा सकता कि वह हमारी बात सुन रहा है।

'लेकिन क्या ?' मैंने पूछा।

'मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा कि यह सब क्या हो गया है यहां आकर।' वह अपने सूखे होंठों पर जबान फेरने के बाद अपनी खूबसूरत उंगलियों को बेचैनी से चटकाती हुई बोली—'ऐसे खतरनाक आदमियों से फूफा का कोई सम्बन्ध भला कैसे हो सकता है ? वह तो एक बहुत ही नेक और शरीफ इन्सान थे।'

'जरूर होंगे।' मैंने एक अन्य सिगरेट सुलगाते हुए कहा—'लेकिन अब स्थिति यह है कि उस नेक और शरीफ इन्सान को किसी ने कत्ल कर दिया है। हत्या के आरोप में पुलिस ने उसके अपने बेटे जय को गिरफ्तार कर लिया है। सिर में चोट लग-जाने की वजह से मिसेज मोहन को हॉस्पिटल लाना पड़ा है। कुछ कहा नहीं जा सकता कि यहां से इन्हें अभी छुट्टी मिल जाएगी या डॉक्टर लोग इन्हें अभी कुछ दिन हॉस्पिटल में ही रखेंगे।'

मालती ने प्रश्नपूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा। जैसे मेरी बातों का मतलब समझने की कोशिश कर रही हो।

'अब रह जाती हैं आप अकेली।' मैं सिगरेट का कश लेकर बोला—'उधर मलखान अपने साथी के कातिल का पता लगाने

के लिए बेताबी से घूम रहा है।'

'आखिर आप मलखान की दहशत मुझ पर क्यों बैठाना चाहते हैं?'

'क्योंकि मलखान मेरे पीछे भी पड़ा हुआ है।'

'वह क्यों?'

'यह किस्सा भी मैं आपको बता दूंगा। बशर्ते कि मुझे यह तो मालूम हो कि मेरी कोशिश सही दिशा में हो रही है अथवा गलत?'

'मतलब?'

'अपने बारे में मैंने आपको वे बातें भी बता दीं जिन्हें मेरे अलावा शायद और कोई नहीं जानता था। ताकि आप मेरी सच्चाई से प्रभावित होकर मुझे वह सब-कुछ बता दें जो आप जानती हैं।'

'एक अपरिचित व्यक्ति को मैं सब-कुछ क्यों बता दूं।'

'क्योंकि मलखान की नजरों में मैं जगत त्रेहन का साथी हूं। उसे सन्देह है कि मैंने और जगत् त्रेहन ने मिलकर पहले बशेशर को मार डाला और फिर किसी बात पर मेरा और जगत त्रेहन का झगड़ा हो गया और मैंने जगत त्रेहन को मार डाला।'

मालती पहले तो मेरी ओर खामोश नजरों से देखती रही, जैसे किसी बहुत बड़ी उलझन में फंस गई हो। फिर विचार मग्न-से स्वर में बोली—'अगर फूफी जान-बूझकर आपको नहीं पहचान रही तो जरूर कुछ दाल में काला है।'

'आपकी फूफी ने कल सुबह से पहले मेरी शक्ल भी नहीं देखी थी।'

'मुझे भी इस बात का यकीन है।' मालती कुछ संयत-सी होती हुई बोली—'और इसी आधार पर मैं कह सकती हूं कि आपने जो कुछ भी कहा, वह न सिर्फ सच है बल्कि आपने फूफा की हत्या भी नहीं की।'

'जो बात मुझे कहानी चाहिए थी वह आप कैसे कह रहीं हैं।'

'यह भी सच है कि मैं इस समय बहुत अकेली पड़ गई हूं।' मालती मेरी बात का कोई जवाब न देकर बोली—'और मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूं?'

'आप मेरा भरोसा कीजिए।'

'किसी भी अजनबी आदमी पर कितना भरोसा किया जा सकता है?'

'जैसे मैंने आपका किया है।' मैं बोला—'मैंने आपको अपने बारे में वह सब भी बता दिया जो कोई और नहीं जानता।'

'लेकिन आपकी बात से तो ऐसा लगता है जैसे जय ने ही फूफा की हत्या की है। जबकि मैं इस बात पर किसी भी हालत में विश्वास नहीं कर सकती। मैंने बचपन से जय को देखा है। वह दूसरे के दुख से दुखी हो उठने वाला इन्सान है। वह किसी की हत्या नहीं कर सकता।'

'आपकी फूफी और फूफा के आपसी सम्बन्ध कैसे थे?'

'लगता था, जैसे दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों। फूफी तो फूफा की पूजा करती थीं। उनकी नजर में फूफा एक ऐसे व्यक्ति थे जो जिन्दगी में कभी कोई गलत काम नहीं कर सकते।'

'और मां-बेटे के आपसी सम्बन्ध कैसे थे?'

'जय और फूफी के? ऐसे मधुर सम्बन्ध हैं जैसे कि शायद सगे मां-बेटों के बीच भी न हों। दोनों एक-दूसरे पर जान देते हैं। फूफी ने कभी भी जय को इस बात का एहसास नहीं होने दिया कि वह उसकी सगी मां नहीं हैं। न जय ने ही कभी फूफी को यह महसूस होने दिया कि वह उन्हें सौतेला समझता है।'

मालती मुझे उन लोगों के मधुर पारिवारिक सम्बन्धों के बारे में बताती रही। इसी बीच मुझे उसका विश्वास जीतने का एक रास्ता सूझ गया जिसकी मुझे बड़ी देर से तलाश थी?

मैं बोला—'अगर जय अथवा मिसेज त्रेहन में से किसी ने आपके फूफा जगत त्रेहन की हत्या नहीं की तो भी यह तो मानना पड़ेगा कि किसी न किसी ने तो उनकी हत्या की है!'

'वह तो की है।'

'क्या हम दोनों मिलकर हत्यारे का पता लगाने की कोशिश नहीं कर सकते?'

'आप हत्यारे का पता क्यों लगाना चाहते हैं?'

'क्योंकि मलखान मेरे पीछे पड़ा है। वह मुझे जगत त्रेहन और बशेशर का हत्यारा समझ रहा है।'

'आप इसकी सूचना पुलिस में क्यों नहीं दे देते ?'

'सारी बात जानने के बावजूद भी आप ऐसी बचकानी सलाह दे रही हैं। वैसे भी अगर मैंने पुलिस को बता दिया कि हत्या के समय मैंने जय को चहार दीवारी फांदकर भागते देखा था तो उसमें जय तो फंसेगा ही, मैं भी बेकार के लपेटे में आ जाऊंगा और असली हत्यारा मजे में आजाद घूम रहा होगा।'

मालती का विश्वास अर्जित करने में मुझे बड़ी मेहनत करनी पड़ी। उसके दिमाग में यह बात बैठानी पड़ी कि जय को निर्दोष साबित करने के लिए असली हत्यारे का पता लगाना हमारे लिए कितना जरूरी है।

आखिर झिझकते-झिझकते उसने मुझे वह रहस्य बताया जिसे वह छिपाये रखना चाहती थी।

वह एक ऐसी अविश्वसनीय-सी कहानी थी जिसे सुनने के बाद भी मेरी समझ में न आया कि उस पर कितना यकीन किया जाए और कितना नहीं।

▭ ▭

मालती ने मुझे बताया—

'विवाह की वर्षगांठ में शामिल होने के लिये अचानक सरप्राइज देने के इरादे से जब मैं भक्तपुर पहुंची तो पुलिस को त्रेहन हाऊस में देखकर मैं स्वयं सरप्राइज में पड़ गई। उस समय तो मैं दुख और विस्मय से जड़वत् हो गई जब मुझे मालूम हुआ कि किसी ने फूफा की हत्या कर दी है। मेरी समझ में न आया कि फूफा जैसे आदमी की जो कि अपने काम से काम रखते थे और जिनका दुनिया में कोई दुश्मन नहीं, उनकी हत्या किसने कर दी ?'

'बहरहाल पुलिस अपना काम निबटाकर और लाश लेकर वहां से चली गई। मकान में हम केवल तीन जने ही रह गए। मैं, फूफा और जय और हां सुलोचना मौसी भी। दुखी तो जय भी था किन्तु फूफी तो दुख से जैसे पागल-सी ही हो गईं। किन्तु किसी प्रकार मैंने और जय ने उन्हें समझा कर ढांढस बंधाया।

'तीसरे पहर जय तो कर्नल चोपड़ा के साथ महानगर चला गया। पोस्टमार्टम के बाद फूफा की लाश लेने के लिए

ताकि उन का अन्तिम संस्कार किया जा सके। सुलोचना मौसी थककर अपनी बरसाती में चली गई थी। मैं और फूफी तब अकेले रह गए थे जब उन्होंने मुझे वह रहस्य की बात बताई।'

फूफी ने मुझे बताया कि कोठी के तलघर में एक लाश औरपड़ी हुई है। अभी तो पुलिस को उसका पता नहीं लग सका है लेकिन अगर पुलिस को उसका पता लग गया तब क्या होगा ?

सुनकर एकबारगी तो मैं अवाक रह गई। फिर पूछा—'किसकी लाश है ?

लेकिन फूफी को स्वयं नहीं मालूम था कि वह किसकी लाश थी। उन्होंने मुझे बताया कि कुछ रात पहले फूफा अपने किसी विदेशी मित्र को एयरपोर्ट छोड़कर आधी रात के बाद वापिस लौट रहे थे कि एक व्यक्ति ने उनसे लिफ्ट मांगी। उन्होंने लिफ्ट दे दी। वह व्यक्ति पिछली सीट पर बैठ गया। रास्ते के जिस चौराहे के निकट उस व्यक्ति ने पहुंचा देने के लिए कहा था वहां फूफा ने कार रोककर उस व्यक्ति को उतरने के लिए कहा और झुककर एक सिगरेट सुलगाने लगे। सिगरेट सुलगा-कर पीछे की ओर देखा तो सीट खाली थी। फूफा ने सोचा कि वह आदमी उतर गया होगा, लिहाजा वे कार लेकर भक्तपुर आ गए। जब मोहन हाऊस के गैरेज में कार खड़ी करके वे जाने को हुए तो उनकी नजर पिछली सीट पर पड़े उस व्यक्ति पर पड़ी। वह-मर चुका था। शायद दिल का दौरा पड़ा था उसे। इस घटना ने फूफा को बुरी तरह बौखला दिया। उन्होंने तुरन्त फूफी को जगाकर सारी बात बताई और पुलिस में फोन कर देना चाहा। किन्तु फूफी ने रोक दिया। फूफी का कहना था कि उनकी बात का कोई विश्वास न करेगा और वे व्यर्थ ही किसी भारी मुसीबत में फंस जाएंगे। फूफी ने सलाह दी कि लाश को फिलहाल तलघर में छिपा दिया जाए और अगली रात मौका देखकर कहीं दूर डाल आएंगे। फूफा को फूफी की राय पसन्द आई और लाश तलघर में छिपा दी गई।

अगली रात लाश को तलघर से निकालकर कहीं फेंक आने का मौका नहीं मिला। और उससे अगली रात वह नकाब-पोशों वाली घटना घट गई और किसी ने फूफा की ही हत्या कर दी। पुलिस को मकान की तलाशी में तलघर का रास्ता

नहीं मिला और अब लाश वहां पड़ी हुई थी। अगर लाश वहां से बरामद कर ली गई तो न सिर्फ ब्रेहन परिवार की बदनामी होगी बल्कि वे सब बड़ी भारी मुसीबत में फंस जाएंगे।

'पहले तो मेरी समझ में कुछ नहीं आया कि क्या किया जाए? फिर हम दोनों विचार करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचीं कि लाश को तलघर से निकालकर उसी जगह डाल दिया जाए जिस जगह फूफा की लाश पड़ी थी। पुलिस यही समझेगी कि जिसने फूफा की हत्या की है, उसने ही उस आदमी को मार डाला।

लिहाजा पहले तो सब्जी लेने के बहाने से सुलोचना मौसी को बाहर भेजा और फिर मैंने और फूफी ने लाश तलघर से निकालकर उसी जगह डाल दी जहां फूफा की लाश पाई गई थी। सब्जी खरीदकर लौटने पर सुलोचना मौसी की नजर उस पर पड़ी और उसने शोर मचाया। बाद में हमने पुलिस को फोन कर दिया।'

जो अविश्वसनीय कहानी मालती ने सुनाई थी, वह किसी भी ओर से मुझे यकीन करने के काबिल नजर नहीं आ रही थी। किन्तु मालती भी मुझे किसी ओर से झूठ बोलती नजर नहीं आ रही थी।

उसकी बात खत्म हुई तो मैंने पूछा—'कोई ऐसी बात तो नहीं रह गई जो तुम मुझे बतानी भूल गई हो?

'जो कुछ भी मैं जानती थी, वह सब मैंने आपको सच-सच बता दिया है?'

'तब मुझे बड़े अफसोस के साथ यह कहना पड़ेगा कि तुम्हारी फूफी ने तुम्हें कुछ भी सच नहीं बताया।'

'यह आप कैसे कह सकते हैं?' मालती एकदम तमक कर बोली—'फूफी भला मुझसे झूठ क्यों बोलेगी?'

'आप पढ़ी-लिखी और समझदार लड़की हैं। इतने स्पष्ट झूठ को भी नहीं देख नहीं पा रहीं।

अगर उस आदमी की मृत्यु दिल के दौरे से हुई थी तो फिर उसकी छाती में वह चाकू किसने धंसाया?'

मेरे सवाल ने निरुत्तर-सा कर दिया था मालती को।

'जब तुमने मिसेज ब्रेहन के साथ तलघर में वह लाश देखी थी तब उसकी छाती में वह चाकू धंसा हुआ था या नहीं?'

मैंने अपने पहले ही सवाल को दूसरे ढंग से दोहराया।
'मेरे ख्याल से चाकू तब उसकी छाती में धंसा हुआ था।'
'तुमने उस समय मिसेज त्रेहन से सवाल नहीं किया कि जिस आदमी की मृत्यु दिल का दौरा पड़ने से हुई है, उसकी छाती में चाकू कहां से आ गया?'
'मैंने चाकू उसकी छाती में धंसा हुआ देखा तो था किन्तु उस समय कुछ पूछने-ताछने लायक हालत मेरी नहीं थी।' मालती बोली—'उस समय तो दिमाग में केवल एक ही विचार था कि सुलोचना मौसी के लौट आने से पहले ही किसी तरह जल्दी-से-जल्दी उस की तलघर निकालकर बाहर डाल दिया जाए। वही हमने किया भी।'
'इससे एक बात साफ जाहिर होती है कि तुम्हारी फूफी ने तुम्हे सच नहीं बताया है।'
'लेकिन फूफी मुझसे झूठ क्यों बोलेंगी?'
'उसकी वजह शायद मैं जानता हूं।'
'वह क्या?'
'तुम्हारे फूफा और फूफी शायद उतने नेक और शरीफ इन्सान नहीं हैं जितना कि तुम समझती हो।'
'यह नहीं हो सकता।' मालती ने दृढ़ स्वर में प्रतिवाद किया।
'अभी मैंने मलखान का जिक्र किया था न तुमसे?'
'तो?'
'वह मलखान भी मेरी ही तरह हीरे-जवाहरातों का एक शातिर चोर है।' मैं बोला—'बल्कि मैं तो उसके मुकाबले में बहुत छोटा चोर हूं। वह मुझसे न सिर्फ कहीं बहुत बड़ा चोर है बल्कि कहीं ज्यादा खतरनाक भी। यह भी मैं तुम्हें बता चुका हूं कि बशेशर उसका साथी था।'
'फिर?'
मैंने मालती को बताया कि किस तरह मलखान और बशेशर सिंगापुर से हीरे चुराकर लाए थे और यहां पहुंचने के बाद बशेशर ने मलखान से विश्वासघात करते हुए उसकी शराब में जहर मिला दिया। फिर वह मलखान को मरता हुआ छोड़कर बाहर निकला और उसे मलखान के पड़ोसी डाक्टर ने जगत त्रेहन के नम्बर वाली कार में बैठते देखा।

जो कुछ भी मलखान ने मुझे बताया था, वह सब मैंने मालती को बताया।

पहले तो वह विस्मय के साथ सुनती रही। फिर बोली—'और मलखान समझता है कि उसके हिस्से के हीरे हड़पने के चक्कर में तुम भी शामिल हो ?'

'यही तो गलतफहमी हो गई है उसे।'

'हालात को देखते हुए जिस तरह मलखान तुम्हारे बारे में गलतफहमी का शिकार हो गया, कहीं उसी तरह हम भी तो फूफा और फूफी के बारे में गलतफहमी का शिकार नहीं हो रहे ?'

'आखिर तुम कहना क्या चाहती हो ?'

'हो सकता है मलखान का वह साथी बशेशर वाकई दिल के दौरे से मरा हो ?'

'तो फिर वह चाकू उसकी छाती में किसने धंसाया और क्यों धंसाया ?'

'वह किसी ने भी धंसाया हो लेकिन कल शाम लाश देखने के बाद पुलिस के डाक्टर ने जो कुछ कहा, वह तो याद ही होगा। डॉक्टर के मुताबिक बशेशर को मरे अड़तालीस घंटे के करीब हो चुके थे। चाकू भी उसने सबको दिखाया था—जिस पर खून का कोई निशान नहीं था। जिससे साफ जाहिर है कि चाकू उसके शरीर में उसके मरने के कई घंटे बाद धंसाया गया था—यह भी कहा था डाक्टर ने।'

'लेकिन…।'

'इससे एक बात साबित हो जाती है कि जब चाकू बशेशर के शरीर में धंसाया गया तब वह मर चुका था ?' मालती मुझे बोलने का कोई मौका दिए बिना बोली—'अगर हम चाकू वाली बात को बीच में से हटा दें, तब फूफा वाली बात ठीक लगती है कि नहीं ?'

'यानी बशेशर ने उनकी कार में लिफ्ट ली और वह दिल के दौरे से मर गया ?'

'बिलकुल।'

'चलो मान लिया कि बशेशर ने कार में लिफ्ट ली और वह के दौरे से मर गया।' मैं बोला—'लेकिन उसके हीरे गए ? जब वह मलखान को जहर देकर चला था तब

उसके पास हीरे थे। यह भी साबित हो चुका है कि वह बाहर निकलकर तुम्हारे फूफा की कार में बैठा और दिल के दौरे से मर गया? फिर वे हीरे कहां गए?'

'यह सब सोच-सोचकर मेरी खोपड़ी तो पिलपिली होती जा रही है।' मालती अपना सिर पकड़ते हुए बोली—'मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।'

'लेकिन सारा मामला मेरी समझ में कुछ-कुछ आने लगा है।'

'वह कैसे?'

'मिसेज ब्रेहन झूठ पर झूठ बोलती जा रही हैं।'

'यह नहीं हो सकता।' मालती ने पहले की तरह ही जोरदार शब्दों में विरोध किया।

'तुमने शायद आज का अखबार नहीं पढ़ा।'

'मौका कहां मिला? देख तो रहे हो कि सुबह से ही किस मुसीबत में फंसी हुई हूं। आज के अखबार में कोई खास बात है?'

मैंने धीरे से गरदन हिलाई और फिर उसे भानु गुप्ता के लेख का सारांश सुनाया।

'अब तुम देखो कि दोनों घटनाएं कितनी मिलती-जुलती हैं।' सारा किस्सा बताने के बाद मैंने कहा—'बीस साल पहले की मिसेज कौशल यानी अब की राधा देवी जोकि ब्रेहन परिवार के पड़ौस में ही रहती है अपने पति को रास्ते से हटाने के लिए नकाबपोशों की एक कहानी गढ़ती है। बिलकुल वैसी ही कहानी मिसेज ब्रेहन भी गढ़ती हैं। बीस साल पहले की कहानी में भी एक ठिगना और लम्बा नकाबपोश था और बीस साल बाद मिसेज ब्रेहन की कहानी में भी एक ठिगना और लम्बा नकाबपोश मौजूद है।'

मैंने उन दोनों घटनाओं की समानता बयान करने के बाद मालती से पूछा—'क्या अब भी तुम कह सकती हो कि मिसेज ब्रेहन ने तुमसे झूठ नहीं बोला।'

'मुझे अब भी यकीन नहीं आ रहा।' मालती ने कहा तो सही किन्तु एक निहायत ही कमजोर और कांपती-सी आवाज में।

मैंने एक सिगरेट सुलगाई।

मालती विचारों में निमग्न थी। एकबारगी उसका शरीर कांपा, फिर धीरे-धीरे उसमें दृढ़ता का संचार हुआ और वह उठती हुई बोली—'फूफी होश में आ गई होंगी। उन्हीं से चलकर पूछते हैं कि सच क्या है?'

▭ ▭

डाक्टर से मिले तो उसने बताया कि मिसेज मेहन खतरे से बाहर है। सिर में थोड़ा जख्म जरूर गहरा है लेकिन दिमाग में कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। कोई गहरा शाक जरूर लगा है। फिलहाल बेहोश हैं। कब होश में आएंगी, कुछ नहीं कहा जा सकता। वैसे भी अगर चौबीस घंटे उन्हें आराम कर लेने दिया जाये और उनसे किसी भी किस्म की बात न की जाये तो बेहतर था।

डाक्टर जगत मेहन के अच्छे मित्रों में से था। उसने मालती को विश्वास दिलाया कि उसके वहां रुकने की कोई आवश्यकता नहीं। यहां मिसेज मेहन का पूरा ख्याल रखा जाएगा।

मैं और मालती रिक्शे द्वारा मेहन हाऊस पहुंचे। वहां केवल सुलोचना मौजूद थी। उसने बताया कि पुलिस के साथ जय और कर्नल चोपड़ा जगत मेहन का अन्तिम संस्कार करने के लिये गये हैं।

मालती ने पहले अखबार में भानु गुप्ता का वह लेख पढ़ा। फिर मुझसे बोली—'क्या ख्याल है इस बारे में, एक बार राधा देवी से बात न कर ली जाये?'

मैंने कोई आपत्ति नहीं की।

बाहर निकलने को हुए तो कर्नल चोपड़ा मिल गया। मुझे देखते ही उसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे और उसने एकदम सीधा सवाल किया—'तुम यहां क्या कर रहे हो?'

'मैंने इन्हें रोका है।' मेरी बजाय मालती ने जवाब दिया।

'तुम्हें शायद इस आदमी की असलियत नहीं मालूम बेटी।' कर्नल ने बिना किसी लाग-लपेट के कहा—'यह बहुत ही खतरनाक आदमी है। इससे जितना दूर रहोगी उतना ही बेहतर होगा।'

'मुझे असलियत मालूम है अंकल।' मालती ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया और फिर पूछा—'जय कहां है?'

'उसे तो पुलिस शमशान से ही अपने साथ ले गई।' कर्नल ने कहा—'मैं भी नहा-धोकर अब शहर जा रहा हूं ताकि उसकी जमानत का कुछ प्रबन्ध किया जा सके। वैसे तुम जो भी कर रही हो, सोच-समझकर ही कर रही होगी, लेकिन फिर भी इस आदमी से जरा सावधान ही रहना। इन सारी मुसीबतों की जड़ यह आदमी ही है।'

मुझे नफरत भरी निगाहों से देखता हुआ कर्नल चोपड़ा वहां से चला गया।

मैंने उसकी बात का विरोध करके किसी बेकार की बहस में उलझने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

मालती की दस्तक के जवाब में दरवाजा शिल्पा ने खोला और उसके मुंह से केवल इतना निकला—'आप!'

'मैं जय की कजिन मालती हूं।'

'जानती हूं। कल देखा था मैंने आपको श्रेहन हाऊस में। कल ही काठमांडू से आई हैं न आप?'

'जी हां, आप शायद शिल्पा हैं?'

'जी हां।'

'जय पत्रों में अक्सर आपका जिक्र करता था।' मालती ने कहा—'राधा आंटी हैं क्या?'

'जी हां।'

राधा देवी भीतर एक पलंग पर लेटी हुई थीं, चेहरा उदास और मलीन। हम लोगों को देखकर उठने का प्रयत्न करने लगीं तो मालती ने कहा—'आप बेकार की तकलीफ न करें आंटी, लेटी रहिये।'

'यह जय की कजिन हैं।' शिल्पा ने परिचय कराया—'काठमांडू वाली।'

'हां, जय ने कई बार तुम्हारा जिक्र किया था।' राधा देवी उठकर तकिए के सहारे बैठती हुई बोली—'कैसे आना हुआ बेटी?'

मेरा परिचय कराने की किसी ने कोई जरूरत नहीं समझी, मैंने भी बीच में टांग अड़ाना उचित नहीं समझा और खामोशी से उनकी बातें सुनता रहा, शिल्पा ने दो फोल्डिंग कुर्सियां लाकर बिछा दी थीं और उन हम पर बैठ गए।

'आज का अखबार तो आपने पढ़ा ही होगा?'

मालती का सीधा सवाल सुनकर राधा देवी के चेहरे पर विषाद की एक काली छाया घिर आई और फिर एक दीर्घ निःश्वास के साथ बोली—'तुम भी मेरे जख्मों में नश्तर चुभाने आई हो ?'

'मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है आंटी।' मालती बोली—'आप जानती हैं कि फूफी को किसी ने हत्या कर दी है और इस अपराध में पुलिस ने जय को गिरफ्तार कर लिया है।'

'मालूम है मुझे।' भारी और थकी-सी आवाज में राधा देवी ने कहा—'जय चाहे और कुछ भी कर दे, लेकिन किसी की हत्या नहीं कर सकता और वह भी अपने पिता की ? असंभव, उसका दिल तो इतना कोमल है कि दूसरे के दुख से दुखी हो उठता है वह।'

'एक खास बात तो आपने नोट की होगी कि सारी घटना उसी तरह घटी है जिस तरह बीस साल पहले घटी थी।' मालती बोली—'वे ही दो नकाबपोश···एक लम्बा···एक ठिगना···।'

'जिन बातों को मैं पूरी तरह भुला चुकी हूं, उन्हें अब फिर क्यों याद दिलाना चाहती हो।' व्यथित-से स्वर में राधा देवी बोली—'बीस साल पहले जो कुछ भी हुआ उसमें मैं बेकसूर थी इसके लिए इससे बड़ा सबूत और क्या चाहिये कि अदालत ने मुझे उसी समय बाइज्जत बरी कर दिया था। न जाने किस्मत को क्या मंजूर है ? क्या दुनिया भर के दुख मेरे ही नसीब में लिखे हैं। उस अतीत को भुलाकर एक नई जिन्दगी की शुरूआत की मैंने। शिल्पा तक को उस बात का पता नहीं चलने दिया, जिसे आज बच्चा-बच्चा जानता है।'

'मैं सिर्फ यह जानना चाहती हूं आपसे कि क्या कभी फूफी के साथ आपकी ऐसी कोई बातचीत हुई थी जिसमें आपने उन्हें बीस साल पहली वह नकाबपोशों की घटना सुना दी हो ?'

'मैंने बताया न कि यह बात तो मैंने कभी शिल्पा को भी नहीं मालूम होने दी फिर किसी और को तो क्या बताती ? और तुम्हारी फूफी से तो मेरी कभी दुआ-सलाम भी नहीं हुई। वे अमीर लोग हम गरीबों को नफरत की नजर से ही देखते थे। एक सिर्फ जय ही था जो हमसे हंस-बोल लेता था। लेकिन उन दोनों को जय का हमसे मिलना-जुलना भी अच्छा नहीं लगता

था।'

'फूफा शायद नहीं चाहते थे कि जय शिल्पा से शादी करे।'

'किस अमीर बाप ने यह चाहा है कि उसका बेटा किसी गरीब खानदान की लड़की से शादी करे। मैंने भी जय को समझाने की कोशिश की थी। हालांकि जय एक नेक और सुशील लड़का है और अपने माता-पिता का आदर भी बहुत करता है। लेकिन जिद्दी भी एक नम्बर का है। उसका कहना था कि चाहे कोई कितना ही विरोध करे किन्तु वह शादी शिल्पा से ही करेगा।'

अपने बारे में बात चलती देख कर शिल्पा वहां से उठकर चली गई।'

मालती ने और भी कई सवाल पूछे किन्तु कोई खास नई बात मालूम न की जा सकी। भानु गुप्ता के लेख से जो जानकारी मिली थी, उसमें कोई बढ़ोत्तरी न हो सकी।

इस बीच शिल्पा चाय बनाकर ले आई।

उस समय राधा देवी कह रही थी—'पुलिस चाहे कुछ भी कहे। पुलिस चाहे कुछ भी समझे, किन्तु मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि जय ने अपने पिता की हत्या नहीं की।'

'कल शाम एक दूसरी लाश भी तो मिली है न दीदी।' हम लोगों को चाय देती हुई शिल्पा बोली।

'हां।' मालती ने सिर्फ इतना ही कहा।

'जिसने उसे मारा है, उसी ने मेहन साहब का भी कत्ल किया है। 'अगर किसी तरह उस आदमी का पता चल जाए तो जय को बचाया जा सकता है।'

'उसी का तो पता लगाने की कोशिश कर रही हूं मैं।'

राधा देवी की नजरें मेरी ओर घूमीं। लेकिन उसने मेरे बारे में कुछ कहा नहीं।

'अभी तक तो कुछ पता नहीं लगा।'

'कुछ पता लगा वह लाश किसकी थी?' शिल्पा ने पूछा।

कुछ देर तक और इधर-उधर की बातें होती रहीं। फिर जब चलने को हुए तो शिल्पा हमें बाहर तक छोड़ने के लिए आई।

बाहरी दरवाजे के निकट रुककर बोली—'दीदी, क्या मैं एक बार जय से मिल सकती हूं?'

'अभी तो उसे पुलिस साथ ले गई है। कर्नल चोपड़ा उसकी जमानत के सिलसिले में शहर जा रहे हैं। तुम चिन्ता न करो। तुम्हारे जय को कुछ नहीं होगा।'

शिल्पा को दिलासा देने के बाद मालती मेरे साथ बाहर निकल आई।

▭ ▭

'मौसी तुम अब बहुत थकी हुई हो, जाकर आराम कर लो।' ब्रेहन हाऊस लौटकर मालती ने सुलोचना से कहा।

'क्या आराम कर लूं बेटी।' एक लम्बी सांस के साथ सुलोचना ने कहा—'इस घर पर तो मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। इससे तो हम काठमांडू में ही अच्छे थे।'

'जो कुछ भी है भुगतना तो पड़ेगा ही। हिम्मत हारने से तो काम न चलेगा। जाओ जाकर आराम कर लो।'

किसी तरह मालती ने सुलोचना को उसकी बरसाती में आराम करने के लिए भेज दिया—उसके बाद हम दोनों ब्रेहन हाऊस की तलाशी में जुट गये। मुझे मलखान के हीरों की तलाश थी। मालती भी मेरे साथ उन्हें ही ढूंढ रही थी।

ढूंढते-ढूंढते तीसरा पहर होने को आया। सारा घर छान मारा हम दोनों ने—लेकिन हीरे कहीं नहीं मिले। न हीरे मिले, न बशेशर के कपड़े जोकि उसने पहने हुए थे। क्योंकि जब उसकी लाश मिली तो उसने जगत ब्रेहन के कपड़े पहने हुए थे। जाहिर है कि उसके कपड़े उतार लिये गये थे। वे कपड़े कहां गये? कुछ पता न चल सका।

हां, जय के कमरे की तलाशी लेते समय उसकी किताबों के बीच से एक पोस्टकार्ड साईज का फोटो अवश्य मिला। फोटो किसी लड़की का था और उस पर इंगलिश में लिखा था—टू जय विद लव—रमला।

'लो, कम-से-कम उस रमला का रहस्य तो खुला।' मैंने रमला की फोटो को देखते हुये कहा।

'तो यह है वह रमला?' बड़ी-बड़ी आंखों वाली उस लड़की की फोटो को देखती हुई मालती बोली—'इसी का लव लैटर तो फूफा की जेब से मिला था?'

'लेकिन जय की किताबों के बीच से इसका फोटो मिलने

का मतलब तो यही लगाया जा सकता है कि इसका चक्कर जय के साथ चल रहा है।'

'किन्तु फूफा की जेब से वह लव लैटर···।'

'हो सकता है वह रमला ने जय को लिखा हो और किसी तरह ब्रह्मन साहब के हाथ लग गया हो।'

'उस रात जय को जिस लड़की के पीछे भागते देखा था तुमने, वह कहीं यही लड़की तो नहीं थी?'

'मैंने तुम्हें बताया तो है कि जय को तो मैंने अच्छी तरह देखा था। किन्तु उस लड़की की मामूली-सी झलक ही दिखाई दी थी। वह लड़की अगर दोबारा मेरे सामने आ खड़ी हो तो भी शायद मैं उसे न पहचान सकूं।'

'ओह!'

'लेकिन इतना निश्चित है कि जय अगर निर्दोष भी हो तो भी उसे बचा पाना बड़ा मुश्किल है।'

'वह क्यों?'

'बहुत बड़े झमेले में फँसा लिया है उसने अपने आपको।'

'मगर कैसे?'

'रमला की फोटो उसकी किताबों में से निकली है और पुलिस के सामने उसने साफ झूठ बोल दिया कि वह इस नाम की किसी लड़की को नहीं जानता। आखिर यह झूठ जय ने बोला क्यों?'

'शायद मैं जानती हूं कि जय ने झूठ क्यों बोला?'

'क्यों बोला?'

'वह शायद इस लड़की को बचाना चाहता है।'

'इसे बचाने के लिये वह अपनी गरदन फांसी के फंदे में डाल देगा?

'तुम नहीं जानते। जय ऐसा ही है।'

'तुम्हारी यह अन्धी श्रद्धा मेरी तो समझ से बाहर है।

'अगर किसी तरह से इस लड़की का पता लग जाए तो सारा रहस्य खुल जाएगा। हमें पुलिस स्टेशन पहुंच कर जय से इस लड़की के बारे में पूछना चाहिये।'

'वह बता देगा?'

'और किसी को चाहे न बताये। लेकिन मुझे वह जरूर बता देगा। जय मुझसे झूठ नहीं बोल सकता।'

और वहां हीरों की तलाश छोड़कर मैं मालती के साथ पुलिस स्टेशन चल दिया। क्योंकि सारा मामला इस बुरी तरह से उलझाव भरा और रहस्यपूर्ण होता जा रहा था कि मैं भी असलियत जानने के लिए बेताब हो उठा था।

मुझे बहुत जोर की भूख लगी थी—इसलिए जाने से पहले फ्रिज में रखे कुछ फल निकालकर खा लिए मैंने।

▭ ▭

'कहो चाहे कुछ भी लेकिन मुझे तुम्हारा यह जय उतना शरीफ आदमी नहीं लगता जितना कि तुम समझ रही हो।' मैंने कार में पुलिस स्टेशन की ओर जाते हुए मालती से कहा। ग्रेहम हाऊस के गैरेज से उसने ही कार निकाली थी और अब वही उसे ड्राइव भी कर रही थी। मैं अगली सीट पर उसके निकट बैठा उसे रास्ता बता रहा था।

'वह क्यों?' उसने एकदम तमककर पूछा।

'एक तरफ तो वह शिल्पा से शादी करना चाहता है और दूसरी तरफ उसने रमला से चक्कर चला रखा है।' मैं बोला—'ऐसी दोहरी जिन्दगी जीने वाले आदमियों को शरीफ नहीं कहा जाता।'

'जय ऐसा नहीं है।'

'यानी तुम इस बात को भी नकारना चाहती हो कि यह फोटो रमला ने जय ने को दिया है। उस प्रेम-पत्र की बात तो मानी जा सकती है कि उस पर कोई सम्बोधन नहीं था। किन्तु इस फोटो पर तो जय का नाम लिखा हुआ है।'

'अभी जय से बात करते हैं तो साफ मालूम हो जाएगा।'

जिस समय हम पुलिस स्टेशन पहुंचे तो इंस्पेक्टर गजराज सिंह ने मुझे मालती के साथ देखकर कुछ विचित्र दृष्टि से घूरा और फिर लगभग गुर्राता हुआ-सा बोला—'क्यों बे चोर, तू इनके साथ क्या कर रहा है?'

'इन्हें मैं लाई हूं।' मेरे से भी पहले मालती ने कहा।

'वह तो मैं देख रहा हूं।' इंस्पेक्टर मुझे घूरते हुए बोला—'लेकिन तुम्हें शायद इनकी असलियत नहीं मालूम है।'

'मुझे सब मालूम है।'

'फिर भी।' इंस्पेक्टर ने मुझे घूरते हुए पूछा—'जब तेरा इन लोगों से कुछ लेना-देना नहीं है तो तू इन लोगों के साथ

चिपका क्यों फिर रहा है, आज सुबह भी तू ब्रेहन हाऊस में मौजूद था ?'

'आपको मैं उस लेख के बारे में बताने गया था जो आज के अखबार में छपा था।'

'वह भानु गुप्ता वाला लेख ?' इंस्पेक्टर बोला—'तेरा क्या ख्याल है कि तेरे बताए बिना मैं उसे पढूंगा नहीं ?'

'यह बात नहीं···।'

'बात तो मैं सब समझ रहा हूं। तुझे साले आराम से छोड़ क्या दिया कि तू हर जगह अपनी गरदन घुसेड़ता फिर रहा है। इसे नपवाने का इरादा है क्या ?'

'जरा तमीज से बात कीजिए इंस्पेक्टर।' मालती बोली—'यह मेरे मेहमान हैं।'

'कोई शरीफ आदमी तो किसी चोर को अपना मेहमान बनाएगा नहीं।

मालती कुछ कहती, उससे पहले ही मैंने उसे रोकते हुए कहा—'आप एक मिनट चुप रहिए मिस मालती। इंस्पेक्टर साहब, आप जरा इधर आइए।'

अनिच्छापूर्वक इंस्पेक्टर मेरे साथ चल दिया।

कुछ दूर ले जाकर मैंने धीमे शब्दों में कहा—'मैं पुलिस की मदद करना चाहता हूं और आप मुझ पर गरम हो रहे हैं।'

'तेरे से कहा किसने है बे पुलिस की मदद करने के लिए ?'

'कहा तो किसी ने नहीं। आपने जो मेरी बात पर यकीन करके मुझे छोड़ दिया, उसके लिए मैं आपका कितना शुक्रगुजार हूं इसका अनुमान आप नहीं लगा सकते। आपने यहां से न जाने की बन्दिश लगा रखी है मुझ पर। यह मामला जल्दी निबट जाए तो आने-जाने की आजादी मिले मुझे। इसीलिए अपनी तरफ से पुलिस की मदद करने की कोशिश कर रहा हूं।'

इंस्पेक्टर के चेहरे से लगा कि मेरी बात उसे कुछ जमी है।'

वह कुछ कहने ही जा रहा था कि मैंने उससे कहा—'रमला की एक फोटो मिल गई है।'

'क्या ! वह बुरी तरह चौंका।

मैंने रमला की फोटो निकालकर उसे दिखाई।

'टू जय विद लव रमला।' इंस्पेक्टर ने फोटो पर लिखी

इबारत को पढ़ते हुए कहा—'और वह साला छोकरा कह रहा था कि वह रमला नाम की किसी लड़की को नहीं जानता। अब समझ में आ गई सारी बात। वह खत भी उसी छोकरे को लिखा गया था। ऊपर नाम न होने की वजह से हम यही समझते रहे कि उसके बाप का किसी से रोमांस चल रहा है। लेकिन यह फोटो तुम्हें मिला कहां से ?'

'जय की किताबों में से।' मैंने कहा—'जिस तरह यह फोटो हासिल करने में कामयाब रहा हूं, उसी तरह आप अगर मेरी मदद करें तो शायद मैं और भी बहुत-सी बातें जानने में कामयाब हो जाऊंगा।'

उस फोटो को देखने के बाद ही मेरे प्रति इंस्पेक्टर का रवैया एकदम परिवर्तित हो गया।

बोला—'क्या मदद चाहते हो ?'

'हमें जय से मिलने दीजिए अकेले में, जहां कोई हमारी बात न सुन रहा हो। मुझे यकीन है कि मालती उससे बहुत कुछ उगलवाने में कामयाब हो जाएगी।'

'लगता है इस लड़की को बचाने की खातिर ही वह चुप्पी साधे हुए है।' इंस्पेक्टर ने विचारपूर्ण मुद्रा में कहा—'तुम्हें यकीन है कि वह अपनी जबान खोल देगा ?'

'मालती को पूरा यकीन है।'

'हूं।' इंस्पेक्टर ने एक क्षण कुछ सोचा—'और तुम उनके बीच हुई सारी बातचीत मुझे बताओगे।'

'ठीक है···ठीक है।'

इंस्पेक्टर के आदेश पर हमें जय से मिलवा दिया गया। आस-पास क्या दूर-दूर तक कोई सिपाही नहीं दिखाई दे रहा था।

मालती ने मुझसे फोटो लेने के बाद जय को दिखाते हुए कहा—'इस फोटो को पहचानते हो न जय ?'

जय ने एक नजर फोटो को देखा और फिर अपनी आंखें झुका लीं।

'यह रमला की फोटो है जिस पर तुम्हारा नाम लिखा है और तुमने पुलिस के सामने झूठ बोला कि तुम रमला नाम की किसी लड़की को नहीं जानते। क्यों ? आखिर क्यों तुमने झूठ बोला जय ?'

जय ने कोई जवाब नहीं दिया। वह अपने हथकड़ी से बंधे हाथों को देखता रहा।

'तुम नही जानते जय कि तुम्हारी यह चुप्पी कितने आदमियों की जिन्दगी खराब कर देगी। तुम्हें गिरफ्तार देखकर फूफी होश खो बैठीं और सीढ़ियों से गिर गईं।'

'अब कैसी हैं मम्मी ?'

'जिन्दगी और मौत के बीच झूला झूल रही है। मर ही गई होतीं, अगर मिस्टर रवि ने उन्हें अपना खून न दिया होता।'

'थैंक्यू।' जय ने एक नजर मेरी ओर देखकर कहा।

'मैं सिर्फ सिर हिलाकर रह गया।

'और शिल्पा। उस बेचारी के बारे में सोचा है तुमने ?' मालती जय की भावनाओं को जगाने की कोशिश करती हुई बोली—'अगर तुम्हें कुछ हो गया तो उस बेचारी का क्या होगा ?'

लगा जैसे मालती की बातों ने कहीं बहुत गहरे तक छू लिया था जय को। वह कुछ कहने को हुआ, फिर रुक गया।

'क्या मैं समझूं जय कि तुम्हें फूफी के भी जीने-मरने की परवाह नहीं। क्योंकि वह तुम्हारी सौतेली मां हैं और तुम उसे सौतेली समझते रहे हो।'

'ऐसा न कहो मालती ?' जय एकदम तड़पकर बोला।

'फिर तुम बताते क्यों नहीं कि यह रमला कौन है जो तुम्हें प्रेम पत्र लिखती है। जिसकी यह फोटो है- -जिस पर तुम्हारा नाम लिखा है ?'

आखिर मालती की बातों की गर्मी के आगे जय की जबान पर छाई चुप्पी की बर्फ पिघलनी शुरू हुई और उसने बताया।

जय के मुताबिक जब उसे काठमांडू जाने का जगत मोहन का आदेश मिला तो उसे यह समझते देर न लगी कि उसे शिल्पा से दूर रखने के लिए ही यह आदेश दिया गया है। उसका काठमांडू जाने का कोई इरादा नहीं था और वह अपने पिता के आदेश की अवहेलना करने का साहस भी नहीं जुटा पा रहा था अपने भीतर। आज तक कभी वह अपने पिता के सामने ऊंची आवाज में भी नहीं बोला था। इसलिए पिछले इत-

बार को जब बाप-बेटों के बीच शिल्पा को लेकर झगड़ा हुआ तो उसे खुद अपने ऊपर आश्चर्य हो रहा था कि वह अपने पिता के सामने यह कहने का साहस कैसे कर पाया कि वह शिल्पा से ही शादी करके रहेगा।

जगत ब्रेहन का आदेश मिलने के बाद वह बड़ी दुविधा की स्थिति में पड़ गया था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। दिमाग को कुछ सकून देने के लिहाज से वह एक फिल्म का ईवनिंग शो देखने के लिए घुस गया। वहां से लौटकर अपने फ्लैट में आया तो फिर उसे दुविधापूर्ण विचारों ने घेरकर परेशान करना शुरू किया।

आखिर उसने उसी समय भक्तपुर जाने का निश्चय किया इसमें एक लालच तो यही था कि अगर उसे काठमांडू जाना ही पड़ा तो कम-से-कम वह जाने से पहले एक बार शिल्पा से मिलकर उसे तसल्ली तो दे देगा।

उसकी कार सर्विस के लिए गई हुई थी। इसलिए स्टेशन से ग्यारह पांच की ट्रेन पकड़कर भक्तपुर पहुंचा। वहां स्टेशन से स्कूटर लेकर ब्रेहन हाऊस की ओर रवाना हुआ। किन्तु प्लग की खराबी की वजह से स्कूटर बीच में रुक गया। ड्राइवर ने प्लग साफ करके स्कूटर फिर आगे बढ़ाया।

ब्रेहन हाऊस के आगे पहुंचकर उसने पैसे देकर स्कूटर वाले को बिदा किया और फिर मुख्य द्वार की घंटी बजाने जा ही रहा था कि यह सोचकर रुक गया कि डैडी यहां तक दरवाजा खोलने के लिए आकर परेशान होंगे। चहार दीवारी ज्यादा ऊंची नहीं थी, इसलिए उसे पार करके वह अन्दर कूद गया ताकि मुख्य इमारत की घंटी बजाकर दरवाजा खुलवा सके।

अन्दर उसे जगत ब्रेहन की लाश दिखाई दी और इमारत का मुख्य दरवाजा खुला हुआ था। अपने पिता की लाश देखकर वह सन्न रह गया। अभी वह कुछ सोचने-समझने के यक भी नहीं हुआ था कि उसने किसी को चहार दीवारी की ओर भागते देखा। वह भी उसके पीछे भाग लिया।

उसे चहार दीवारी के पार कूदती हुई एक लड़की की झलक दिखाई दी।

वह भी चहार दीवारी कूदकर उसके पीछे भाग लिया

और एक लम्बी दौड़ के बाद आखिर उसने उसे पकड़ ही लिया।

वह रमला थी।

रमला जय के एक दोस्त की बहन थी जिससे उसकी मुलाकात तब हुई थी जब वे लोग काठमांडू से आकर यहां बस गए थे। उसका यह दोस्त महानगर में ही रहता था और उसके मां-बाप कई साल हुए मर चुके थे। दोस्त रमला की शादी के लिए कोशिश कर रहा था। किन्तु एक रात उसका स्कूटर एक ट्रक से टकरा गया और उसकी भी मौत हो गई।

दोस्त के मरने के बाद वह और रमला एक-दूसरे के और भी नजदीक आ गए। जय का उद्देश्य अपने दिवंगत दोस्त की निराश्रित बहन की मदद भर करना था, ताकि उसे किसी किस्म की तकलीफ न हो। किन्तु उस मेल-जोल को रमला प्यार समझ बैठी और सुनहरे सपने बुनने लगी। एक दिन जब रमला ने उसे अपने प्रेम निवेदन के रूप में यह फोटो भेंट की तो उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वह उससे प्रेम नहीं करता, जिससे रमला को ऐसा मानसिक आघात लगा कि उसे स्वस्थ करने के लिए जय को उससे यह कहना पड़ा कि उसने केवल मजाक करने के उद्देश्य से झूठ बोला था।

किन्तु समय बीतने के साथ रमला का उसके प्रति प्रेम तीव्रतर होता जा रहा था। जबकि जय को उससे सहानुभूति तो थी किन्तु शादी वह केवल शिल्पा से करना चाहता था। इससे पहले कि हालात ज्यादा खराब हों, जय को इस समस्या से बचने का एक ही तरीका नजर आया कि वह रमला से मिलना-जुलना बन्द कर दे। नतीजा यह हुआ कि उसने उसे उसके फ्लैट पर फोन करना शुरू कर दिया। जब जय ने उससे फोन पर भी बातचीत करनी बन्द कर तो दी उसने उसे पत्र लिखने शुरू कर दिए।

'वह पत्र जो डैंडी की जेब से बरामद हुआ था, रमला के मुझे लिखे गये पत्र में से ही एक था।' जय ने बताया—'कत्ल के समय डैंडी ने जो नाइट गाऊन पहना हुआ था वह मेरा ही था। हम दोनों के नाइट गाऊन एक ही रंग के थे। पिछले इतवार को जब मेरा डैंडी से झगड़ा हुआ तो मैं गुस्से और जल्द-बाजी में उसी रंग का डैंडी का नाइट गाऊन अपने कपड़ों में

डालकर ले गया था और अपना यहीं छोड़ गया जिसकी जेब में असावधानी के कारण वह पत्र रह गया था।'

'जब तुमने रमला को पकड़ लिया तो उससे पूछा नहीं कि वह आधी रात को ब्रेहन हाउस में क्या कर रही थी और तुम्हें देखकर भागी क्यों ?' मैंने सवाल किया।

'पूछा था।'

'उसने क्या ज़वाब दिया ?'

जय ने बताया कि जब उसने रमला को पकड़ा तो उससे वही सवाल किया जो कि मैंने अभी-अभी किया था। रमला ने उसे बताया कि जब बहुत अरसे से जय उससे नहीं मिला और न उसने उसके किसी पत्र का जवाब दिया तो वह उद्विग्न-सी हो गई। जीवन उसे निस्सार-सा लगने लगा। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। आखिर कई दिन के सोच-विचार के बाद वह इस नतीजे पर पहुंची कि अगर वह उसके मां-बाप से मिलकर उन्हें अपनी सारी बात बताये तो शायद वे कुछ उसकी सहायता कर सकें। इस निश्चय पर पहुंचने के बावजूद भी वह यह कदम उठाने का साहस नहीं कर पा रही थी।

फिर उस दिन उसने भक्तपुर जाकर जय के माता-पिता से मिलकर सारी बात बता देने का फैसला कर ही लिया। लेकिन स्टेशन पहुंचने तक फिर साहस खो बैठी और वापिस लौट आई। उस दिन वह तीन बार स्टेशन गई और तीनों बार हिम्मत हारकर वापिस लौट आई। बल्कि एक बार तो उसने टिकट भी खरीद लिया था।

आखिर वह शाम सात बजे की गाड़ी में बैठकर भक्तपुर के लिए रवाना हो गई। किन्तु भक्तपुर स्टेशन पर उतरने के बावजूद भी ब्रेहन हाउस तक जाने का साहस नहीं जुटा पा रही थी। काफी देर तक वह इधर-उधर घूमती रही।

किसी तरह जब हिम्मत जुटाकर वह ब्रेहन हाउस में घुसकर जगत ब्रेहन से मिली तो रात के नौ सवा नौ के करीब बज चुके थे। उसने जगत ब्रेहन को अपनी कहानी सुनाई—जिसे सुनने में उसने कोई रुचि नहीं दिखाई। उसने उसे अपने महानगर स्थिति ऑफिस का कार्ड देकर कहा कि वहां उससे मिले, तभी बात होगी। जगत ब्रेहन के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से रमला को बेहद मायूसी हुई। एक प्रकार से जगत ब्रेहन ने

उसकी बात पूरी तरह सुने बिना ही उसे जबर्दस्ती त्रेहन हाऊस के बाहर निकाल दिया था।

बाहर आकर वह पेड़ के सहारे खड़ी हुई काफी देर तक रोती रही। फिर वापिस स्टेशन लौट आई। वहां मालूम हुआ कि महानगर के लिए रात एक बजे से पहले कोई गाड़ी नहीं है। नौ बजे के बाद कोई बस भी नहीं चलती थी।

लिहाजा उसे दो-ढाई घंटे उस स्टेशन पर ही गुजारने थे।

उस समय महानगर से आने वाली कई गाड़ियां थीं किन्तु जाने के लिए एक बजे से पहले कोई गाड़ी नहीं थी। वक्त गुजारने के लिए वह आती हुई गाड़ियों और उनसे उतरने वाले यात्रियों को देखती रही।

जब इससे भी ऊब गई तो थककर एक बैंच पर जा बैठी और ऊंघने लगी।

तब ग्यारह चालीस की गाड़ी आई और उसने उससे जय को उतरते देखा। पहले तो उसे अपनी आंखों पर यकीन ही नहीं आया। लगा जैसे सपना देख रही है। लेकिन जब इस बात का यकीन हो गया कि वह जय ही है तो वह उसे पुकारने को हुई। किन्तु तब तक जय स्टेशन से बाहर निकल चुका था।

जब तक वह उसके पीछे भागकर स्टेशन से बाहर निकली तब तक जय एक स्कूटर में बैठकर वहां से जा चुका था। उस वक्त वहां आधी रात के समय दूसरा स्कूटर भी नहीं था। रमला ने एक रिक्शे में स्कूटर का पीछा किया। किन्तु रिक्शा और स्कूटर का क्या मुकाबला? कुछ देर में ही स्कूटर रमला की आंखों से ओझल हो गया।

उसने रिक्शा वाले से कहा कि अगर उसने जल्दी से जल्दी उसे त्रेहन हाऊस तक पहुंचा दिया तो वह उसे एक रुपया फालतू देगी।

रमला का इरादा था कि वह किसी तरह जय को त्रेहन हाऊस के बाहर ही पकड़कर उससे बात कर ले। किन्तु जब वह त्रेहन हाऊस के सामने पहुंची तो जय कहीं दिखाई नहीं दिया बल्कि त्रेहन हाऊस भी पूरी तरह अन्धेरे में डूबा हुआ था।

यह बात तो रमला के दिमाग में भी न आई कि जय अभी वहां पहुंचा ही न होगा। चूंकि जय स्कूटर में था और वह

रिक्शे में, इसलिए उसे इस बात का पक्का यकीन था कि जय यहां उससे पहले ही पहुंच चुका है।

इसलिए ब्रेहन हाऊस का खामोश वातावरण देखकर उसके दिमाग में यही बात आई कि ट्रेन से उतरते समय कहीं जय ने उसे देख लिया था और उससे बचने के लिए ही वह इतनी तेजी के साथ स्टेशन से बाहर निकलकर चल दिया। उसे विश्वास था कि जय ब्रेहन हाऊस के भीतर ही है किन्तु उसे टालने की गरज से मकान के भीतर की बत्तियां इत्यादि नहीं जलाई हैं। उसे यकीन था कि उसने अगर लोहे के दरवाजे के पास की भी घंटी बजाई तो भी दरवाजा नहीं खुलेगा। किन्तु जय को अपनी आंखों से देख लेने के बाद वह उससे आखिरी बातचीत करने के लिए बेचैनी-सी हो गई थी।

लिहाजा चहार दीवारी फांदकर भीतर पहुंची और उसे जगत ब्रेहन की लाश दिखाई दी तथा मुख्य इमारत का बाहरी दरवाजा खुला हुआ था। उसने उसे छूकर देखा। लाश अभी गरम थी जिसका मतलब था कि हत्या हुए अधिक देर नहीं हुई। वह अभी किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी लाश के ऊपर झुकी हुई थी कि तभी अपने पीछे किसी की आहट पाकर वह एकदम तेजी के साथ पास के अन्धेरे में को सरक गई।

वह जय के बारे में सब-कुछ भूल-भाल गई थी। उसे लगा कि हत्यारा कहीं आस-पास ही घूम रहा है और वह उसे भी जान से मार देगा। अपने आपको अन्धेरे में रखती हुई वह चहार दीवारी की ओर बढ़ी और फिर उसके पार कूद गई।

अपने ओर आते कदमों की आवाजों से उसे लगा कि हत्यारा उसका पीछा कर रहा है। भय और आतंक के कारण कुछ भी सोचने-समझने की बुद्धि नहीं रही थी। बस एक ही बात उसके दिमाग में थी कि हत्यारा उसके पीछे है और उसे जान बचाने के लिए कहीं दूर बहुत दूर निकल जाना है।

बस वह सांस छोड़कर भागती चली गई।

वह तब तक भागती रही जब तक कि उसके कदमों ने जवाब न दे दिया। आखिर वह लड़खड़ाकर गिर पड़ी। उसका पीछा करने वाला उसके निकट आ गया था।

यह देखकर उसकी जान में जान आई कि वह जय

था।

'अपनी कहानी सुनाते-सुनाते रमला रोने लगी थी।' जय बताता गया—'जब मैंने रोने का कारण पूछा तो वह बोली कि मैं उसे ही अपने डैडी की कातिल समझ रहा हूंगा। किन्तु मैंने उससे कहा कि जब उसने कुछ नहीं किया तो कोई भी उसे कातिल क्यों समझेगा तो उसने बताया कि गलत परिस्थितियों में निर्दोष व्यक्ति को भी अपराधी समझकर सजा दे दी जाती है। उसकी यह बात सुनकर मैं भी डर गया। क्योंकि उन परिस्थितियों में कातिल मुझे भी समझा जा सकता था। बल्कि रमला मुझे कातिल समझ कर ही तो वहां से भागी थी। रमला ने ही मुझे सलाह दी कि इस समय अगर हमने पुलिस को खबर दी तो हमें कातिल समझ लिया जायेगा। क्योंकि कत्ल हुए ज्यादा देर नहीं हुई है और आधी रात के समय त्रेहन हाऊस में होने का जो कारण हम बताएंगे, वह सच होने के बावजूद भी कोई उस पर यकीन नहीं करेगा। मुझे भी लगा कि रमला सही कह रही है और मैं उसके साथ अगली गाड़ी से वापिस शहर लौट गया।'

'तुम्हें उस वक्त इस बात का जरा भी अहसास नहीं हुआ कि तुम कितनी बड़ी गलती कर रहे हो?' मैंने कहा।

'दरअसल मैं उस समय कुछ भी सोचने-समझने लायक स्थिति में नहीं था।' जय अपने हथकड़ी से बंधे हाथों की उंगलियां आपस में फंसाता हुआ बोला—'रमला जो कुछ भी मुझसे कहती गई, वही मुझ सही लगा। चूंकि मैं उसके पीछे घटनास्थल से भागकर आया था उसे पकड़ने के लिए। इस-लिए मुझे लगा कि मेरा इस तरह से भाग आना भी पुलिस को शंकित करेगा। फिर पिछले इतवार को ही तो डैडी से मेरा झगड़ा हुआ था। उन सब बातों को सोचकर लगा कि मैं बुरी तरह फंस जाऊंगा।'

'इसलिए तुम रमला के साथ वापिस शहर लौट गये?'

'हां। क्योंकि मेरा ख्याल था कि जब किसी को यहां मेरे होने के बारे में पता ही नहीं चलेगा तो मुझ पर कोई शक क्या करेगा।'

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं इस मूर्ख आदम की

हरकत पर हंसूं या रोऊं, जिसने बेकार ही अपने आपको इस भारी मुसीबत में फंसा लिया था।

'अगली सुबह तुम फिर शहर से लौट आये और ऐसा जाहिर किया, जैसे तुम्हें यहीं आकर अपने पिता की हत्या का समाचार मिला है।'

'हां।'

'लेकिन जब तुमसे पुलिस ने रमला के बारे में पूछा तो तुमने यह क्यों कहा कि तुम इस नाम की किसी लड़की को नहीं जानते?'

'क्योंकि रमला की बातों से मुझे विश्वास हो गया था कि वह निर्दोष है और मैं उसे किसी मुसीबत में नहीं फंसाना चाहता था।' जय बोला—'वह मेरे दिवंगत दोस्त की निराश्रित बहन थी जिसकी रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य था।'

मुझे लगा कि या तो जय सरासर झूठ बोल रहा है या फिर वह मूर्ख किस्म का ऐसा आदर्शवादी युवक है जिसे अभी तक जिन्दगी की कड़वी सच्चाइयों से दो-चार होने का मौका मिला।

'लेकिन जब पुलिस ने तुम्हें गिरफ्तार कर लिया तब तो उसे सच्चाई बता सकते थे?' मैंने कहा।

'उससे क्या फायदा होता?' जय मेरी ओर देखकर बोला—'मैं निर्दोष होने के बावजूद भी जिस झूठे अपराध में फंस गया था, उसमें किसी अन्य निर्दोष को फंसा लेने से क्या लाभ होता।'

'यानी तुम्हारी नजर में रमला निर्दोष है?'

'बिलकुल।'

'क्या सबूत है तुम्हारे पास?'

'रमला कभी मुझसे झूठ नहीं बोल सकती।'

'तुम रमला से प्यार करते हो या शिल्पा से?'

'शिल्पा से।'

'लेकिन रमला को बचाने के लिए फांसी का फंदा अपने गले में डाल सकते हो?'

'नहीं, लेकिन अपने आपको बचाने के लिए मैं किसी निर्दोष को भी तो फांसी के फंदे पर नहीं चढ़ा सकता।'

'रमला ने कहा और तुमने मान लिया कि वह निर्दोष

है।'

'वह मुझसे झूठ नहीं बोल सकती।'

जय की मूर्खतापूर्ण हठधर्मी के कारण मुझे उस पर क्रोध-सा आने लगा था। सबसे बड़ा आश्चर्य तो इस बात का हो रहा था कि अपने आपको इतनी बड़ी मुसीबत में फंसा लेने के बावजूद उस व्यक्ति को अभी तक अपनी मूर्खता का अहसास नहीं हो रहा था।

उसकी बातों से मुझे इस बात में कोई सन्देह नहीं रहा था कि जगत मोहन का कत्ल रमला ने ही किया है और जय के अचानक वहां पहुंच जाने के कारण वह घबरा गई और वहां से भाग ली। किन्तु जब जय ने उसका पीछा करके उसे पकड़ ही लिया तो उसने जय को अपनी निर्दोषिता का विश्वास देते हुए उसे भी अपने साथ शहर लौट चलने के लिए तैयार कर लिया।

किसी चालाक लड़की के लिए जय जैसे कल्पनाशील और भावुक व्यक्ति की भावनाओं से खेलकर उसे अपने अनुकूल बना लेना कोई ज्यादा मुश्किल काम नहीं था।

'रमला का पता क्या है?'

जय ने कहने के लिए मुंह खोला। लेकिन शायद उसे तभी इस सवाल का अर्थ भी समझ में आ गया और वह एकदम चौंक-कर बोला—'तुम रमला का पता पुलिस को देकर उसे पकड़वा देना चाहते हो?'

'वह तुम्हारे पिता की कातिल है?'

'रमला निर्दोष है।'

'निर्दोष है तो फिर उसका पता देने से क्यों हिचक रहे हो?'

'मैंने उसे उसकी रक्षा करने का वचन दिया है।'

आज के जमाने में जय जैसे शरणागत वत्सल और अपने वचन की रक्षा करने वाले व्यक्तियों का मिलना दुर्लभ है। किन्तु फिर भी मेरे मन में उसके लिए कोई श्रद्धा नहीं उपज रही थी। मुझे यही लग रहा था कि यह व्यक्ति अपनी मूर्खता के कारण अपने आपको व्यर्थ की मुसीबत में फसाए जा रहा है।

जितना कुछ जय ने बता दिया था, उसके बाद वह अब

और कुछ बताने के लिए तैयार नहीं था। रमला का पता जानने की मेरी और मालती की सारी कोशिशें बेकार गईं। मालती ने कई बार मिसेज ब्रेहन और शिल्पा की दुहाई दी। लेकिन जय पर कोई असर नहीं हुआ।

आखिर हम दोनों उस आत्म बलिदानी व्यक्ति के पास से रमला का पता हासिल किए बिना निराश लौट आये।

▭ ▭

जय के पास से लौटते समय ही मैंने मालती से कह दिया था कि जय को बचाने के लिए यह आवश्यक है कि हम पुलिस को सारी बात स्पष्ट बता दें, ताकि वह रमला को खोजकर उसे गिरफ्तार कर सके। मालती ने मेरी बात से सहमति प्रगट की तो मैंने इन्स्पेक्टर गजराज सिंह को जय के साथ हुई सारी बातचीत विस्तार से बता दी।

'अजीब बेवकूफ आदमी है यह, जो उस लड़की को बचाने के लिए अपनी जिन्दगी दांव पर लगा रहा है।' इन्स्पेक्टर गजराज सिंह ने भी हैरानी के साथ कहा—'लेकिन बिना पते के उस लड़की को तलाश कहां करें ?'

'एक तरकीब है ?'

'रमला की फोटो तो हमें मिल गई है।' मैं बोला—'क्यों न इस फोटो को सारी कहानी के साथ आज रात ही शहर के सारे अखबारों में प्रमुखता से छपवा दिया जाये। अखबारों में फोटो छपी देखकर रमला को पहचानने वाले कुछ लोग जरूर पुलिस से सम्पर्क स्थापित करेंगे और तब आपके लिए उस तक पहुंचना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा।'

इन्स्पेक्टर को सुझाव पसन्द आया।

जब मैं और मालती पुलिस स्टेशन से विदा हुए तो इन्स्पेक्टर का व्यवहार मेरे प्रति काफी नरम था।

▭ ▭

जब हम पुलिस स्टेशन से निकले तो सांझ हो चुकी थी। आकाश में अचानक ही बादल घिर आने की वजह से सांझ का धुंधलका कुछ ज्यादा ही काला हो गया था। हॉस्पिटल तक पहुंचे तो हवा भी कुछ तेज होने लगी थी।

हॉस्पिटल में पूछने पर मालूम हुआ कि मिसेज ब्रेहन अभी तक बेहोश हैं। बीच में कुछ देर के लिए होश में आई थीं तो

जय को याद करके काफी परेशान हो उठी थीं। लिहाजा डॉक्टर के आदेश पर उन्हें इन्जेक्शन देकर गहरी नींद में सुला दिया गया।

हॉस्पिटल की इमारत से निकलकर मैं और मालती कार की ओर बढ़े तो आकाश से हल्की बूंदें गिरने लगी थीं। भीगने से बचने के लिए हम दौड़कर कार तक पहुंचे और दरवाजे खोलकर अन्दर बैठ गए। मालती ड्राइविंग सीट पर बैठी और मैं उसके निकट।

'यह बे मौसम की बारिश न जाने कहां से आ गई।' मालती कार स्टार्ट करती हुई बोली।

'फिर भी अभी तेज नहीं हुई।' मैंने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा—'और लगता है हमारे घर पहुंच जाने तक तेज होगी भी नहीं।'

तभी हमारे पीछे से एक आवाज सुनाई दी—'घर तो तब पहुंचोगे जब मैं पहुंचने दूंगा।'

मैंने एकदम घूमकर देखा। वह मलखान था, जिसने मालती के सिर के साथ अपनी पिस्तौल सटाई हुई थी।

'तुम यहां क्या कर रहे हो?'

'अपने हीरों को तलाश कर रहा हूं।' मलखान बोला, फिर उसने पिस्तौल की नाल का दबाव मालती की गरदन पर डालते हुए कहा—'गाड़ी आगे बढ़ाओ लड़की। अगर कहीं चीखने की कोशिश की तो समझ लेना कि एक गोली में काम तमाम हो जायेगा।'

मालती ने कार स्टार्ट की।

'आखिर तुम हमें ले कहां जा रहे हो?'

मैंने पूछा तो मलखान ने एकदम डपटकर कहा—'सीधे होकर बैठो। अगर ज्यादा चालाक बनने की कोशिश की तो समझ लो कि यह लड़की जिन्दा नहीं बचेगी।'

'देखो मलखान, तुम बेकार ही…।'

'मैंने मलखान को समझाने की कोशिश की। किन्तु मेरी बात पूरी होने से पहले ही उसने मुझे घुड़ककर कहा—'तुमसे कहा नहीं कि सीधे होकर बैठो।'

लिहाजा मैं सीधा होकर बैठ गया और तभी मेरे सिर पर किसी वजनी और मजबूत चीज की चोट हुई। पीड़ा की एक

तेज लहर बिजली की तरह सिर से उतरकर सारे शरीर में दौड़ती चली गई। आंखों के आगे रंग-बिरंगे सितारे-से छिटके और मैं बेहोश हो गया।

होश आया तो पाया कि कार एक जंगल में खड़ी है और रिम-झिम बारिश हो रही थी। मेरे और मालती दोनों के हाथ-पैर मजबूत रस्सियों से बंधे हुए थे और हम दोनों ही कार की पिछली सीट पर पड़े हुए थे। मलखान पिस्तौल लिए अगली सीट पर बैठा हुआ था।

लगता था, उसकी जो भी योजना थी वह इस बे मौसम की तेज बारिश के कारण बिगड़ गई थी। क्योंकि होश में आने पर मैंने उसे कहते सुना—'इस साली बारिश को भी अभी होना था।'

'मौसम और किस्मत पर किसी का वश नहीं चलता मलखान।' मैंने कहा—'तुम्हें जिन हीरों की तलाश थी, उन्हें आज मैं दिन भर ढूंढता रहा। लेकिन अभी तक कोई पता नहीं चला कि वे हैं कहां हैं?'

'तुम मेरी आंखों में धूल नहीं झोंक सकते प्रिंस।' मलखान अपनी पिस्तौल मेरी ओर ताने हुए बोला—'मुझे मालूम है कि हीरे तो तुम डकार गए। अब तो इस लड़की को अपने जाल में फंसाने के लिए कोई चक्कर चला रखा है तुमने। लेकिन मुझे तुम्हारे इस चक्कर से कुछ नहीं लेना-देना। मुझे सिर्फ अपने हीरे चाहिए। अगर तुमने मेरे हीरे मुझे नहीं दिए तो मेरे जाने के बाद इस कार में दो लाशें पड़ी होंगी।'

'तुम अपनी हांकने के अलावा दूसरे की बात सुनने की कोशिश नहीं कर रहे।' मैं बोला—'मालती गवाह है इस बात की कि आज दिन भर हम दोनों ब्रेहन हाऊस में तुम्हारे हीरे तलाश करते रहे थे। लेकिन हीरे तो क्या बशेशर के कपड़े तक हमें नहीं मिले।'

'उसके कपड़ों में ही तो हीरे थे।'

'यानी?'

'जो ओवरकोट उसने पहना हुआ था, उसमें लगे प्लास्टिक के बटनों में ही हीरे छिपाकर लाए थे हम लोग सिंगापुर से।' मलखान बोला—'जगत ब्रेहन ने और तुमने उसके कपड़े उतरवाकर ब्रेहन के कपड़े पहनाये और फिर बशेशर को

कत्ल कर दिया ताकि उसका हिस्सा उसे न देना पड़े। बाद में सारा माल खुद हड़पने के लिहाज से तुमने जगत मोहन को भी खत्म कर दिया। सारा मामला शीशे की तरफ साफ है।

'कुछ साफ नहीं है। एक गलतफहमी तुम्हारे दिमाग में बैठ गई है और तुम उसे निकालने को तैयार नहीं। जरा एक बात तो सोचो कि बशेशर को अगर उन हीरों में हिस्सा ही बांटना होता तो वह तुम्हारे साथ गद्दारी करके हमारे साथ क्यों मिलता, जहां उसे तीन हिस्से बांटने पड़ते।'

मेरी बात से मलडान कुछ प्रभावित-सा हुआ।

'मान लो, मैं और जगत मोहन आपस में मिले हुए भी थे तो भी उन हीरों में हमारे हिस्से की कोई तुक नहीं बनती, क्योंकि तुम्हारे कहे मुताबिक सिंगापुर में शिकार खुद बशेशर ने देखा था और तुम्हें अपनी सहायता के लिए बुलाया था। वहां का काम तुम दोनों ने ही निपटाया और सफलतापूर्वक हीरे लेकर हिन्दुस्तान लौट आये। जहां बशेशर के दिल में बेई-मानी आ गई और उसने तुम्हें जहर देकर खत्म कर देना चाहा। मैं और जगत मोहन तो कहीं पिक्चर में ही नहीं आते।'

'मुझे जहर देने के बाद जो वह जगत मोहन की कार में बैठकर भागा?'

'भागा नहीं था। बल्कि उसने जगत मोहन की कार में लिफ्ट ली थी। हुआ यह कि जगत मोहन अपने किसी विदेशी मित्र को एयरपोर्ट छोड़कर लौट रहा था कि रास्ते में बशेशर ने उससे लिफ्ट मांगी। मगर हुआ यह कि बशेशर को दिल का दौरा पड़ा और वह जगत मोहन की कार में ही मर गया...।'

'और जगत मोहन उसकी खबर पुलिस में देने की बजाए लाश को अपने घर ले गया और वहां उसके कपड़े उतारकर उसने उसे अपने कपड़े पहना दिये?'

'बात बड़ी विचित्र और अविश्वसनीय-सी लगती है, लेकिन हुआ कुछ ऐसा ही है।' कहने को तो मैंने कह दिया, लेकिन अपनी ही बात पर मुझे स्वयं भी यकीन नहीं आ रहा था।

'तुम चाहते हो कि मैं इस बेतुकी बात पर यकीन कर लूं?'

'नहीं।' मैंने कहा—'लेकिन अभी तक जो जानकारी मुझे

मिली है वह यही है। मैं और मालती इससे ज्यादा फिलहाल कुछ नहीं जानते ?'

'यह लड़की कुछ जानती हो या न जानती हो, किन्तु तुम सब जानते हो और मैं यह जानता हूं कि तुम जगत ब्रेहन के सहयोगी हो और अकेले हीरे हजम करने के लिए तुमने यह कत्ल किये हैं।'

'न तुम कुछ जानते हो न मैं। वास्तविकता यह है कि मेरे ख्याल में मिसेज ब्रेहन के अलावा और कोई नहीं जानता कि सच्चाई क्या है। मगर वे हास्पिटल में बेहोश पड़ी हुई हैं। वे होश में आयें तो असलियत का पता लगे।

'असली बात तो सिर्फ यह है कि मुझे मेरे हीरे चहिए।'

'उनका पता तो मिसेज ब्रेहन के होश में आने के बाद ही लग पायेगा।'

मेरी बात ने मलखान को कुछ सोच में डाल दिया।

उसे और अधिक प्रभावित करने के उद्देश्य से मैं बोला—'जरा सोचो, अगर हीरे मेरे हाथ लग गये होते तो क्या यह जानने के बावजूद भी मैं क्या तुम्हें भक्तपुर में दिखाई देता कि तुम उन हीरों की तलाश में यहां पहुंच गये हो ?'

'इस मामले का साले का कहीं से सिर-पैर ही नजर नहीं आ रहा है।' मलखान उलझे हुए-से स्वर में बोला—'मुझे तुम्हारी वह मिसेज ब्रेहन ही सबसे ज्यादा बदमाश लगती है।'

'ऐसा नहीं हो सकता। मालती एकदम जोरदार शब्दों में विरोध करती हुई बोली—'फूफी'''।

लेकिन मैंने मालती की बांह दबाकर उसे चुप रहने का संकेत करते हुए मलखान से पूछा—'तुमने मिसेज ब्रेहन के विषय में यह बात किस आधार पर कही ?'

'वह अखबार में छपा लेख ही सारी बात को समझने के लिए सबसे बड़ा आधार है।' मलखान बोला—'बीस साल पहले एक औरत ने अपने पति को रास्ते से हटाने के लिए अपने आशिक से कत्ल करवाया और दो नकाबपोशों की कहानी गढ़ डाली। बिलकुल वही बात—अब बीस साल बाद तुम्हारी इस मिसेज ब्रेहन ने भी वही तरकीब आजमा डाली। कहीं तुम्हारी मिसेज ब्रेहन से आशनाई तो नहीं चल रही।'

'जबान को लगाम दो मलखान। उस औरत की उम्र मेरी मां के बराबर होगी।'

'इस मामले में उम्र नहीं देखी जाती बेटा। तुम एक फटी-चर चोर, मगर खूबसूरत और नौजवान हो। वह एक ढलती उम्र की बेहद ही मालदार औरत। जो उसे चाहिये वह तुम्हारे पास है और जो तुम्हें चाहिए वह उसके पास है। दोनों ने मिल-कर जगत ब्रेहन को ठिकाने लगा दिया हो तो कोई बड़ी बात नहीं।'

'एक बात तो माननी पड़ेगी मलखान कि तुम्हारी खोपड़ी चाहे अक्ल की बात न सोच सकती हो, किन्तु बेहूदा और बेमत-लब की बातें सोचने में बहुत तेज है। अभी तक तुम हीरों में उलझे हुए थे जिनसे मेरा कोई ताल्लुक नहीं। वहां से हटे तो एक बेबुनियाद और काल्पनिक कहानी में मुझे उलझाने लगे।'

'नहीं बेटा, इस बात का तो मुझे पूरा यकीन है कि तुम कोई बहुत गहरी और ऊंची चाल चलने में लगे हुए हो।' मलखान बोला—'आज सुबह से ही मैं तुम्हारी एक-एक हरकत देखता रहा हूं। गनेशी के यहां से निकलकर तुम सीधे ब्रेहन हाऊस पहुंचे। वहां से उस घायल बुढ़िया को लेकर इस छोकरी के साथ हॉस्पिटल पहुंचे। मुझे तो लगता है कि वह बुढ़िया अपने सौतेले बेटे के पकड़े जाने पर बहुत खुश हुई होगी मन-ही-मन, लेकिन दिखावे के लिए सीढ़ियों से लुढ़क गई होगी।'

'और मैंने जो उसे अपना खून दिया, वह भी एक दिखावा था?'

'नहीं भी हो सकता। मालदार माशूका की जान बचाने के लिये कौन आशिक है जो अपना खून न दे देगा, फिर तुम तो बहुत ही गहरा हाथ मारने जा रहे हो। एक बगल में वह माल-दार बुढ़िया और दूसरी में उसकी यह जवान भतीजी जिसके साथ तुम सुबह से ही लगे हुए हो छाया की तरह। इसके साथ ब्रेहन हाऊस में गये। कई घंटे वहां रहे। फिर पुलिस स्टेशन गए। वहां से फिर हॉस्पिटल। सब देखता रहा हूं मैं। तभी तो तुम दोनों को एक साथ पकड़कर इस जंगल में ले आया। इरादा तो यह था कि तुम्हारी इस जवान माशूका को पेड़ से बांधकर जरा ऊपर-नीचे चटकाऊंगा तो शायद तुम मेरे हीरे उगल दो, लेकिन इस साली बरसात ने सारा गुड़-गोबर करके

रख दिया, लेकिन इतना यकीन रखो कि मलखान अपने हीरे वसूल किये बिना तुम दोनों को नहीं छोड़ने वाला।'

वह अपने जोश में कहे जा रहा था, किन्तु उसे यह नहीं मालूम था कि उसने जिन बन्धनों में मुझे बांधा था, उनसे मैं अपने आपको आजाद करा चुका था।

जितनी देर तक हम दोनों बात करते रहे थे, उतनी देर तक मेरी उंगलियां अपने हाथों के बन्धनों को खोलने की कोशिश करती रही थीं। मलखान यूं खुद भी एक शातिर चोर था और मुझसे बड़ा चोर माना जाता था, इसलिये शायद वह अपने अहंकार में इस बात को भूल गया कि जिन उंगलियों के आगे बड़े-बड़े ताले खुलने से इंकार न कर पाए, उनके आगे रस्सियों के मामूली बन्धन क्या महत्व रखते हैं।

उसे बातों में उलझाए रखकर मैंने मालती की कलाई से चांदी की एक चूड़ी चटकाकर तोड़ ली थी और फिर चूड़ी के टुकड़े से अपनी कलाइयों के बन्धन धीरे-धीरे ढीले करके खोले। उसके बाद सावधानी के साथ बिना मलखान का ध्यान-भंग किये अपने पैरों के बन्धन भी खोल डाले।

फिर जैसे ही मैंने गर्व से बोलते हुए मलखान को असावधान पाया, वैसे ही मैंने उसके पिस्तौल वाले हाथ की कलाई से पकड़कर एक जोरदार झटका दिया। असावधान होने के कारण पिस्तौल पर भी उसकी पकड़ मजबूत नहीं थी, लिहाजा एक ही झटके में पिस्तौल निकलकर अगली सीट पर कहीं जा गिरी।

मेरे अप्रत्याशित आक्रमण से मलखान कुछ इस बुरी तरह बौखला गया था कि पहले तो उसकी समझ में यही नहीं आया कि क्या हो गया। जब तक वह कुछ सोचने-समझने लायक होता, तब तक मैंने एक जोरदार घूंसा उसकी नाक पर जड़ दिया था, किन्तु कार की सीमित जगह और बीच में अगली सीट की पुश्त होने के कारण घूंसा उतना जोरदार न पड़ा जितना कि मैं मारना चाहता था।

हम दोनों एक-दूसरे की गरदनें दबोचते हुए आपस में उलझ पड़े।

लेकिन मलखान मुझ पर भारी पड़ रहा था। क्योंकि उसे दबोचने के लिए मैं जो भी हरकत करता, उससे पिछली सीट

पर पड़ी मालती पर दबाव पड़ता और वह दर्द के मारे चीख उठती। लिहाजा उस पर से अपना दबाव हटाने के लिये मुझे दूसरी ओर भी सरकना पड़ता जिससे मलखान को मुझ पर हावी होने का मौका मिल जाता, लेकिन बीच में अगली सीट की मोटी पुश्त होने के कारण मलखान भी मुझ पर पूरी तरह हावी नहीं हो पा रहा था।

मैंने लक्ष्य किया कि इतनी-सी हाथापाई में मलखान की सांस कुछ फूलने-सी लगी थी। इसके साथ ही उसका जो रौब और दहशत अब तक मुझ पर थी, वह हट गई। मैंने एक जोरदार झटके के साथ उसे पीछे धकेलकर अपने आपको छुड़ाया। उसका सिर पीछे डैश बोर्ड से टकराया और असन्तुलित होकर वह सीट के आगे की खाली जगह में जा धंसा।

मुझे मौका मिला तो मैं अपने पास का दरवाजा खोलकर बाहर उतर गया बाहर निकलते ही आंधी का एक झोंका मुझसे टकराया और उसके साथ ही तेज बरसती बारिश ने मुझे भिगो दिया, किन्तु मैंने इस सबकी परवाह किये बिना फुर्ती के साथ अगली सीट का दरवाजा खोला।

तब तक मलखान सम्भलकर अपनी पिस्तौल ढूंढने में जुट गया था, जो कि न जाने कहां पड़ी थी। उसे बदहवासी की हालत में ढूंढते देखकर ही मैं समझ गया था कि पिस्तौल उसे नहीं मिली है। ढूंढ पाने का और कोई मौका दिये बिना ही मैंने मलखान को पकड़कर बाहर खींच लिया।

बारिश में भीगते ही मलखान ऐसे बौखलाया, जैसे वह पानी में न भीगा हो बल्कि तेज आग के अंगारों में झुलस गया हो। फिर भी उसने सम्हलकर मुझसे जूझने की कोशिश की, किन्तु अब मैं उस पर भारी पड़ रहा था।

दो-चार करारे हाथ पड़े तो मलखान के होश ठिकाने आ गये और वह मुझसे जान छुड़ाकर भागने की कोशिश करने लगा, फिर अचानक गीली जमीन पर जैसे ही पैर फिसला, वैसे ही मलखान को मौका मिला और वह वहां से भाग लिया।

पैर फिसलने के कारण मैं गिरा नहीं था, बल्कि थोड़ा-सा लड़खड़ाकर सम्हल गया था।

तब तक मलखान तेजी से एक ओर को भाग लिया था, किन्तु अधिक दूर न जा सका। एक जगह वह भी बुरी तरह

फिसला और धड़ाम से जमीन पर औंधे मुंह जा गिरा, फिर मैंने उसे उठने का मौका नहीं दिया और दौड़कर उसकी कमर पर सवार हो गया और उसका दायां हाथ पीठ की ओर मरोड़कर एक जोरदार झटका दिया।

कह नहीं सकता, मलखान की हड्डियां कमजोर थीं या झटका कुछ ज्यादा जोर का लग गया था कि चटाक की एक जोरदार आवाज हुई जो उसके गले से निकली भयानक चीख के बीच दब-सी गई। उसके साथ ही उसका सारा शरीर लुंज-पुंज होकर एकदम ऐसा ढीला-ढाला पड़ गया कि एकबारगी तो मुझे लगा कि कहीं वह मर तो नहीं गया।

किन्तु जब मैंने उसे अच्छी तरह से देखा-भाला तो पाया कि वह केवल बेहोश हुआ है।

बेहोश आदमी के साथ क्या जोर-आजमाइश करता? लिहाजा मैं उसे वहीं छोड़कर कार के निकट लौटा। फिर मालती के बंधन खोले।

मैं न केवल पूरी तरह भीग चुका था बल्कि बुरी तरह कीचड़ से भी लथपथ था। लिहाजा मालती के बन्धन खोलने के चक्कर में पिछली सीट बुरी तरह खराब हो गई थी।

'वह कहां है?' बन्धन खुलते ही मालती ने पूछा—'भाग गया क्या?'

'वहां पड़ा है बेहोश।' मैंने लापरवाही से संकेत करते हुए कहा—'अब तुम जल्दी से अगली सीट पर पहुंचो और कार बस्ती की ओर ले चलो पता नहीं इस जंगल के अन्धेरे में रास्ता भी मिलेगा या नहीं।'

'यहां तक कार चलाकर मैं ही लाई थी। इसलिए रास्ते का अनुमान है मुझे।'

'बस तो फिर जल्दी से कार स्टार्ट करो और चलो।' मैंने सिगरेट सुलगाने के इरादे से पैकेट निकाला, किन्तु बारिश में भीग जाने के कारण सारी सिगरेटों की ऐसी लुगदी-सी बन गई थी कि उनमें से कोई भी सुलगाने लायक नहीं रही थी।

मालती कार के भीतर से ही अगली सीट पर पहुंच चुकी थी और कार स्टार्ट करते हुए बोली—'क्या उसे इस बारिश में यहीं छोड़ चलेंगे?'

'तो और क्या करें?'

'यह तो अन्याय होगा उस बेचारे के साथ।'

'कैसी बातें कर रही हो। वह जो हम दोनों को खत्म कर देना चाहता था वह न्याय था। हम उसे जिन्दा छोड़कर जा रहे हैं तो यह अन्याय है।'

'वह किसी बहुत बड़ी गलतफहमी का शिकार है, अब अगर उसकी गलतफहमी दूर हो जायेगी तो शायद वह दुश्मनी का रास्ता छोड़ दे।'

मैं शायद मलखान को बारिश में पड़ा छोड़कर चल देता। किन्तु मालती उसे इस तरह छोड़कर जाने के लिए तैयार न हुई।

उसके जोर देने पर मैं उस जगह लौटा जहां मलखान पड़ा था। शायद झमाझम बरसती बारिश उसे फिर होश में ले आई थी, क्योंकि जब मैं वहां पहुंचा तो वह पीड़ा से कराहता हुआ तड़प रहा था।

तड़पते और कराहते मलखान को किसी तरह से उठाकर मैंने कार की पिछली सीट पर डाला और फिर स्वयं भी उसके निकट बैठ गया।

▭ ▭

मलखान को हॉस्पिटल नहीं ले जाया जा सकता था, क्योंकि वहां कई तरह के सवाल पूछे जा सकते थे। मालती ने उसे रेस्ट हाऊस ले चलने का इशारा जाहिर किया, किन्तु उसके लिए भी मैंने मना कर दिया। क्योंकि सवाल-जवाब पूछे जाने की सम्भावना से वहां भी नहीं बचा जा सकता था।

लिहाजा उसे गनेशी के घर ही ले आये। गनेशी उस समय कल की बोतल में बचा माल डकार रहा था। मालती को साथ देखकर उसने सबसे पहले अपना गिलास ही चारपाई के नीचे छिपाया और फिर बोला—'अबे यह क्या भूत-सी हालत बना रखी है तुमने अपनी। यह साथ में कौन है?'

'यह मालती जी हैं।'

नमस्ते के आदान-प्रदान के बाद वह बोला—'मैं इनके नहीं, इस भूत के बारे में पूछ रहा हूं जिसे तुम पकड़कर लाये हो?'

उसका संकेत मलखान की ओर था जो पहचान में नहीं आ रहा था। वह कीचड़ से इस बुरी तरह लथपथ था कि बिलकुल

भूत सरीखा दिखाई दे रहा था।

मैं जवाब देने की बजाए पहले कराहते हुए मलखान को बाथरूम में ले गया जहां उसके कपड़े उतारकर उसे नहलाया और फिर एक चादर में लपेटकर उसे लोहे के फोल्डिंग पलंग पर लिटा दिया जिस पर तब तक मालती ने एक बिस्तरा बिछा दिया था।

'यह तो मलखान दादा है।' उसे पहचानकर गनेशी बोला।

'हां।'

'मैं तो सोच रहा था कि यह यहां आकर ऊधम मचाएगा, किन्तु लगता है मामला बाहर ही निबट गया। वैसे यह तुम्हें मिला कहां?'

'सब-कुछ बताता हूं जरा कपड़े बदल लूं।'

बाथरूम से नहाने और कपड़े बदलने के बाद जब मैं बाहर निकला तो मालती चाय तैयार कर चुकी थी।

मैंने नये सिगरेट के पैकेट में से एक सिगरेट सुलगाई और चाय के साथ उसके कश लेते हुए सारा किस्सा सुनाया।

सुनने के बाद गनेशी बोला—'मगर तुम इसे यहां क्यों ले आए?'

'मालती की सलाह मुझे सही लगी थी कि बेकार में दुश्मनी बढ़ाने से कोई लाभ नहीं है। मलखान को गलतफहमी हो गई है कि हीरे मेरे पास हैं। हो सकता है कि अब उसकी यह गलत-फहमी दूर हो जाये।'

उसके बाद मैंने बाम लेकर कराहते हुए मलखान के उस कंधे की जिसकी कि हड्डी चटक गई थी—मालिश करते हुए उसे सारा किस्सा बताया और फिर कहा—'अब तो तुम्हारी गलत-फहमी दूर हो जानी चाहिये मलखान दादा।'

'वह तो दूर हो जाएगी।' मलखान कराहता हुआ बोला, 'लेकिन पहले एक पैग व्हिस्की दो।'

'लेकिन तुमने तो व्हिस्की पीनी छोड़ दी है।'

'छोड़ तो दी थी, लेकिन दर्द बहुत हो रहा है। शायद उसी से कुछ चैन पड़े।'

'माल तो है ही नहीं यहां।' गनेशी बोला—'जो जरा-सा है उसमें मेरा भी गुजारा होना मुश्किल है।'

'अब इस आंधी-पानी में माल लेने कौन जाएगा ?'

'तुम्हीं जाओगे और कौन जायेगा।' गनेशी बोला—'मैं लंगड़ा हूं और मलखान लूला। इसलिये जाना तो तुम्हें ही पड़ेगा। साथ में कुछ खाना-वाना भी ले आना।'

'खाना मैं बना दूंगी।' मालती बोली।

'तुम कहां हम नशेबाजों में अपना वक्त खराब करोगी।' मैंने कहा—'तुम्हें घर जाना चाहिये। सुलोचना मौसी तुम्हारा इन्तजार कर रही होंगी।'

बात मालती की समझ में आ गई, किन्तु जाने से पहले वह मुझे बाजार तक ले जाकर वापिस छोड़ गई।

बाजार से मैं दो बोतल व्हिस्की और खाने के साथ-साथ रुई का बड़ा बंडल और कुछ पट्टियों के साथ-साथ नींद की गोलियां भी लेकर आया ताकि अगर रात में मलखान ने दर्द के मारे चीख-पुकार मचाई तो कम-से-कम उसे नींद की गोली देकर सुला तो दिया जाये।

मुझे वापस गनेशी के मकान पर छोड़कर जाने से पहले मालती ने सिर्फ इतना ही कहा—'तुम जरा थोड़ी पीना।'

▭ ▭

अगली सुबह जब उठा तो दिन काफी चढ़ आया था। मलखान और गनेशी अभी भी मुर्दों से बाजी लगाकर सोये हुए थे। उन दोनों ने मेरे मुकाबले पी भी बहुत ज्यादा थी। खासतौर से मलखान ने। वह अकेला ही पौनी से ज्यादा बोतल डकार गया था। मगर उसका फायदा भी हुआ। पीने के बाद जो वह चित्त हुआ तो फिर उसके गले से कोई कराह वगैरह नहीं निकली।

मैंने उठकर अपने लिए चाय बनाई और दरवाजे के पास पड़े अखबार को उठाकर पढ़ने लगा। पहले ही पृष्ठ पर रमला की फोटो छपी हुई थी—इस सूचना के साथ कि इस लड़की की एक कत्ल के बारे में पुलिस को तलाश है। जिस व्यक्ति को यह लड़की दिखाई दे, वह तुरन्त पुलिस को सूचित करे।

उसके साथ ही जय की गिरफ्तारी की खबर भी छपी हुई थी जिसे मैंने सरसरी नजर से देख लिया, क्योंकि इस मामले में अखबार से ज्यादा जानकारी तो मेरे पास ही थी। खबर के अन्त में यह लाइन भी छपी हुई थी—हालांकि पुलिस ने अपने

पिता जगत श्रेहन की हत्या के अपराध में जय को गिरफ्तार कर लिया है. लेकिन यह भी हो सकता है कि जय किसी को बचाने के लिए यह अपराध अपने ऊपर ले रहा हो।

दिनचर्या से निवृत होकर नहाने के बाद मैं कपड़े पहन रहा था कि गनेशी जागा। मलखान अभी भी बेसुध पड़ा हुआ था। हालांकि साढ़े दस बजने वाले थे।

'तुम तैयार होकर किधर चल दिए ?' गनेशी एक सिगरेट सुलगाता हुआ बोला।

'श्रेहन हाऊस।'

'लगता है बेटा, अब तुम चन्द्रहार की बजाए किसी और चीज पर हाथ मारने की कोशिश में हो ?'

'चुप बे।'

'लेकिन इतना सोच लेना कि एक मामूली चोर होकर आसमान को छूने की कोशिश कर रहे हो। कहीं अंगूर खट्टे न साबित हों।'

गनेशी की बात ने दिल की उमंग को बुझा दिया था।

बाहर निकला तो आंधी और बारिश दोनों ही गायब थे। नीला आसमान साफ दिखाई दे रहा था और सुनहरी धूप चारों ओर बिखरी हुई थी।

मौसम बेहद ही खुशगवार और सुहाना था।

'तुम ठीक वक्त पर आये।' जब मैं श्रेहन हाऊस पहुंचा तो मालती कहीं जाने के लिए तैयार थी।

'कहीं जा रही थीं तुम ?'

'हां, हास्पिटल जा रही थी फूफी को देखने के लिए, लेकिन...।'

'लेकिन क्या ?' मैंने एकदम चौंककर पूछा—'कहीं मिसेज श्रेहन की तबियत और तो नहीं बिगड़ गई ?'

'नहीं, वे तो अब बिलकुल ठीक हैं।'

'फिर लेकिन क्या ?'

'अभी-अभी पुलिस का फोन आया है कि रमला मिल गई है ?'

'क्या !' मैं और भी अधिक चौंककर बोला—'पुलिस ने तो कमाल ही कर दिया। इतनी जल्दी से पकड़ लिया ?'

'पकड़ा नहीं है उसे ?'

'तो ?'

'उसने खुद ही पुलिस स्टेशन में आकर अपने आपको पुलिस के हवाले किया है ?'

यह जानकारी मुझे और भी अधिक विस्मित करने वाली लगी थी।

'तुम मुझे पूरा क़िस्सा बताओ ?' मैंने कहा।

'पूरा किस्सा मालूम करने के लिए ही तो मैं पुलिस स्टेशन जा रही थी कि तुम आ गए।

हम दोनों कार में सवार होकर पुलिस स्टेशन की ओर चल दिये। मैं इस सारे किस्से के आश्चर्यजनक मोड़ से भ्रमित-सा हो गया था कि वह लड़की जिसने जगत त्रेहन की हत्या की है, वह अपने आपको खुद-ब-खुद पुलिस के सुपुर्द क्यों कर देगी। पुलिस द्वारा पकड़ा जाना एक और बात होती, किन्तु अपने आपको स्वयं पुलिस के सुपुर्द कर देना···समझ से बाहर थी यह बात।

इस किस्से में शुरू से ही आश्चर्यजनक घटनाक्रम घट रहा था। रहस्य जानने की उत्सुकता होने के बावजूद भी मैंने अभी तक समस्त घटनाओं के बारे में सिलसिलेबार ढंग से नहीं सोचा था।

रमला द्वारा स्वयं अपने आपको पुलिस के सुपुर्द कर देने की बात ने मुझे सब-कुछ सिलसिलेबार ढंग से सोचने के लिए दिवश कर दिया था।

मैं चन्द्रहार की चोरी के चक्कर में आधी रात को त्रेहन हाऊस का निरीक्षण करने के लिए पहुंचा। तभी मैंने चहार दीवारी फांदकर जय को एक लड़की के पीछे भागते देखा जिसके बारे में बाद में जय ने खुद स्वीकार किया कि वह रमला थी। मौका ठीक न समझकर वह लौट आया।

उसके बाद सुबह चार बजे मैं फिर त्रेहन हाऊस पहुंचा तो वहां मुझे जगत त्रेहन को लाश पड़ी दिखाई दी। कहीं हत्या का आरोप मेरे मत्थे ही न मढ़ जाये, इसलिए मैं तुरन्त वहां से भाग लिया, किन्तु चहार दीवारी पार करते ही कर्नल चोपड़ा की टार्च की रोशनी मुझ पर पड़ी और मैं अपना चेहरा छिपाता हुआ वहां से भाग लिया···।

सारी घटना सिलसिलेबार किसी फिल्म की तरह से मेरे

मानस पटल पर उभरने लगी थी कि तभी मालती ने टहोका देकर मुझे चौंकाया।

'क्या सोचने लगे थे ?' वह पूछ रही थी।

'इस किस्से के बारे में ही सोच रहा था।' मैंने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा—'सब-कुछ इतना उलझा हुआ है कि सिर-पैर कुछ भी समझ में नहीं आ रहा।'

'अब रमला पकड़ी गई है।' वह बोली—'अब सारा रहस्य खुल जायेगा।'

'उसने तो इसे और भी उलझा दिया है।'

'वह कैसे ?'

'तुम्हीं ने तो बताया था कि पुलिस की सूचनानुसार वह पकड़ी नहीं गई—बल्कि उसने स्वयं ही पुलिस स्टेशन पहुंचकर आत्मसमर्पण किया है।'

'शायद अखबार में अपनी फोटो छपी देखकर उसे इस बात का अहसास हो गया था कि अब वह ज्यादा देर न बच सकेगी, इसलिए उसने अपने आपको पुलिस के हवाले कर दिया होगा।'

'शायद।'

पुलिस स्टेशन पहुंचे तो इन्स्पेक्टर गजराज सिंह ने हमारा स्वागत किया। रमला के मिल जाने से वह बेहद प्रसन्न था। यह उसके चेहरे को ही देखकर जाना जा सकता था। मुझसे भी उसका व्यवहार पहले जैसा रुक्ष और उपेक्षापूर्ण न था।

'तुम्हारी तरकीब कामयाब रही।' हमें अपने ऑफिस के कमरे में कुर्सियों पर बैठने का संकेत करते हुए वह अपनी कुर्सी पर बैठने के बाद बोला—'अखबार में उसका फोटो छाप देना सही रहा। उसी से डरकर उसने अपने आपको पुलिस के हवाले कर दिया।'

'इसी पुलिस स्टेशन में आई थी वह या महानगर के किसी पुलिस स्टेशन में उसने अपने आपको पेश किया था ?' मैंने पूछा।

'यहीं आई थी वह।' इन्स्पेक्टर ने कहा—'मैं उस समय अपने ऑफिस में पहुंचा ही था, जब वह बुर्का पहने हुए यहां आई और बोली कि वह रमला है। उसने अपना नकाब हटाया तो पहचानने में कोई दिक्कत नहीं हुई कि वही वह फोटो वाली लड़की थी।'

'कोई बयान दिया उसने ?'

'हां, इकबालिया बयान देकर उसने यह भी स्वीकार कर लिया है कि उसने ही जगत त्रेहन की हत्या की है।'

इन्स्पेक्टर ने जो कुछ बताया उससे यह निष्कर्ष निकलता था कि जय की अपेक्षा से तंग आकर वह जगत त्रेहन से मिलने के लिये भक्तपुर आई। दिन-भर निश्चय-अनिश्चय के झूले में झूलते रहने के बाद आखिर वह सात बजे की गाड़ी द्वारा भक्तपुर पहुंची। यहां भी वह काफी देर मिलने का साहस संजोती रही और फिर नौ सवा-नौ बजे के करीब त्रेहन हाऊस पहुंच कर जगत त्रेहन से मिली। इस बात की उम्मीद तो पहले भी नहीं थी कि वहां पहुंचते ही उसका भव्य स्वागत किया जाएगा, किन्तु जगत त्रेहन ने जैसा उपेक्षापूर्ण और अपमानजनक व्यवहार उससे किया, उसकी भी उसे उम्मीद नहीं थी। उसकी बात पूरी तरह से सुने बिना ही जगत त्रेहन ने उसे अपमानित करके घर से निकाल दिया।

महानगर के लिए रात एक बजे से पहले कोई गाड़ी नहीं थी। नौ बजे के बाद कोई बस भी नहीं जाती थी, लिहाजा उसे बाकी का वक्त स्टेशन पर ही काटना पड़ा। फिर जय उसे गाड़ी से उतरता नजर आया तो वह उसके पीछे भागी। किन्तु जय उससे पहले ही स्कूटर में बैठकर रवाना हो गया था। उसने रिक्शे में बैठकर उसका पीछा किया किन्तु असफल रहा।

जब वह त्रेहन हाऊस के सामने पहुंची तो भीतर अन्धेरा था, किन्तु उसे यकीन था कि जय भीतर है। लिहाजा वह चहार दीवारी फांदकर अन्दर पहुंची। किन्तु उसे चोर समझ कर जगत त्रेहन ने चाकू लेकर उसका पीछा किया। वह बचकर भाग निकलना चाहती थी कि जगत त्रेहन ने उसे पकड़ लिया।

वह इतनी आतंकित हो गई थी कि फिर उसे नहीं मालूम कि क्या हुआ। बस इतना याद है कि उसने जगत त्रेहन के बन्धनों से निकलने की प्राणपण से चेष्टा की थी। उस प्रयत्न में चाकू कब, कैसे जगत त्रेहन की गरदन में आ धंसा, उसे नहीं मालूम।

मालूम है तो बस इतना कि वह घबराई-सी खड़ी थी और गरदन में चाकू धंसे जगत त्रेहन की लाश उसके कदमों के पास

पड़ी थी, अभी वह पूरी तरह से समझ भी नहीं पाई थी कि यह सब क्या हो गया कि तभी उसे किसी की आहट सुनाई दी और वह हत्या के अपराध में पकड़े जाने के भय से भाग ली।

कोई उसका पीछा करता रहा और वह उससे बचने की कोशिश में तेज-से-तेज दौड़ने की कोशिश करती गई, लेकिन फिर भी पकड़ी गई। पकड़े जाने के बाद ही उसे मालूम हुआ कि वह जय था।

उसने जय को निर्दोष होने का विश्वास दिलाया और यह भी कि अगर वह तुरन्त ही उसके साथ महानगर न लौट चला तो पुलिस उसे अपने पिता का हत्यारा समझ लेगी। ज्यादा सोचने-समझने का वक्त नहीं था। क्योंकि एक बजे वाली गाड़ी आने ही वाली थी।

वे दोनों वापिस महानगर लौट गये।

अखबारों में जब उसने जगत मोहन की हत्या का समाचार पढ़ा तो यह जानकर सन्तोष की सांस ली कि उस पर किसी को सन्देह नहीं है। किन्तु आज जब अखबार में अपनी फोटो छपी देखी और जय की गिरफ्तारी का समाचार पढ़ा तो एक साथ दो बातें उसके दिमाग में आईं कि वह ज्यादा देर तक कानून की गिरफ्त से बची न रह सकेगी और उसका अपराध व्यर्थ ही जय के सिर मढ़ा जा रहा है। बस अपने आपको पुलिस के हवाले कर देना ही उचित समझा और बुर्का ओढ़कर यहां आ गई।

'मुझे तो पहले ही शक था कि यह रमला ही असली कातिल निकलेगी।' कथा सुनने के बाद इन्स्पेक्टर ने कहा—'आखिर मेरा शक सही निकला।'

'लेकिन वह अधखुदी कब्र-सी और लाश के पास मिला तेजाब का वह कैन ?' मैं बोला—'इन चीजों के वहां होने का क्या मतलब हुआ ?'

'जिसे हम लोग नई कब्र समझे हुए हैं, वह दरअसल कब्र नहीं थी।' इन्स्पेक्टर बोला—'हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि माली छुट्टी पर गया हुआ था। हो सकता है, बाद में जगत मोहन को कोई नए किस्म की पौध लगाने का ख्याल आया हो और उसके लिये वह जमीन तैयार कर रहा हो।'

'आधी रात के वक्त ?'

'यह काम तो उसने दिन में किया होगा और थक जाने के बाद फावड़े इत्यादि वहीं पड़े रहने दिए होंगे।'

'और वह तेजाब का कैन?'

'हां, उसकी कोई तुक समझ में नहीं आ रही।' इन्स्पेक्टर ने निश्चिन्त स्वर में कहा—'लेकिन जगत मोहन जिन्दा होता तो शायद उसकी वजह बता सकता। मगर रमला के इकबालिया बयान से यह रहस्य तो खुल गया कि जगत मोहन की हत्या उसने ही की है, बाकी के सूत्र उलझे हुए रह गए हैं, वे भी खुल जायेंगे।'

मैं कुछ और पूछने जा रहा था कि तभी वहां कर्नल चोपड़ा पहुंच गया। आते ही कागजों का एक पुलिन्दा-सा इन्स्पेक्टर की मेज पर रखते हुए कहा—'यह जय की जमानत के कागजात हैं इन्स्पेक्टर।'

'अब इसकी कोई जरूरत नहीं कर्नल साहब। मिस्टर जय को छोड़ दिया गया है।'

'छोड़ दिया गया है, थैंक गॉड।' कर्नल चोपड़ा सन्तोष की एक लम्बी सांस के साथ बोला—'मगर कैसे?'

'असली अपराधी पकड़ा गया है।'

'पकड़ा गया? कौन है असली अपराधी?'

'वही रमला, जिसकी हमें तलाश थी।'

'वही, जिसका प्रेम-पत्र मोहन की जेब से निकला था?'

'जी हां वही। लेकिन वह प्रेम-पत्र बाप को नहीं बेटे को लिखा गया था।'

पूरा किस्सा सुनने के बाद कर्नल बोला—'लेकिन पहली बार जय ने यह क्यों कहा था कि वह रमला नाम की किसी लड़की को नहीं जानता।'

'क्योंकि जय हत्या की रात अपने भक्तपुर में मौजूद होने की बात को गोल कर जाना चाहता था।' इन्स्पेक्टर बोला—'और यह तो आप जानते हैं कि आदमी को एक झूठ छिपाने के लिए और कई झूठ बोलने पड़ जाते हैं। वही जय के साथ भी हुआ। लेकिन हम पुलिस वालों का काम भी झूठ के ढेर में से सच्चाई निकालने का ही है। मैंने स्टेशन पर पूछताछ की और जय का झूठ खुल गया?'

'लेकिन जय इस वक्त है कहां?' मालती ने पूछा।

'शायद वह यहां से हास्पिटल गया है मिसेज त्रेहन को देखने के लिये।'

'हमें भी तो हास्पिटल जाना है।' मालती ने मुझसे कहा। मैं उसका संकेत समझकर उठ खड़ा हुआ।

कर्नल चोपड़ा भी हमारे साथ बाहर आया।

'आप भी हमारे साथ हास्पिटल चलेंगे अंकल ?' बाहर आकर मालती ने पूछा।

'नहीं बेटे, मैं तो अब घर जाऊंगा। कल दिन-भर जमानत के चक्कर में दौड़ता फिरा। चाहता था कि एक रात भी जय को हवालात में न रहना पड़े। मगर उस बे-मौसम की बारिश ने सारा काम बिगाड़ दिया। आज सुबह सारे कागजात तैयार करवाकर दौड़ा चला आया। मेरी मेहनत चाहे किसी काम न आई हो किन्तु इस बात की खुशी है कि जय के सिर से हत्या का आरोप हट गया। और नौजवान!' कर्नल ने मेरी ओर उन्मुख होकर कहा, 'अब जब असली कातिल पकड़ा है गया तो जाहिर है कि तुम भी बेकसूर हो। अब तो बता दो कि उस वक्त चहार दीवारी से तुम्हीं कूदे थे न ?'

'नहीं कर्नल साहब, वह कोई और ही था।'

'शायद···शायद···।' कर्नल चोपड़ा ने कहा और फिर गरदन हिलाता हुआ वहां से चल दिया।

▭ ▭

'क्या ख्याल है, एक बार रमला से भी मिल लिया जाए ?' कर्नल के जाने के बाद अचानक ही मेरे दिमाग में एक विचार आया और मैंने मालती से कहा।

'क्या करोगे उससे मिलकर ?' मालती ने पूछा।

'जिसे बचाने के लिए जय ने झूठ बोला। हत्या का झूठा अपराध अपने सिर ले लिया। उस लड़की को एक बार देखना नहीं चाहोगी।'

मालती तैयार हो गई।

जब मैंने इन्स्पेक्टर से इजाजत चाही तो उसने भी वही सवाल किया जो मालती ने किया था—'उससे मिलकर क्या करोगे ?'

'जनाब! जाने-अनजाने ही इस केस में मैं उलझ गया और अगर आपने अपनी नेकी और शराफत का सबूत देते हुए मेरी

बात पर यकीन न किया होता तो मेरा पुलिन्दा बंध गया था। उस लड़की से दो बात कर लेने की ख्वाहिश है, जिसका जुर्म सबसे पहले मेरे गले का ही फंदा बनने वाला था।'

मेरी मक्खनबाजी से खुश होते हुए इन्स्पेक्टर ने कहा—'मैं देख रहा हूं कि तुमने इस मामले में पुलिस की पूरी मदद करने की कोशिश की है। तुम उससे मिल सकते हो। अगर कोई खास बात मालूम हो तो मुझे बताना।'

हम दोनों को उस कोठरी में पहुंचा दिया गया जिसमें रमला को कैद किया गया था। इसी कोठरी में पहले जय बन्द था।

रमला एक साधारण से रूप-रंग और नाक-नक्श की लड़की थी। शिल्पा के मुकाबले में जय उसे भाव नहीं देता था तो कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। शिल्पा के मुकाबले में वह कहीं भी न ठहरती थी।

उसने हमें अपरिचित दृष्टि से देखा।

जिस पर मैंने मालती की ओर संकेत करते हुए कहा—'यह जय की ममेरी बहन हैं मिस मालती।'

'कहिए ?' सपाट स्वर में उसने कहा।

मालती ने मेरी ओर देखा और मैं बोला—'यह आपका धन्यवाद करने आई हैं रमला जी। अगर आपने पुलिस के सामने स्वयं को प्रस्तुत न कर दिया होता तो न जाने जय को कब तक हवालात की हवा खानी पड़ती। यह भी हो सकता था कि वह अपने को बेकसूर साबित न कर पाता और आखिर में फांसी के फन्दे तक पहुंच ही जाता।'

'नहीं, वे निर्दोष हैं। हत्या मैंने की है।'

'अच्छा यह बताइए कि जब मिस्टर जगत मोहन ने आपको चोर समझकर पकड़ना चाहा, उस समय वे कहां थे ?'

'मतलब ?'

मैंने अपना सवाल फिर दोहराया।

'आप यह सवाल क्यों पूछ रहे हैं ?'

'पूरी स्थिति को समझ लेना चाहता हूं मैं।'

'जब मैंने हत्या के अपराध को स्वीकार कर लिया है तो फिर इस तरह के किसी भी सवाल की कहीं कोई जरूरत नहीं रह जाती। हत्या मैंने की है और मैं उसकी सजा भुगतने के

लिए तैयार हूं।'

'फिर भी…।'

'इसके बाद किसी फिर भी की कहीं कोई गुंजाइश नहीं रह जाती।'

मैंने उससे बातचीत करने की बहुत कोशिश की। किन्तु वह मेरी किसी भी बात का कोई जवाब देने के लिए तैयार नहीं हुई। आखिर में तो उसने एक ऐसी चुप्पी अख्तियार कर ली जैसे उसके मुंह में जुबान ही न हो।

निराश होकर मालती के साथ मुझे लौटना पड़ा।

'कोई नई बात मालूम हुई? हमें लौटता देख इन्स्पेक्टर ने पूछा।

'वह तो बात करने को भी तैयार नहीं है।'

'जब अपराध ही स्वीकार कर लिया तो बात करने के लिए रह ही क्या जाता है।' इन्स्पेक्टर ने लापरवाही से कहा—'हां, ब्रेहन हाऊस से जो दूसरी लाश बरामद हुई थी उसकी पोस्ट-मार्टम रिपोर्ट अभी-अभी आई है। उसके मुताबिक उस आदमी की मौत दिल का दौरा पड़ने से हुई है। लेकिन यह बात समझ में नहीं आती कि कोई भी आदमी किसी मुर्दे की छाती में चाकू घोंपकर उसे कत्ल क्यों करना चाहेगा?'

मैंने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। न यही पूछा कि बशेशर की शिनाख्त भी हो गई है या नहीं।

▭ ▭

'कहिए वकील साहब, कैसी मुंह की खाई?' पुलिस स्टेशन से जब हम कार में सवार होकर हास्पिटल की ओर चले तो मालती बोली।

'मुझे लगता है मालती—कि इस लड़की ने कत्ल नहीं किया।'

'अगर कत्ल नहीं किया तो पुलिस के आगे इकबालिया बयान क्यों दिया?'

'उसकी कोई-न-कोई वजह जरूर है।'

'और वह वजह क्या हो सकती है?'

'यह मैं नहीं जानता। मैंने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा—'कोई मजबूरी भी हो सकती है। या फिर…।'

'या फिर क्या?'

'इस बारे में मैं निश्चित नहीं हूं, लेकिन हो सकता है कि यह लड़की जय से बेहद प्यार करती हो और उसे निर्दोष साबित करने के लिए उसने वह अपराध अपने ऊपर ले लिया हो।'

'अगर रमला ने हत्या नहीं कि तो फिर हत्या किसने की है, मैंने?'

'शायद···।'

और मेरी बात पूरी होने से पहले ही मालती ने कार के इस जोर के साथ ब्रेक दबाए कि मेरा मुंह सामने के हिस्से से टकराने से बचा।

'क्या तुम समझते हो कि हत्या मैंने की है?' वह लगभग चीखती हुई-सी बोली।

'मैं यह नहीं कहने जा रहा था। पूरी बात तो तुम सुनती नहीं। मैं यह कहने जा रहा था कि शायद मिसेज ब्रेहन ने की हो।'

'फूफी के बारे में मैं ऐसा सोच भी नहीं सकती।'

'जिन्दगी अक्सर ऐसे मजाक करती है मालती कि जो हम सोचते हैं वह होता नहीं और जो हम सोच नहीं सकते, वह हो जाता है।' मैं बोला—'सारे तथ्य मिसेज ब्रेहन की ओर ही संकेत कर रहे हैं। उन्होंने लाश तलघर से बाहर रखवाने में तुमसे सहायता ली लेकिन पूरा सच तुम्हें भी नहीं बताया।'

'उन्होंने मुझे बताया था कि उस आदमी की मृत्यु दिल के दौरे से हुई है और अभी-अभी तुम्हारे सामने उस पुलिस इन्स्पेक्टर ने बताया है कि पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के मुताबिक उस आदमी की मृत्यु दिल का दौरा पड़ने से ही हुई। फिर भला फूफी ने झूठ कहां बोला।'

'और अगली बात पर तुम कोई ध्यान नहीं दे रहीं कि उस आदमी की छाती में चाकू किसने घोंपा और क्यों घोंपा?'

'यह मुझे नहीं मालूम।' मालती ने अपनी गरदन झटककर कहा—'मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि फूफी कभी कोई गलत काम नहीं कर सकतीं।'

'एक लाश को तलघर में छिपाए रखना और पुलिस को उसकी सूचना देने की बजाय चुपचाप उसे वहां से निकालकर बाहर डाल देना क्या तुम्हारी नजर में सही काम है?'

कुछ क्षण के लिए तो निरुत्तर-सी हो गई मालती।

फिर एकदम रोषपूर्ण स्वर में बोली—'तुम साबित करना चाहते हो कि रमजा ने हत्या नहीं की, जबकि उसने खुद अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। आखिर क्या लगती हैं वह तुम्हारी?'

'वह मेरी कुछ नहीं लगती और न मैं कुछ साबित करना चाहता हूं। मैं सिर्फ मामले की तह तक पहुंचना चाहता हूं।'

'क्यों? क्यों पहुंचना चाहते हो तुम मामले की तह तक?'

मालती की इस बात का कोई जवाब मेरे पास नहीं था। न मैंने दिया।

'बुरा मान गए?'

'तुम शायद भूल गई कि मैं एक पेशेवर चोर हूं, जिसे बातों का बुरा मानने की आदत नहीं होती।'

'मेरा इरादा तुम्हारा अपमान करने का नहीं था।'

'मेरा अपमान हुआ भी नहीं है।'

'तुम शायद नहीं जानते प्रिंस कि मैं तुम्हारा कितना आदर करती हूं।' मालती कार को आगे बढ़ाते हुई बोली।

'किसलिए?'

'उस समय हास्पिटल में जब फूफी को खून की जरूरत थी तो तुमने उनकी जान बचाने के लिए बिना हिचक अपना खून देकर...।'

'वह मेरा इन्सानी फर्ज था।'

'बशेशर की लाश के बारे में तुमने पुलिस को कुछ न बता कर जो अहसान हम पर किया है...।'

'तुमने मुझ पर विश्वास करके वह सब मुझे बताया था और मैं तुम्हारा विश्वास नहीं तोड़ना चाहता।' मैं बोला—'वैसे भी एक पेशेवर चोर होने के नाते मुझे मालूम है कि पुलिस को क्या बात बतानी चाहिए और क्या नहीं।'

'तुमने जिस तरह मुझे अपने विश्वास में लेकर अपने बारे में मेरे पूछे बिना ही सब-कुछ सच बता दिया था, उससे मुझे लगा कि तुम्हारा विश्वास किया जा सकता है।'

'अपने बारे में अगर मैं तुम्हें न भी बताता, तो भी कहीं-न-कहीं से वे सब बातें तुम्हें वैसे ही मालूम हो जातीं।'

'क्या तुम के फूफी बारे में अपनी राय नहीं बदल सकते?'

'खामोश तो रह सकता हूं।' मैंने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा—'लेकिन राय नहीं बदल सकता।'

'और खामोश रहने की क्या कीमत लोगे?'

'ऐसी बात करके उस इज्जत को मत घटाओ मालती, जो मैंने तुम्हें अपने दिल में दी है।'

'और वह इज्जत देने की वजह।'

'देखो मालती, जब पहली बार तुम्हें देखा था तो मुझे तुम पर भी कत्ल का शक था। लेकिन जब मिसेज त्रेहन जय की गिरफ्तारी के समय अचानक ही सीढ़ियों से गिर गईं तो मैं केवल उस मनुष्यता के नाते जो कि मुझमें कुछ कम ही है उन्हें जल्दी से जल्दी हॉस्पिटल पहुंचाने के लिए आगे बढ़ा था। फिर उस कैंटीन में बैठकर जब तुमने मुझे बताया कि मिसेज त्रेहन के साथ तलघर से लाश बाहर निकाल कर डालने में तुमने उनकी सहायता की है तभी मैं समझ गया था कि तुम्हारे जैसी लड़की किसी की हत्या नहीं कर सकती। उसके बाद मलखान कल रात हम दोनों को पकड़कर उस जंगल में ले गया था और मैं उसे बेहोशी की हालत में वहीं उस तूफानी बारिश में छोड़ देना चाहता था, तो तुमने उसे जबरदस्ती साथ ले चलने का आग्रह किया था। उस व्यक्ति के प्रति भी तुम्हारी करुणा देखकर मेरे दिल में तुम्हारी इज्जत कई गुना बढ़ गई थी। मगर अब जो बात तुमने कही है…।'

'मैं अपने शब्द वापिस लेती हूं।'

'तुम्हारे शब्द हैं, वापिस लो चाहे न लो।' मैं धीरे से मुस्कराकर बोला—'मुझे मालूम है कि तुम मिसेज त्रेहन का कितना भरोसा और आदर करती हो। लेकिन तुम्हारे भीतर की मनुष्यता को देखकर ही मैंने यह अनुमान लगाया था कि शायद तुम किन्हीं भी सम्बन्धों के लिए किसी निर्दोष लड़की को बलि का बकरा नहीं बनने दोगी।'

'आखिर तुम्हें रमला के निर्दोष होने का इतना विश्वास क्यों है?'

'क्योंकि उसने स्वयं अपने आपको पुलिस के हवाले करके अपना अपराध स्वीकार किया है।' मैं अपनी बात पर जोर देता हुआ बोला—'जबकि सारे तथ्य मिसेज त्रेहन की ओर संकेत करते हुए कह रहे हैं कि असली मुजरिम वही है…।'

मैं कहता गया। मालती सुनती रही। कुछ देर बाद मुझे महसूस हुआ कि वह मेरी बात से प्रभावित होने लगी है। हम लोगों के बीच जो तलखी पैदा हो गई थी वह भी खत्म हो गई। हॉस्पिटल पहुंचने तक हम पहले की तरह सामान्य हो चुके थे।

किन्तु वहां पहुंचने पर मालूम हुआ कि जय आया था और अपने साथ मिसज ब्रेहन को घर ले गया।

▭ ▭

जिस समय हम ब्रेहन हाउस पहुंचे तो उस समय जय मुख्य इमारत से बाहर आ रहा था। काफी प्रसन्नचित्त और प्रफुल्ल था।

'फूफी कैसी हैं?' मालती ने उससे सबसे पहला सवाल यही किया।

'अब तो बिलकुल ठीक हैं।' जय ने जवाब दिया—'तभी तो हॉस्पिटल से भी छुट्टी मिल गई। वैसे मेरा विचार तो यह था कि वह एक-दो दिन वहां और आराम कर लेतीं तो अच्छा था। मगर मुझे देखते ही घर चलने की जिद् पकड़ बैठीं।'

'लेकिन तुम अब कहां जा रहे हो?'

'राधा मौसी की तरफ जा रहा हूं—वह बेचारी मेरी गिरफ्तारी को लेकर परेशान हो रही होंगी।'

'राधा मौसी या शिल्पा?'

मालती के इस सवाल पर जय हंस दिया।

'रमला ने पुलिस को अपना इकबालिया बयान तो आपके सामने ही दिया था?' मैंने जय से पूछा।

'हां, मैंने उसे मना भी किया था कि वह बिना वकील की सलाह के अपना कोई बयान न दे, किन्तु वह मानी ही नहीं।'

'आपका ख्याल है कि रमला ने आपके डैडी की हत्या की होगी?'

'रमला वैसे तो बड़ी भावुक लड़की है, किन्तु मेरा विश्वास है कि वह किसी की हत्या नहीं कर सकती। गुस्से में कुछ उल्टा-सीधा कह जाए तो बात दूसरी है लेकिन किसी की हत्या करना उसके वश की बात नहीं।'

'तो आप मानते हैं कि उसने हत्या नहीं की।'

'नहीं, यह बात मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि उसने इरादातन हत्या नहीं की। हां जिस तरह की परिस्थिति

उसने बताई है उसमें कुछ भी हो सकता है। वह गुप्त रूप से चहार दीवारी पार करके भीतर घुसी थी। ऐसे में डैडी ने उसे चोर समझ लिया हो तो कोई ताज्जुब नहीं। चोर के नाम से हम लोगों के मन में एक अजीब-सी दहशत बैठ जाती है। इस-लिए अगर अपनी सुरक्षा के लिए डैडी ने खुखरी ले ली हो तो इस पर कोई आश्चर्य नहीं किया जा सकता। छीना-झपटी में वही खुखरी डैडी की गरदन में जा धंसी।'

'मेरा ख्याल है मिस्टर जय कि छीना-झपटी में खुखरी पेट में धंस सकती है।' गले में, छाती में···मेरा मतलब है कि शरीर के सामने के हिस्से में कहीं भी धंस सकती है। गरदन में फंस जाना और वह भी जड़ तक, मेरी समझ में तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि पीछे से भरपूर वार न किया जाये ?'

'यानी आपका ख्याल है कि रमला ने जान-बूझकर डैडी की हत्या की है ?'

'शायद।'

'मैं नहीं मान सकता।' जय ने दृढ़ शब्दों में विरोध करते हुए कहा—'वह सब छीना-झपटी में ही हुआ है जैसा कि रमला कहती है।'

'क्या ऐसा नहीं हो सकता कि रमला ने हत्या का अपराध जान-बूझकर अपने सिर ले लिया हो ?'

मेरे इस सवाल पर जय ने क्षण भर के लिए तो पलकें-सी झपकाईं और फिर बोला—'ऐसा वह क्यों करेगी ?'

'ऐसा आपने क्यों किया ?'

'मतलब ?'

'आपने भी तो अपने पिता का अपराध जान-बूझकर अपने सिर ले लिया था ? ऐसा क्यों किया था आपने ?'

'इस बात का जवाब मैं पहले दे चुका हूं।' जय मुझे घूरता हुआ बोला—'रमला ने जब पहली बार बताया था कि वह निर्दोष है तो मैंने उसे आश्वासन दिया था—कि उसे कुछ नहीं होगा। इसीलिए जब पुलिस ने मुझसे रमला के बारे में पूछा तो मैंने इंकार कर दिया था कि मैं इस नाम की किसी लड़की को नहीं जानता। शायद आखिर दम तक मैं इस बात पर डंटा रहता—अगर मालती और तुम हवालात में उसकी फोटो लेकर न पहुंच जाते। बाद में जब

रमला ने खुद ही आकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया तो फिर मैं क्या कर सकता था। लेकिन मैं अपने वायदे से पीछे हटने वाला व्यक्ति नहीं हूं। रमला के लिए मैं एक से एक नामी वकील तैनात करूंगा, जो इस बात को अदालत में साबित करेंगे कि डैडी की हत्या रमला के हाथों अनजाने में ही हुई है। फिलहाल मैं चलता हूं। मुझे देर हो रही है।'

और वह तेज कदमों के साथ वहां से चल दिया।

'आखिर तुम जय से बहस करके साबित क्या करना चाहते थे?' उसके जाने के बाद मालती ने मुझसे पूछा।

'यह तो मुझे भी नहीं मालूम।' मैंने अपने कंधे झटककर कहा।

= ०

जिस समय मैं और मालती मिसेज त्रेहन के कमरे में पहुंचे तो वह पलंग पर तकिए के सहारे बैठी हुई थीं। सिर पर पट्टी बंधी हुई थी। चेहरे पर खून की कमी के कारण कुछ पीलापन था अन्यथा वह भी काफी सन्तुष्ट और प्रसन्न दिखाई दे रही थीं।

'कैसी हो फूफी?'

'ठीक हूं बेटी।'

कुछ देर तक उन दोनों के बीच इसी तरह की औपचारिक बातचीत होती रही। फिर मिसेज त्रेहन ने मेरी ओर उन्मुख होकर कहा—'ऐसा लगता है कि शायद तुम्हें पहले भी कहीं देखा है। लेकिन कुछ याद नहीं पड़ रहा।'

'यह मिस्टर रवि हैं।' मालती बोली—'जब तुम सीढ़ियों से गिरी थीं तो इन्होंने ही तुम्हें हॉस्पिटल पहुंचाने में मेरी मदद की थी। वहां भी जब डॉक्टर ने बताया कि तुम्हें खून की जरूरत है तो इन्होंने ही तुम्हें अपना खून दिया था—क्योंकि मेरा ब्लड ग्रुप दूसरा था और इनका ब्लड ग्रुप तुमसे मिलता था।'

'ओह, अच्छा।'

'पुलिस ने सबसे इन्हें ही तो फूफा की हत्या के सन्देह में पकड़ा था। चोपड़ा अंकल के कहने पर आप लोगों से इनकी शिनाख्त भी करवाई थी।'

'ओह हां याद आया।' मिसेज त्रेहन ने मुझे और भी गौर

से देखते हुए कहा—'इन्स्पेक्टर जब पूछताछ करने के लिए आया था तो तुम उसके साथ थे। इन्स्पेक्टर ने तुम्हारी ओर संकेत करते हुए पूछा था कि क्या मैं तुम्हें पहचानती हूं ?'

'जी नहीं।' मैं बोला—'इन्स्पेक्टर ने मेरी ओर संकेत करते हुए आपसे पूछा था कि क्या मेरी कद-काठी उन दो नकाबपोशों में से किसी एक से मिलती है जिन्होंने हत्या की रात आपके हाथ-पैर बांधे थे।'

'हां···हां···शायद यही पूछा था।'

'और आप गरदन के संकेत से हां करने जा रही थीं किन्तु फिर अचानक ही ना कर बैठी थीं।' मैं बोला—'आप नहीं जानतीं कि उस समय आपने मुझ पर कितना बड़ा उपकार किया था। आपकी गर्दन का जरा-सा इशारा मुझे बड़ी भारी मुसीबत में फंसा देता।'

'हां फूफी, तुम शायद जानती नहीं कि मिस्टर रवि जिन्हें प्रिंस भी कहा जाता है, एक पेशेवर चोर हैं।' मालती ने विस्तार से मेरा परिचय देते हुए कहा—'यह तुम्हारा वह चन्द्रहार चुराने के चक्कर में थे जो तुम विवाह की वर्षगांठ के दिन पहनती थीं। जिस रात फूफा की हत्या हुई, उस रात यह चन्द्रहार की चोरी के सिलसिले में इमारत का निरीक्षण करने के लिए ब्रेहन हाऊस के आस-पास ही मंडरा रहे थे।'

'अच्छा ?' मिसेज ब्रेहन के चेहरे पर कुछ अजीब-से भाव उभरे।

'उस रात इन्होंने जय को एक लड़की के पीछे भागते देखा था जिसके बारे में इन्हें बाद में पता चला कि वह रमला थी।'

'तो क्या जय उस रात यहां आया था ?'

'हां और वह उस लड़की रमला को भी पहचानता था जबकि तुम्हारे सामने पुलिस को दिए बयान में उसने यह कहा था कि वह इस नाम की किसी लड़की को नहीं जानता।' मालती ने अपनी नजरें मिसेज ब्रेहन के चेहरे पर जमाये हुए कहा—'वह सब तो जय ने तुम्हें बता दिया होगा ?'

'जय से भी मेरी अभी पूरी बात कहां हुई है।' मिसेज ब्रेहन ने कहा—'हॉस्पिटल में पहुंचकर उसने मुझे सिर्फ यह बताया कि पुलिस को इस बात का पता चल गया है कि वह निर्दोष है

और उस पर गलत आरोप लगाया गया था। फिर वह मुझे घर छोड़ने के बाद यह कहकर चला गया कि वह अभी थोड़ी देर में आ रहा है।'

'उसने यह नहीं बताया कि रमला ने पुलिस के सामने इकबाल कर लिया है कि उसने फूफा की हत्या की है।'

'कह तो रही हूं कि जय से अभी पूरी तरह कोई बात नहीं हुई है।'

'तुम्हारा क्या ख्याल है फूफी कि रमला ने फूफा की हत्या की होगी?'

'मैंने उस लड़की को कभी देखा नहीं, इसलिए उसके बारे में क्या कह सकती हूं। लेकिन उसने हत्या की होगी, तभी तो पुलिस के सामने इकबाल दिया है।'

'लेकिन तुम्हारा तो कहना है फूफी कि वे दो नकाबपोश जिनमें एक ठिगना था और एक लम्बा, तुम्हें बांधने के बाद फूफा को जबर्दस्ती खींचकर बाहर ले गये थे।'

नकाबपोशों का जिक्र आते ही मिसेज त्रेहन का चेहरा और भी अधिक पीला पड़ गया। होंठ कंपकंपाकर थरथराए। लेकिन वह बोलीं कुछ नहीं।

मैं देख रहा था कि मालती सीधे बात न करके परोक्ष ढंग से मिसेज त्रेहन से सच्चाई उगलवाने की कोशिश कर रही थी। किन्तु इस मौके पर मैं उसे टोककर बीच में कोई व्यवधान नहीं डालना चाहता था, इसलिए चुपचाप बैठा रहा।

'और फिर वह दूसरी लाश जिसने फूफा के कपड़े पहने थे।' मालती कहती गई—'जिसे हम दोनों ने ही मिलकर तल-घर से बाहर···।'

'मालती?'

एकदम चीखकर मिसेज त्रेहन ने मालती को टोका। उनकी नजरें मुझ पर जमी हुई थी, जिसका साफ मतलब था कि वह एक बाहरी आदमी के सामने यह सब क्यों कह रही है।

'प्रिंस मेरे लिए कोई गैर व्यक्ति नहीं है फूफी।' मालती अपने स्वर को थोड़ा और दृढ़ करते हुए बोली—'इनसे सिर्फ कुछ रोज की ही मुलाकात है मेरी, किन्तु इन्होंने मेरा विश्वास करके अपने बारे में सब-कुछ बता दिया और वह भी जो

इन्होंने पुलिस तक से छिपाये रखा। लेकिन फूफी तुमने मुझसे झूठ बोला।'

'मैंने कोई झूठ नहीं बोला।' मिसेज त्रेहन ने खोखली-सी आवाज में कहा।

'क्या तुम्हें नहीं मालूम फूफी कि वह दूसरी लाश किसकी थी?'

'नहीं।'

'लेकिन मुझे मालूम है—उस आदमी का नाम बशेशर था।'

उसके बाद मालती ने उसे बशेशर और मलखान की सारी कहानी सुनाई। सारी कहानी सुनाने के बाद मालती ने पूछा —'बशेशर के पास जो हीरे थे, वह कहां हैं फूफी?'

'मुझ नहीं मालूम।'

'तुम झूठ बोल रही हो फूफी।' मालती एकदम चीखकर बोली—'तुम्हें सब मालूम है। लेकिन न जाने क्यों तुम झूठ पर झूठ बोले चली जा रही हो नकाबपोशों की जो कहानी तुमने गढ़ी है, वही कहानी बीस साल···।'

किन्तु मालती को अपनी बात पूरी करने से पहले ही रुक जाना पड़ा। क्योंकि तभी जय शिल्पा को लेकर वहां पहुंच गया।

'मम्मी, हम लोग आपका आशीर्वाद और अनुमति लेने आए हैं।' जय ने आते ही कहा, फिर शिल्पा से बोला—'पांव छूओ मां के।'

'किस बात बात की अनुमति?' मिसेज त्रेहन ने प्रश्न किया।'

'विवाह की मम्मी। मैं और शिल्पा···।'

'जय।' मिसेज त्रेहन एकदम तेज स्वर में बोली—'तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है। अभी तेरे पिता की चिता की राख ठंडी भी नहीं पड़ी और तू ब्याह रचाने की सोचने लगा?'

'नहीं मम्मी, वह सब तो जब आप कहेंगी तब होगा। अभी तो सिर्फ आपका आशीर्वाद···।'

'कोई आशीर्वाद नहीं है···अपने जीते जी मैं यह शादी नहीं होने दूंगी।'

'मम्मी ?'

'कान खोलकर सुन ले कि यह शादी किसी भी हालत में नहीं होगी।'

'तो आप भी कान खोलकर सुन लीजिए मम्मी कि यह शादी होगी और दुनिया की कोई ताकत मुझे नहीं रोक सकती।'

'मुझसे जबान लड़ाता है बदतमीज ?'

'अगर बड़े अपने बड़प्पन को भूल जायें तो छोटों को जबान लड़ानी ही पड़ती है आखिर क्या खराबी है शिल्पा में सिर्फ यही न कि वह एक गरीब घर की लड़की है ? लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आता कि आखिर हम लोगों को कितनी दौलत चाहिए; जब यह इस घर में आ जाएगी…।'

'यह इस घर में नहीं आ सकती।'

'यह इस घर में आएगी।'

'अगर तूने इसे इस घर की बहू बनाने की कोशिश की तो समझ ले कि इस घर के दरवाजे तेरे लिए हमेशा को बन्द हो जायेंगे। मेरी सम्पत्ति में से एक कानी कौड़ी भी तुझे नहीं मिलेगी।'

'तुम्हारी सम्पत्ति ? आखिर तुमने मुझे अपना सौतेलापन दिखाई दिया न मम्मी…।'

'तूने मुझे सौतेलेपन की गाली दी रे जय ?' मिसेज त्रेहन के चेहरे पर गहन पीड़ा और वेदना के भाव उभरे। साथ ही जबाड़े के साथ-साथ हाथों की मुट्ठियां भी कसने लगीं। लगा जैसे कोई जबर्दस्त दौरा पड़ने जा रहा हो।

'फूफी।' मालती उसकी हालत देखकर चिल्लाई और उसने उसे अपनी बांहों में थाम लिया।

उधर जय उत्तेजना में बके जा रहा था—'थूकता हूं मैं तुम्हारी दौलत पर…अपने आप कमाने की ताकत रखता हूं मैं…।'

शिल्पा उसे खींचने की कोशिश कर रही थी, किन्तु वह बके जा रहा था—'डैडी को अपनी दौलत का बड़ा घमंड था …लेकिन क्या वे इसे अपनी छाती पर लादकर ले गये… उनका सब-कुछ यहीं रह गया…तुम जिस दौलत का घमंड कर रही हो…।'

'जय प्लीज...अब जाओ यहां से।' बेहोश मिसेज त्रेहन को पलंग पर लिटाती हुई मालती बोली। किन्तु जब उसने जय पर अपनी बात का कोई असर पड़ते न देखा तो उसने मुझसे कहा—'रवि, जय को बाहर ले जाओ।'

मैं और शिल्पा किसी तरह उत्तेजना से आपा भूले हुए जय को पकड़कर बाहर की ओर ले चले।

▭ ▭

जय को वहां से खींचकर ले जाने में हमें कोई ज्यादा दिक्कत नहीं हुई। किन्तु बाहर निकलने के बावजूद भी उसकी उत्तेजना शान्त होने की बजाए बढ़ती जा रही थी। भावावेश के कारण जो कुछ भी उसके मुंह में आ रहा था, वह कहे जा रहा था, 'आज तक देवी की तरह पूजता आया मैं इस औरत को...कभी इसे यह नहीं महसूस होने दिया कि मैं इसका सौतेला बेटा हूं...लेकिन...लेकिन यह अपना सौतेलापन दिखाने से बाज नहीं आई...डैडी की वसीयत में से मेरा नाम कटवाकर सारी दौलत अपने नाम करवा ली...अब मुझसे कहती है कि इस घर के दरवाजे मेरे लिए बन्द हो गए...समझ क्या रखा है मुझे...कोई परवाह नहीं...सारी दुनिया के दरवाजे बन्द हो जायें...कोई परवाह नहीं...मैं फिर भी शिल्पा से शादी करके रहूंगा...कोई नहीं नहीं रोक सकता...मुझे...कोई नहीं रोक सकता...।'

वह सन्निपात के रोगी की भांति प्रलाप किए जा रहा था।

मैं और शिल्पा किसी तरह उसे मदहोश शराबी की भांति सम्हाले हुए पड़ौस के मकान तक ले गये। राधा देवी ने जो उसकी विक्षिप्तों जैसी हालत देखी तो पूछा—'यह इसे क्या हो गया?'

हममें से किसी ने कोई जवाब न दिया।

जय को पलंग पर लिटाया तो उसका शरीर आश्चर्य-जनक रूप से तपने लगा था। जैसे अचानक बुखार चढ़ आया हो। शिल्पा उसका शरीर कपड़ों से ढकने लगी।

मैंने संक्षेप में राधा देवी को सब-कुछ बताया तो वह एक दीर्घ निःश्वास के साथ बोली—'मैंने तो इसे पहले ही लाख सम-झाने की कोशिश की थी, लेकिन इसने एक न सुनी मेरी।

जबर्दस्ती शिल्पा का हाथ पकड़कर अपने साथ ले गया। कहता था मेरी मम्मी ऐसी नहीं हैं।'

'आप धीरज रखिए, सब ठीक हो जाएगा।' मैंने यंत्र चालित ढंग से उसे दिलासा दी। समझ नहीं पा रहा था कि और इसके अलावा मैं कहता भी क्या।

'मम्मी, इनका शरीर तो बहुत गरम होता जा रहा है।' तभी शिल्पा जय का माथा दबाती हुई बोली।

राधा देवी ने जाकर जय को छुआ और फिर बोली—'हाय राम! इसे तो बहुत तेज बुखार हो रहा है। शरीर आग की तरह तपा जा रहा है।'

मैंने भी देखा कि जय का शरीर वाकई बहुत ज्यादा तप रहा था।

'मैं डॉक्टर को फोन करके बुलाता हूं।' कहने के साथ ही मैं वहां से चल दिया।

मेरा इरादा ब्रेहन हाऊस से डॉक्टर को फोन करने का था। किन्तु यह काम मुझसे भी पहले मालती कर चुकी थी।

डॉक्टर ने भी आने में तत्परता दिखाई।

बेहोश मिसेज ब्रेहन का निरीक्षण करके बोला—'कोई गम्भीर मानसिक आघात लगा है शायद। मैंने जय से पहले ही कह दिया था कि इन्हें कम्पलीट रैस्ट की जरूरत है।'

उसने एक इन्जेक्शन लगाने के बाद दवाई देते हुए कहा—'दो-दो घंटे बाद यह दवाई देती रहिएगा और कोई ऐसी बात न कीजिएगा, जिससे इन्हें किसी तरह की कोई मानसिक परेशानी हो। वैसे अभी कुछ देर बाद होश में आ जायेंगी तो गरम दूध पिला दीजिएगा।'

वहां का काम खत्म हुआ तो मैं डॉक्टर को अपने साथ पड़ोस के मकान में ले गया जहां जय अभी भी प्रलाप किए जा रहा था।

'इसे भी कोई जबर्दस्त मानसिक आघात लगा है।' डॉक्टर ने उसका निरीक्षण करने के बाद इन्जेक्शन तैयार करते हुए कहा—'शायद मिस्टर ब्रेहन की मौत का सदमा बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं लोग।'

'लेकिन एक ही बात का असर दो आदमियों पर अलग-अलग क्यों पड़ा डॉक्टर?'

क्या मतलब ?'

'आपने कहा, दोनों को मानसिक आघात लगा है।' मैंने कहा—'लेकिन मिसेज त्रेहन तो उससे बेहोश हो गईं और जय ने जो बड़बड़ाना शुरू किया सो अब तक चुप नहीं हुआ।'

'ऐसा भी अक्सर होता है कि एक ही बात की प्रतिक्रिया दो व्यक्तियों पर बिलकुल विपरीत ढंग से हो।' डॉक्टर ने मुस्कराकर अपना बैग बन्द करते हुए कहा—'वैसे घबराने की कोई जरूरत नहीं। सब ठीक हो जाएगा।'

'लेकिन जय के लिए कोई दवाई इत्यादि नहीं ?'

'कोई जरूरत नहीं। कल सुबह से पहले पहले यह होश में आने वाला नहीं। उम्मीद है कि तब तक यह बिलकुल ठीक हो चुका होगा। वैसे कोई बात हो तो मुझे खबर कर दीजिएगा।'

▭ ▭

डॉक्टर को विदा करके जब मैं त्रेहन हाऊस पहुंचा तो मिसेज त्रेहन होश में आ चुकी थीं और पहले की भांति ही तकिए के सहारे बैठी हुई थीं। सुलोचना दूध का खाली गिलास लेकर बाहर निकल रही थी और मालती कह रही थी—'अब इन बातों को भूल जाओ फूफी, आराम करो। डॉक्टर ने कहा है कि तुम्हें आराम की सख्त जरूरत है।'

'जय मुझसे इतनी बड़ी बात कह गया—मुझे सौतेलेपन की गाली दे गया—यह क्या भुलाया जा सकता है।' व्यथित-से स्वर में मिसेज त्रेहन ने कहा—'मेरे औलाद नहीं है तो क्या हुआ। लेकिन जय को मैंने कभी सौतेलेपन का अहसास नहीं होने दिया। बल्कि सदा यही सोचा कि शायद भगवान ने जय की मां बनने के लिए ही मुझे औलाद नहीं दी। वही जय एक लड़की की खातिर इतनी बड़ी बात कह गया ?'

'आपके पारिवारिक मामले में मुझे बोलने का अधिकार तो नहीं है मिसेज त्रेहन।' मैं पलंग के पास वाली कुर्सी पर बैठता हुआ बोला—'किन्तु आदमी उत्तेजना में बहुत कुछ ऐसा कह जाता है जो वह कहना नहीं चाहता। बल्कि उसे यह मालूम ही नहीं होता कि वह कह क्या रहा है। मैं समझता हूं कि ऐसा ही जय के साथ भी हुआ है। डॉक्टर का कहना है कि उसे जबर्दस्त मानसिक आघात लगा है।'

'जरूर लगा होगा।' मिसेज मोहन ने कहा—'जब उसे इस बात का अहसास हुआ होगा कि वह क्या कह गया तो उसे अपने ऊपर शर्म आई होगी। वैसे वह है कहां?'

'राधा देवी के यहां।'

'गया फिर भी वहीं है।'

'वह गया नहीं है बल्कि उसे मैं जबर्दस्ती वहां छोड़कर आया हूं, ताकि उसे आपके सामने से हटाया जा सके। लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा कि आप जरा-सी बात को लेकर इतना उत्तेजित क्यों हो उठीं? जय अगर शिल्पा से शादी करना चाहता है तो…।'

'रवि…।' मालती ने मुझे टोका और मैं रुक गया।

'यही कहना चाहते हो न तुम कि मैं इस शादी के क्यों खिलाफ हूं?'

'बिलकुल। आखिर क्या बुराई है शिल्पा में? लाखों में एक लड़की है।'

'बुराई शिल्पा में नहीं, उसकी मां में है।'

'अब रहने भी दो फूफी, यह सब बातें बाद में कर लेंगे।' मालती बोली—'अभी तुम्हें आराम करना चाहिए।'

'नहीं बेटी, आज मुझे सब-कुछ कह लेने दो। मेरी छाती पर जो बोझ रखा हुआ है उसे उतर जाने दो। वरना इस बोझ के रहते मैं जी न सकूंगी। मेरा दम घुट जाएगा।'

'मैं भी सब-कुछ सुनना चाहती हूं लेकिन अभी नहीं। अभी आपकी तबियत ठीक नहीं है। डॉक्टर ने आपको आराम करने की सलाह दी है।'

'अब तो सब-कुछ कहने के बाद ही आराम मिलेगा। मेरे विरुद्ध जो शक तुम्हारे दिल में पनप चुका है, उसे दूर करना जरूरी है। जय मुझ पर तोहमत लगा कर गया है, मैंने वसीयत में से उसका नाम कटवा कर सारी सम्पत्ति अपने नाम करवा ली है। यह झूठी तोहमत मेरी बर्दाश्त से बाहर है।'

मालती उसे आराम करने की सलाह देती रही। किन्तु मिसेज मोहन बताने के लिए बजिद थी।

मुझे लगा कि शायद वह मुझे वहां से उठकर चला जाने के लिए कहेगी। इसलिए इससे पहले कि वह मुझे वहां से जाने के लिए कहे मैंने स्वयं ही अपनी ओर से कह दिया—'मेरा ख्याल

है कि मुझे अब यहां से चलना चाहिए।'

'नहीं तुम बैठो।' मिसेज ब्रेहन ने मुझे रोकते हुई कहा—'जब तुम्हें उस दूसरी लाश का रहस्य मालूम हो ही गया है तो अब कोई ऐसी बात नहीं है जो तुमसे छिपाई जा सके।'

मैं तो स्वयं सारा रहस्य जानने का इच्छुक था। इसलिए जरा-सा इशारा मिलते ही तुरन्त बैठ गया। मालती ने भी मिसेज ब्रेहन को रोकने की कोई चेष्टा नहीं की।

'नहीं जानती कि इस बात को कहां से शुरू करूं।' मिसेज ब्रेहन ने शून्य में ताकते हुए गम्भीर स्वर में कहना शुरू किया —'क्योंकि इन कुछ दिनों में ही जो-जो अघटित यहां घट गया, उसकी जड़ें बहुत पुरानी हैं। आज की कहानी आज से बीस साल पहले शुरू होती है। तब जय कुल दो-ढाई साल का था। इसकी असली मां इसे जन्म देते समय मर गई थी। तेरे फूफा···।'

मेरे दिमाग में जैसे कोई बिजली-सी कौंधी हो। भानु गुप्ता का पूरा का पूरा लेख मेरे मस्तिष्क में घूम गया।

अनजाने में ही मैं बोल उठा—'जयन्त कोठारी···तो क्या आपके पति जगत ब्रेहन का असली नाम जयन्त कोठारी था।'

'हां।' मिसेज ब्रेहन बोली—'हां, उनका असली नाम जयन्त कोठारी ही था। तुम लोगों को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि अट्ठारह साल हो गए हमारे विवाह को, किन्तु मेरे पति का असली नाम जगत ब्रेहन नहीं जयन्त कोठारी है, यह बात मुझे कुछ दिन पहले ही मालूम हुई। अपनी पिछली जिंदगी के बारे में न तेरे फूफा ने कभी मुझे कुछ बताया, न मैंने जानने की जरूरत महसूस की।'

'यानी फूफा और राधा देवी···।' कहते-कहते मालती ने अपना वाक्य स्वयं ही अधूरा छोड़ दिया।

'हां।' मिसेज ब्रेहन खोई-खोई-सी आवाज में बोली—'उस समय तेरे विधुर फूफा ने राधा देवी को देखा जो उस समय मिसेज कौशल थी और उसकी ओर आकर्षित हो गए। कहते हैं कि तब यह बहुत खूबसूरत थी और तेरे फूफा इसे पाने के लिए पागल हो उठे। बिल्कुल उसी तरह जैसे कि जय आज शिल्पा को पाने के लिए पागल है। राधा देवी ने तेरे फूफा से

प्यार का ढोंग किया। हां ढोंग ही था वह। क्योंकि राधा देवी असल में तो उस धनपति बम्बई वाले अरविन्द गुप्ता से प्रेम करती थी। प्रेम भी वह अरविन्द गुप्ता से नहीं बल्कि उसकी असीम दौलत से करती थी। राधा ने तेरे फूफा को अपना दीवाना देखकर यह बात उनके दिमाग में डाली कि दोनों तभी एक हो सकते हैं जबकि उसका पति राज कौशल खत्म हो जाए। तेरे फूफा उस समय राधा के ऐसे दीवाने थे कि वे उसकी चाल में आ गए और उसे हासिल करने के लिए राज कौशल को भी मारने के लिए तैयार हो गए। दोनों ने, तेरे फूफा और राधा ने राज कौशल को मारने की एक बहुत गहरी योजना बनाई। उसके मुताबिक हत्या की रात तेरे फूफा ने राधा के हाथ-पैर बांधे और राज कौशल का कत्ल कर दिया।'

'फूफा ने कत्ल कर दिया?' मालती एकदम चौंककर बोली —'मैं नहीं मान सकती यह बात।'

'चुप रहो मालती। फूफी को बोलने दो।' किस भावना के आधीन मैं मिसेज मोहन को अचानक ही 'फूफी' कह बैठा, यह मैं भी नहीं जानता।

मालती चुप हो गई। मिसेज मोहन कहती रही।

'कत्ल के बाद तेरे फूफा तो फरार हो गए और जब पुलिस पहुंची तो राधा ने वह नकाबपोशों वाली कहानी सुनाई जो कि दोनों ने पहले से ही पका ली थी। राधा की कहानी पर यकीन भी कर लिया गया। लोगों की सहानुभूति भी उसके साथ थी। तेरे फूफा छुपकर राधा से मिले। वे भी योजना की सफलता पर बहुत खुश थे, लेकिन राधा ने उनसे उपेक्षा का व्यवहार किया। उसने उन्हें बताया कि पुलिस को उनका नाम न बताकर उसने उन पर एहसान किया है। वह उनसे नहीं बल्कि अरविन्द गुप्ता से प्रेम करती है और अब उसी से शादी करेगी। तेरे फूफा के होश खराब हो गये। जिसके लिए उन्होंने हत्या जैसा जघन्य अपराध किया उसी ने उन्हें ठुकरा दिया। तेरे फूफा को अपने बचने का कोई रास्ता नजर नहीं आया तो वे जय को अपने साथ लेकर भारत से ही फरार होकर काठमांडू पहुंच गये। यह मुझे नहीं मालूम कि काठमांडू में उन्होंने जय को कहां रखा, लेकिन इतना मालूम है कि जय को वहां छोड़कर एक बार फिर हिन्दुस्तान आये थे। तब तक राधा को अपने पति की

हत्या के अपराध में पकड़ लिया गया था और उस पर मुकद्दमा चल रहा था यहां आने पर इन्हें मालूम हुआ कि अदालत में दिए बयान के मुताबिक राधा ने हत्या का सारा दोष इन पर डाल दिया था और अपने को बिलकुल निर्दोष बता रही थी। जिस पर इन्होंने एक पत्र लिखकर अदालत को सारी वास्तविकता बता दी।

उसके बावजूद भी राधा निर्दोष छूट गई, किन्तु वह अरविन्द गुप्ता से भी शादी न कर सकी। शायद सारी बात जानने के बाद अरविन्द गुप्ता स्वयं ही पीछे हट गया था।

तेरे फूफा फिर काठमांडू लौट आए और वहां जगत नेहरू के नाम से एक नई जिन्दगी शुरू की। वहीं कुछ अरसे बाद हम दोनों की मुलाकात हुई और फिर शादी हो गई, लेकिन इस घटना ने तेरे फूफा को पूरी तरह से बदल दिया था। औरत जात से तो उन्हें नफरत-सी हो गई थी। मुझसे भी शादी शायद उन्होंने जय के कारण की थी, क्योंकि उसकी परवरिश की उन्हें बहुत चिन्ता थी। दीन-दुनिया की बातों में भी कोई रस नहीं लेते थे वे। अपने-आपको पूरी तरह से अपने व्यापार में ही झोंक दिया और उसे बहुत बढ़ाया भी।

बीती बातें अतीत के गर्भ में डूब गईं। अपनी छोटी-सी दुनिया में हम लोग बहुत खुश थे, किन्तु नियति का चक्र तो कोई और ही चाल चलने में लगा हुआ था। बीस साल बाद एक नया खेल शुरू होना था। तेरे फूफा की तबियत खराब रहने लगी। डाक्टर ने कहा कि किसी समुद्र किनारे की जगह पर रहना चाहिए सो तेरे फूफा ने सोचा कि इस छोटे से भक्तपुर गांव में उन्हें कौन पहचानेगा। इसलिए यहां ठेकेदार को अपने लिए कोठी बनाने का आदेश दे दिया। तेरे फूफा को तो बस पैसा देने से मतलब, बाकी सारा काम मैंने ही किया। यह जगह भी मैंने ही पसन्द की। तेरे फूफा तो यहां तब आये जब कोठी पूरी तरह से रहने के लिए तैयार हो गई।

यह किस्मत का खेल नहीं तो और क्या है कि जिस राधा के नाम का वरका वह अपनी जिन्दगी की किताब से फाड़कर फेंक चुके थे वही राधा यहां हमारी पड़ोसी थी। उसने भी तेरे फूफा को देखा तो पहचान गई। आदमी चाहे पिछली बातें भुला दे, किन्तु कुदरत का कानून तो कुछ नहीं भूलता। अप-

राध चाहे बीस साल पुराना था, किन्तु देश के कानून की नजर में तेरे फूफा अभी भी हत्या के अपराधी एवं फरार मुजरिम थे। यह बात राधा देवी जानती थी कि अभी भी अगर पुलिस को खबर कर दी जाए तो तेरे फूफा को गिरफ्तार किया जा सकता था। लिहाजा उसने मौके का फायदा उठाते हुए तेरे फूफा को ब्लैकमेल करना शुरू किया। शुरू-शुरू में बहुत मामूली रकम मांगनी शुरू की थी उसने, लेकिन धीरे-धीरे उसका मुंह फैलता गया और रकम बढ़ती गई।

तेरे फूफा राधा की इस ब्लैकमेलिंग से बुरी तरह परेशान और चिन्तित रहते थे। उन्हें लग रहा था जैसे एक जिन्दगी भर का जानलेवा रोग उनकी जान को लग गया है, जिससे बचने का उन्हें कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा था। मैंने कई बार उनकी परेशानी का कारण पूछा, किन्तु उन्होंने मुझे कभी कुछ नहीं बताया।

उनकी परेशानियों में तब और भी अधिक इजाफा हो गया जब उन्हें मालूम हुआ कि जय शिल्पा से प्रेम करने लगा है और उससे शादी करनी चाहता है। इस बात को लेकर बाप-बेटों में पिछले इतवार को काफी झगड़ा भी हुआ था। मैंने तेरे फूफा को इतने गुस्से में कभी नहीं देखा था। जय गुस्से में घर से चला गया था। उसके जाने से बाद मैंने तेरे फूफा को समझाने की कोशिश की थी कि वे क्यों जरा-सी बात का बतंगड़ बना रहे हैं। अगर जय शिल्पा से शादी करना चाहता है तो कर लेने दीजिये। तब मैं वास्तविकता से परिचित नहीं थी। न तेरे फूफा ने मुझे वास्तविकता बताई, किन्तु उन्होंने यह बात स्पष्ट रूप से कह दी कि वे यह रिश्ता किसी भी हालत में नहीं होने देंगे।

'उसके बाद एक दिन तेरे फूफा आधी रात के बाद घर लौटे। वे अपने किसी विदेशी मित्र को एयरपोर्ट छोड़ने गये थे। लौटते में एक आदमी ने उनसे लिफ्ट मांगी। शहर के किसी चौराहे पर उतरना चाहता था वह। तेरे फूफा ने उस चौराहे का नाम तो बताया था किन्तु मुझे याद नहीं रहा। जब उसने चौराहा पार हो जाने के बाद भी अपने को उतार देने के बारे में कुछ नहीं कहा तो तेरे फूफा ने कार रोककर उसे उतर जाने के लिए कहा, किन्तु वह आदमी तो बैठे-बैठे मर चुका था।

तेरे फूफा उस आदमी की लाश को घर ले आए और मुझे उस लाश के बारे में बताया। जब मैंने पूछा कि पुलिस को खबर देने की बजाए वे लाश घर क्यों ले आये तो मुझे उन्होंने अपनी जिन्दगी का वह रहस्य बताया जो आज तक मुझसे छुपाये रखा था। मैं हैरानी के साथ सारा किस्सा सुनती रही। पहले तो मैं इस बात पर यकीन ही न कर सकी कि तेरे फूफा किसी आदमी की हत्या भी कर सकते हैं। लेकिन जब उन्होंने अपनी पिछली जिन्दगी की बन्द किताब के बीस साल पुराने उस अध्याय के पन्ने खोलने शुरू किये तो मुझे यकीन करना ही पड़ा।

तब मेरी समझ में आया कि वे उस घटना की सूचना पुलिस में नहीं दे सकते थे। वह व्यक्ति उनकी कार में बैठे-बैठे मर गया था। शायद दिल का दौरा पड़ा था उसे। उसमें उनका कोई दोष नहीं था और न पुलिस उसकी मौत के लिए इन्हें जिम्मेदार ठहरा सकती थी, किन्तु खतरा तो इस बात का था कि पुलिस की जांच-पड़ताल में अगर पिछली बातें उभर-कर सामने आ गईं, जिसकी की कि पूरी सम्भावना थी, तो तेरे फूफा का पकड़ा जाना निश्चित था। बीस साल पुराने उस हत्या के अपराध की उन्हें सजा भी अवश्य मिलती।

जब मैंने उनसे कहा कि अगर ऐसी बात थी तो उन्होंने लाश को घर लाने की बजाए रास्ते में ही कहीं क्यों न फेंक दिया तो उन्होंने राधा द्वारा ब्लैकमेल किए जाने की बात बताई और साथ ही कहा कि उसके चंगुल से बचने के लिए जो भगवान ने यह मौका उन्हें दिया है, उसका पूरा लाभ उठा लेना चाहते हैं वे।

उसके बाद उन्होंने मुझे अपनी सारी योजना बताई और उसके बाद बोले कि यही एक रास्ता है अपने आपको और अपने परिवार के सम्मान को बचाने का। मैं जानती थी कि यह एक गैरकानूनी काम था। किन्तु उस विकट परिस्थिति से निकलने का मुझे कोई और रास्ता नजर भी नहीं आ रहा था। इसलिए उनकी योजना में सहयोग देना मैंने स्वीकार कर लिया, लिहाजा उस अजनबी की लाश को कार में से निकालकर तलघर में ले गए।'

'लेकिन योजना क्या थी फूफी ?' मालती ने पूछा।

'वही तो बता रही हूं।' मिसेज त्रेहन ने कहा—'वह व्यक्ति न केवल उम्र में बल्कि कद-काठी में भी तेरे फूफा जैसा था। उसके कपड़े उतारकर जब उसे तेरे फूफा के कपड़े पहनाए गए तो वे लगभग उसके फिट ही आए। हालांकि उस लाश को कपड़े पहनाने में हमें बहुत दिक्कत आई। हां, तू योजना के बारे में पूछ रही थी न? तो तेरे फूफा की योजना यह थी कि उस आदमी को अपने कपड़े पहनाकर वे कोठी के बाहर के बगीचे में एक कब्र खोदकर उसमें रख देंगे। रखने से पहले उसकी छाती में खुखरी घोंप देंगे, जिससे कि साबित हो कि उसकी हत्या की गई है। लाश को कब्र में डालने के बाद उस पर तेजाब डाल देना था ताकि लाश इस बुरी तरह से विकृत हो जाए कि पहचानी न जाये। उससे पहले उन्होंने मेरे हाथ-पैर बांध दिए, ताकि···नहीं, इस तरह से तो सारी बात खुद मेरी भी समझ में नहीं आ रही। तू मुझे उसी ढंग से बताने दे। सारी योजना तुम लोगों की समझ में अपने आप ही आ जाएगी।'

'ठीक है, तुम अपने ही ढंग से बताओ।'

'अगले दिन तेरे फूफा ने जल्दी-जल्दी सारा काम निपटाया। उन्होंने अपनी पहली वसीयत भी बदल दी और उसमें से जय का नाम हटाकर अपनी समस्त सम्पत्ति मेरे नाम कर दी।'

'वसीयत में से जय का नाम क्यों हटाया?'

'उनका ख्याल था कि यह दोनों मां-बेटी दौलत के लालच में ही जय पर फंदा डाल रही हैं। जब इन्हें यह मालूम होगा कि उनकी दौलत में जय का कोई हिस्सा नहीं रह गया है तो यह उसका पीछा छोड़ देंगी। जय को यहां से दूर करने के लिए उन्होंने उसे उसी दिन काठमांडू रवाना होने के लिए कह दिया, उसके बाद रात आई और वे बाकी का काम निपटाने में जुट गए। सबसे पहले तो तलघर में आकर उस अजनबी की लाश की छाती में छुरा घोंपा और फिर मुझे वह नकाबपोश की कहानी समझाने लगे। यनी वह बयान जो मुझे पुलिस के आने पर देना था।'

'एक मिनट मिसेज त्रेहन?' मैंने टोका।

जब मिसेज त्रेहन ने मेरी ओर प्रश्नपूर्ण दृष्टि से देखा तो मैंने कहा—'उस रात रमला भी तो मिलने के लिए आई थी

शायद ?'

'हां, उस समय वे तलघर से अपना काम निपटाकर आए थे और नीचे के ड्राइंगरूम से अपना नया खरीदा सफारी बैग लेने गए थे, जब वह आई थी। लेकिन उस समय चूंकि वे दूसरी तैयारियों में व्यस्त थे इसलिए उसकी बात पूरी तरह सुने बिना ही उन्होंने उसे वहां से विदा कर दिया। जब तक सुलोचना चाय लेकर पहुंची, तब तक वे उसे दरवाजे से बाहर निकाल चुके थे।'

'लेकिन पुलिस को तो आपने बयान दिया था कि आप रमला नाम की किसी लड़की को नहीं जानतीं ?'

'मैंने यही बयान दिया था। उसके बाद जब वे मुझे नकाबपोशों वाला बयान रटाने के लिए आए तब मैंने उनसे पूछा था कि कौन आई थी ? जिसके जवाब में उन्होंने केवल इतना ही कहा कि थी कोई सिरफिरी। साथ ही उन्होने यह भी कहा था कि इस लड़के जय के साथ काफी सख्ती से निपटना होगा। न जाने कितनी लड़कियों के साथ चक्कर चला रखा है इसने। उसके बाद बात आई-गई हो गई और वे मुझे वह नकाबपोशों वाला बयान याद कराने लगे।'

यहां मिसेज त्रेहन क्षण-भर के लिए रुकी।

'फिर हम दोनों के चेहरों पर नजरें दौड़ाती हुई बोली—'अब तो म लोग अच्छी तरह से समझ गए होंगे कि उनकी योजना यह सब काम करके यहां से कहीं दूर निकल जाने की थी, ताकि लोग उन्हें मृत समझ लें और वे किसी नई जगह पर जहां कोई उन्हें पहचानने वाला न हो, एक नए नाम से नई जिन्दगी शुरू कर सकें। नकाबपोशों वाली कहानी मुझे इसलिए रटाई गई थी, ताकि जब पुलिस आए तो मैं उसे बता सकूं कि कुछ नकाबपोश आए थे और मुझे बांधने के बाद वे लोग उन्हें जबर्दस्ती पकड़कर अपने साथ ले गए।

'लेकिन अगर त्रेहन साहब अपने को मृत घोषित करना चाहते थे तो फिर उस लाश को दफनाने के लिए कब्र खोदने की क्या जरूरत थी ?'

'ताकि पुलिस को लाश तुरन्त न मिल सके।' मिसेज त्रेहन ने बताया—'उनका ख्याल था कि मिट्टी के नीचे दबी तेजाब से भीगी लाश जितनी देर से बरामद होगी, उतनी ही अधिक

वह ऐसी विकृत हो चुकी होगी, कि उसे पहचाना न जा सके।'

'लेकिन अगर पुलिस पोली जमीन पर शक करके लाश को जल्दी बरामद कर लेती तब ?'

'तब भी तेजाब के कारण लाश इतनी तो विकृत हो ही चुकी होती कि उसे आसानी से पहचाना जा न सके, उस हालत में ज. ा मैं खुद दावे के साथ कहती कि वह उन्हीं की लाश है तो भला कौन मेरे बयान पर शक कर सकता था। सुलोचना में इतनी बुद्धि नहीं, एक जय का खतरा था कि कहीं वह किसी खास पहचान की वजह से यह न कह बैठे कि यह उसके डैडी की लाश नहीं। इसलिए उसे पहले ही उन्होंने काठमांडू रवाना होने का आदेश दे दिया था।'

'लेकिन जय काठमांडू नहीं गया ?'

'ऐसा कभी नहीं हुआ कि जय ने उनके किसी आदेश को अवहेलना की हो।' मिसेज ब्रेहन ने एक लम्बी सांस के साथ कहा—'लेकिन इस कांड में बहुत कुछ ऐसा हो गया जिसकी कल्पना तक न की गई थी। जो योजना बनाई थी, उसमें यह तो सोचा भी नहीं गया था कि कोई उन्हें सचमुच ही मार डालेगा।'

'अगर ऐसा न भी होता तो भी आपकी यह योजना काम-याब होने वाली नहीं थी।' मैंने कहा।

'वह क्यों ?'

'क्योंकि लाश मिलने के बाद पोस्टमार्टम होता और उसमें यह बात साबित हो जाती कि मरने वाला दिल के दौरे से मरा है और चाकू उसकी लाश में उतारा गया है। जैसा कि साबित हो भी चुका है।'

'इस बात की तरफ वाकई हम लोगों का ध्यान नहीं गया था।' मिसेज ब्रेहन ने स्वीकार किया—'हम यही समझते रहे थे कि पुलिस को लाश मिल जाएगी तो मेरे यह स्वीकार करने पर कि यह उन्हीं की लाश है। साथ में जब मेरा नकाबपोशों वाला बयान भी होगा तो यही समझा जाएगा कि उन दोनों नकाबपोशों ने उन्हें मार डाला और पुलिस उन नकाबपोशों को तलाश करती रहेगी, जिनका कहीं कोई अस्तित्व नहीं है। तुम्हें याद है, जब पुलिस ने तुम्हारे बारे में मुझसे पूछा था कि कहीं उन दो नकाबपोशों में से तुम्हारी कद-काठी तो किसी से